विषय-सूची

अध्याय एक : बाइबल पर विश्वास करना
अध्याय दो : अनदेखा क्षेत्र : परमेश्वर और अनेक परमेश्वर
अध्याय तीन : पहले के और भविष्य के राजा
अध्याय चार : ईश्वरीय विद्रोह
अध्याय पाँच : अंतरीक्षी भूगोल
अध्याय छः : वचन, नाम और स्वर्गदूत
अध्याय सात : अनुबंध के नियम
अध्याय आठ : पवित्र स्थान
अध्याय नौ : पवित्र युद्ध
अध्याय दस : स्पष्ट दृष्टि से छिपा हुआ
अध्याय ग्यारह : अलौकिक उद्देश्य
अध्याय बारह : बादल सवार
अध्याय तेरह : महान बदलाव
अध्याय चौदह : इस संसार के नहीं
अध्याय पंद्रह : ईश्वरीय स्वभाव के समभागी
अध्याय सोलह : स्वर्गदूतों पर शासन करना
निष्कर्ष
क्षमा की प्रार्थना
लेखक की ओर से विनती

अध्याय एक बाइबल पर विश्वास करना

बाइबल जो कहती है क्या आप सच में उस पर विश्वास करते हैं?

कुछ के लिए, मसीहियों द्वारा पढ़ी जानेवाली यह पुस्तक अजीब प्रश्नवाली हो सकती है। परन्तु मैं नहीं सोचता कि यह इतनी अजीब है। बाइबल में कुछ अद्‌भुत चीज़ें हैं-वे चीज़ें जिन पर विश्वास करना कठिन है, विशेषकर इस आधुनिक संसार में।

मैं किसी बड़ी सामग्री के बारे में नहीं बोल रहा, जैसे यीशु परमेश्वर था जो पृथ्वी पर आया, जो क्रूस पर मरा और मृतकों में से जी उठा। मैं निर्गमन जैसी चमत्कारी कहानियों के बारे में भी नहीं बोल रहा हूँ, जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से लाल समुद्र में मार्ग बनाने के द्वारा छुड़ाया था। अधिकांश मसीहियों का कहना है कि वे इन बातों पर विश्वास करते हैं। अन्ततः, यदि आप परमेश्वर और यीशु पर विश्वास नहीं करते, या इस पर कि वे चमत्कारी कार्य कर सकते हैं, आपके मसीही कहलाने का क्या अर्थ है?

मैं उस अल्प-ज्ञात सामग्री के बारे में बात कर रहा हूँ जिसे आप बाइबल में समय समय पर पढ़ते हैं परन्तु चर्च में इसके बारे में यदा कदा ही सुनते हैं।

एक उदाहरण है। 1 राजा 22 में इस्राएल के दुष्ट राजा, अहाब की कहानी है। उसने रामोत गिलाद नामक स्थान पर शत्रु पर प्रहार करने को यहूदा के राजा की सेना से जुड़ना चाहा। यहूदा के राजा ने भविष्य के बारे में

जानना चाहा-वह यह जानना चाहता था कि उनके प्रहार करने का क्या प्रभाव पड़नेवाला था। इसलिए दोनों राजाओं ने अहाब के भविष्यद्वक्ताओं से इस बारे में पूछा और उन सभी से उन्हें कुशल की प्रतिक्रिया मिली।

परन्तु ये भविष्यद्वक्ता अहाब को वही बता रहे थे जो वह सुनना चाहता था, और दोनों राजा इससे परिचित थे। इस कारण उन्होंने मीकायाह नामक परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता से पूछने का निर्णय लिया। जो उसने कहा वह अहाब के लिए शुभ समाचार नहीं था :

> इस कारण तू यहोवा का यह वचन सुन! मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उसके पास दाहिने बांयें खड़ी हुई स्वर्ग की समस्त सेना दिखाई दी है। तब यहोवा ने पूछा, 'अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करके खेत आए?' तब किसी ने कुछ, और किसी ने कुछ कहा। अन्त में एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई और कहने लगी, 'मैं उसको बहकाऊंगी' : यहोवा ने पूछा, 'किस उपाय से?' उसने कहा, 'मैं जाकर उसके सब भविष्यद्वक्ताओं में बैठकर उनसे झूठ बुलवाऊंगी।' यहोवा ने कहा, 'तेरा उसको बहकाना सफल होगा, जाकर ऐसा ही कर।' तो अब सुन यहोवा ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्ताओं के मुँह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा बैठाई है, और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है। (1 राजा 22:19-23)

क्या आप जान पाए कि बाइबल आपको किस पर विश्वास करने को कह रही है? कि परमेश्वर यह निर्धारित करने को कि पृथ्वी पर क्या हो, आत्मा के एक समूह से मिलता है? क्या यह वास्तविक है?

एक अन्य उदाहरण, यहूदा की शालीन टिप्पणी का है:

> फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन् अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी इस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में, जो सदा काल के लिये है, बन्धनों में रखा है। (यहूदा 1:6)

परमेश्वर ने बहुत से स्वर्गदूतों को भूमिगत बंदीगृह में भेजा? सच में?

जैसा मैंने कहा, बाइबल में बहुत सी अद्‌भुत चीज़ें हैं, विशेषकर अनदेखे, आत्मिक संसार के बारे में। मैं ऐसे कई मसीहियों से मिला हूँ जिन्हें बाइबल की कम विवादास्पद शिक्षाओं (मसीहियों में) से कोई आपत्ति नहीं है, जैसे यीशु कौन था और उसने क्या किया, परन्तु इस प्रकार के संदर्भ उन्हें आशंकित कर देते हैं, जिस कारण वे उनकी उपेक्षा करते हैं। मैंने इस प्रवृत्ति को निकटता से देखा है। मेरी पत्नी और मैं एक बार चर्च में गए जहाँ पास्टर 1 पतरस पर आधारित श्रृंखला से प्रचार कर रहा था। प्रात: 1 पतरस 3:18-22 से उसने पुलपिट के पीछे से इस प्रथम बात को कहा, ''हम इन पदों को छोड़ आगे देखेंगे। ये बहुत अजीब हैं।'' 'अजीब' से उसका यह अर्थ था कि ये पद आलौकिकता वाले थे जो उसकी शिक्षा से मेल नहीं खाते थे। जैसे :

> इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दु:ख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। उसी में उसने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया, जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी, जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था। (1 पत: 3:18-20)

ये बंदी आत्माएं–कौन और–कहाँ थीं?

पास्टर को इसकी जानकारी भी नहीं थी और न वह इसका जवाब पाना चाहता था, इसलिए उसने इन पदों की उपेक्षा करने का चुनाव किया।

बाइबल विद्वान के रूप में, मैंने यह जाना है कि ये अजीब संदर्भ (और अन्य बहुत से जाने व समझे जानेवाले संदर्भ) वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये परमेश्वर के विशिष्ट विचारों, अनदेखे संसार और हमारे अपने

जीवनों के बारे में सिखाते हैं। मानें या न मानें, इन संदर्भों के कठिन व पेचीदा होने पर भी यदि हम इन्हें जानते व समझते हैं, ये परमेश्वर के बारे में, एक दूसरे के बारे में, हम यहाँ क्यों हैं, इस बारे में और हमारी अनन्त नियति के बारे में विचार करने के ढंग में परिवर्तन लाते हैं।

कुरिन्थियों को लिखे अपने पहले पत्र में पौलुस इससे निराश था कि कैसे उस कलीसिया के विश्वासी झगड़ों का निपटारा करने को एक दूसरे को न्यायालय लेकर जा रहे थे। उसे लगा कि यह समय व भावनात्मक शक्ति को व्यर्थ करना था और साथ ही विश्वास पर नकारात्मक प्रभाव भी डालनेवाला था। उसने कहा, ''क्या तुम नहीं जानते कि संसार का न्याय करोगे। तुम नहीं जानते कि तुम स्वर्गदूतों पर अधिकार करोगे?'' (1 कुरि. 6:3, मेरा भावानुवाद)।

संसार का न्याय? स्वर्गदूतों पर अधिकार?

इस पेचीदा पद में पौलुस आश्चर्यकारी और जीवन बदलनेवाली चीज़ के बारे में बोल रहा है। बाइबल अलौकिक प्राणियों को हमारे जीवनों व नियति के साथ जोड़ती है। किसी दिन हम संसार का न्याय करेंगे। जैसा पौलुस ने कहा, हम स्वर्गदूतों पर अधिकार करेंगे। इससे भी बहुत अधिक।

पौलुस को कुरिन्थियों और हमें इसे बताने का कारण यह है कि बाइबल की कहानी इस बारे में है कि परमेश्वर ने कैसे हमें बनाया और यह इच्छा रखता है कि हम उसके स्वर्गीय परिवार का हिस्सा बनें। बाइबल में पारिवारिक संबन्धों से संबद्धित शब्दों का प्रयोग दुर्घटनावश नहीं है-जैसे दूसरों के साथ घर में रहना और मिलकर काम करना-कि सामूहिक रूप से परमेश्वर, यीशु, अनदेखे संसार के प्राणियों, और विश्वासियों, आपके और मेरे बारे में बताएं। परमेश्वर मानवता को अपने परिवार और सृष्टि पर अपने अधिकार का एक हिस्सा बनाना चाहता है।

हम सभी इससे परिचित हैं-जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर। प्रभु की प्रार्थना में इस तरह के विचार व वाक्यांश मिलते हैं (मत्ती 6:10)। आरम्भ से ही परमेश्वर ने यह चाहा कि उसका मानव परिवार उसके साथ एक सिद्ध संसार में रहे–उस परिवार के साथ भी जो पहले से ही अनदेखे संसार में था, उसकी स्वर्गीय सेना। यही कहानी-परमेश्वर का उद्देश्य, अंधकार की शक्तियों द्वारा इसका विरोध, इसकी असफलता, और इसकी अन्तिम भावी सफलता–इसी सब के बारे में यह पुस्तक है, बाइबल ठीक इसी बारे में है। और जब तक हम सभी कलाकारों को सम्मिलित नहीं कर लेते हम बाइबल की कहानी के नाटक की सराहना नहीं कर सकते-जिसमें वे अलौकिक चरित्र भी आते हैं जो वीरकथा का हिस्सा हैं परन्तु जिनकी उपेक्षा बहुत से बाइबल विद्वानों द्वारा की जाती है।

परमेश्वर की स्वर्गीय सेना के सदस्य सतही या महत्वहीन या बाइबल में हमारी कहानी, मानव कहानी से असंबद्धित नहीं हैं। वे मुख्य भूमिका को पूरा करते हैं। परन्तु आधुनिक बाइबल पाठक प्रायः सही भूतकाल को उसे समझे बिना पढ़ते हैं, बाइबल की अधिकांश चिर-परिचित शृंखलाओं में अलौकिक संसार को आकर्षक रूप से दिखाया गया है। अब जो मुझे बाइबल में दिखता है उसे देखने में मुझे कई दशक लगे-और मैं आप के साथ उन वर्षों के अध्ययन के फल को बांटना चाहता हूँ।

परन्तु हम उस प्रश्न से न चूकें जिसे मैंने आरम्भ में पूछा था। जो कुछ बाइबल कहती है क्या आप वास्तव में उस पर विश्वास करते हैं? सच्चाई यही है। बाइबल अनदेखे संसार के बारे में जो बताती है और कैसे यह आपके जीवन के आर-पार जाती है, यदि, आप इस पर विश्वास नहीं करते तो इससे आपका कोई भला नहीं होने वाला।

2 राजा 6:8-23 में भविष्यद्वक्ता एलीशा (पुनः) संकट में है। एक क्रोधी राजा उसके घर को घेरने के लिए अपने सैनिक दल को भेजता है। उसके सेवक के परेशान होने पर, एलीशा उससे कहता है, ''मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।'' सेवक के कुछ कहने से पूर्व, एलीशा प्रार्थना करता है, ''हे यहोवा, इसकी आँखें खोल दे कि यह देख सके।'' परमेश्वर उसी क्षण जवाब देता है, ''तब यहोवा ने सेवक की आँखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है।''

एलीशा की प्रार्थना आपके लिए मेरी प्रार्थना भी है। परमेश्वर आपकी आँखों को देखने के लिए खोले, जिससे आप बाइबल को पुनः उसी तरह से विचारने के योग्य न हो पाएं।

अध्याय दो
अनदेखा क्षेत्र : परमेश्वर और अनेक परमेश्वर

लोग अलौकिकता और अलौकिक-मानव की ओर आकर्षित होते हैं। हाल ही के वर्षों के मनोरंजन उद्योग पर विचार करें। बीते दशकों में हज़ारों पुस्तकें, टेलीविज़न शो, और फिल्में स्वर्गदूतों, अलौकिक जीवों, दैत्यों, भूतों, चुड़ैलों, जादू, पिशाचों, भेड़िया मानवों के बारे में रही हैं। हॉलीवुड की प्रसिद्ध फिल्मों में अलौकिकता को दिखाया जाता है: एक्समैन, एवेन्जर्स, हैरी पोटर श्रृंखला, सुपरमैन, और ट्वाइलाइट सागा। फ्रिन्ज और सुपरनेचुरल तथा एक्स फाईल्स जैसे टी.वी. कार्यक्रम के समाप्त होने के लंबे समय के बाद भी इन्हें पसंद किया जाता है। और वास्तव में क्या ये चीज़ें हमेशा से लोकप्रिय नहीं रही हैं—कहानियों, पुस्तकों और कला में?

क्यों?

एक जवाब यह है कि ये साधारण से दूर भागना है। ये हमारे सामने एक ऐसे संसार को रखते हैं जो हमारे संसार से अधिक रोचक व उत्तेजित करनेवाला है। इसमें भलाई और बुराई के बारे में कुछ है जिसे अंतरीक्षी स्तर पर दिखाया गया है, जो हमें रोमांचित करता है। द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स में मध्य पृथ्वी के नायकों (गेंडाल्फ, फ्रोडो और कंपनी) के डार्क लॉर्ड सॉरन के विरुद्ध संघर्ष ने आधी शताब्दी तक (और अभी) फिल्म देखने वालों को बांधे रखा है। दूसरे संसार के खलनायक को अधिक देखना, दर्शकों की संख्या को बढ़ाता है।

अन्य स्तर पर, लोग दूसरे संसारों की ओर खिंचते हैं जैसा सभोपदेशक की पुस्तक इसे बताती है, परमेश्वर ने ''मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है'' (सभो. 3:11)। मनुष्य में कुछ ऐसा पाया जाता है जो मानव अनुभव से अलग-ईश्वरीय को पाने की चाह करता है। प्रेरित पौलुस ने भी अपनी इस ललक के बारे में लिखा। उसने सिखाया कि यह परमेश्वर द्वारा बनाए संसार के समय से जाना जाता हैं। सृष्टि अपने रचनेवाले की गवाही देती है, और एक ऐसे क्षेत्र की जो हम से दूर है (रोमि. 1:18-23)। वास्तव में पौलुस ने कहा कि यह आवेग इतना शक्तिशाली था कि इसे स्वेच्छा से दबाना था (पद 18)।

और तौभी हम पुस्तकों, फिल्मों और पौराणिक कथाओं में अपनी अलौकिक कहानियों पर जिस तरह से विचार करते हैं वैसे हम बाइबल की कथा पर विचार नहीं करते। इसके भी कई कारण हैं जिसमें मुख्य कारण विशेष प्रभाव की कमी है। कुछ के लिए, बाइबल चरित्र अत्यंत साधारण हैं। वे नाटकीय नहीं लगते। ये वही लोग और वही कहानियाँ हैं जिन्हें हम सण्डे स्कूल में लंबे समय से सुनते आ रहे हैं। साथ ही सांस्कृतिक बाधाएं भी हैं। हमारे लिए प्राचीन चरवाहों और पुरुषों के समान वस्त्र धारण करनेवाले व्यक्ति के रूप में पहचान बनाना कठिन लगता है, जैसा यीशु के जन्म के समय में आपके चर्च में बहुत से कलाकार पहने दिखते हैं।

परन्तु मेरा मानना है कि विज्ञान-काल्पनिक कथाएं और अलौकिकता की कथाएं हमारी कल्पना को आसानी से इस कारण बांध लेती हैं क्योंकि हमें बाइबल के अनदेखे संसार पर इसी तरह से विचार करने के बारे में सिखाया गया है। वर्षों से मैंने चर्च में जो सुना है यह कुछ और नहीं अलौकिक नीरसता को लाता है। और इससे भी बुरा, चर्च की शिक्षा अनदेखे, अलौकिक संसार को कमज़ोर व शक्तिहीन बताती है।

अधिकांश मसीही अनदेखे संसार के बारे में जिस सच्चाई की कल्पना करते हैं, वैसा नहीं है। स्वर्गदूतों के पंख नहीं होते। (करूब इस गणना में नहीं आते क्योंकि उन्हें कभी स्वर्गदूत नहीं कहा जाता। स्वर्गदूत सदैव मानव रूप में होते हैं।) दुष्टात्माओं के पूंछ और सींग नहीं होते, और वे हमसे यहां पाप कराने के लिए नहीं हैं (हम ऐसा स्वयं करते हैं।) और जबकि बाइबल विस्मयकारी ढंग से दुष्टत्माओं से ग्रस्त किये जाने के बारे बताती है, बौद्धिक दुष्टता में लोगों को कठपुतली बनाए जाने के अलावा बहुत सी भयानक चीज़ें करने को हैं। और इस सबसे ऊपर, स्वर्गदूत और दुष्टात्माएं छोटे खिलाड़ी हैं। चर्च उन्हें और उनके कामों को कभी बड़ा रूप देना नहीं चाहेगा।

परमेश्वर वास्तविक हैं

प्रथम अध्याय में मैंने आपसे पूछा था कि क्या आप वास्तव में बाइबल की कही हर बात पर विश्वास करते हैं। इस पर एक पॉप पहेली के रूप में विचार करें।

बाइबल बताती है कि परमेश्वर की ईश्वरीय प्राणियों की एक सेना है जो उसके निर्णयों को पूरा करते हैं। इसे परमेश्वर की सभा गोष्ठी या अदालत कहा जाता है (भजन 89:57; दानि. 7:10)। इस बारे में सबसे स्पष्ट पद भजन संहिता 82:1 है। गुड न्यूज़ अनुवाद इसे भली प्रकार से बताता है : ''परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है; वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है।''

यदि आप इस पर विचार करें तो यह चौंका देनेवाला पद है। पहली बार इसे देखने पर मैं घबरा गया था। परन्तु पद का अर्थ सीधा व सरल है। किसी अन्य पद के समान भजन 82:1 को उसी संदर्भ से समझना है जैसा अन्य में बाइबल कहती है-इस विषय में यह ईश्वरों के बारे में क्या कहती है और इस शब्द की परिभाषा किस प्रकार की जानी चाहिए।

मूल इब्री ''ईश्वर'' का अनुवादित शब्द इलोहीम है। हममें से अधिकांश इलोहीम को एक ही भाव में जानते हैं-परमेश्वर पिता का एक नाम-कि हमारे लिए इसके विस्तृत अर्थ पर विचार करना कठिन हो सकता है। परन्तु यह शब्द अनदेखे संसार के किसी भी वासी को बताता है। इसी कारण आप इसका प्रयोग स्वयं परमेश्वर (उत्प. 1:1), दुष्टात्माओं (व्यवस्था. 32:17) और मनुष्यों के मृत्यु पश्चात् जीवन (1 शमू. 28:13) में पाएंगे। बाइबल में, कोई भी देहरहित प्राणी जिसका वास आत्मा जगत है वह इलोहीम है।

इब्री शब्द उन विशिष्ट योग्यताओं का उल्लेख नहीं करता जो केवल परमेश्वर में है। बाइबल परमेश्वर को अन्य ईश्वरों से अन्य ढंग से अलग करती है न कि इलोहीम शब्द का प्रयोग करने के द्वारा। उदाहरण के लिए, बाइबल ईश्वरों को बाइबल के परमेश्वर की आराधना करने की आज्ञा देती है (भजन. 29:1)। वह उनका सृष्टिकर्त्ता और राजा है (भजन. 95:3; 148: 1-5)। भजन संहिता 89:6-7 बताता है, ''क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन ठहरेगा? बलवन्तों के पुत्रों में से कौन है जिसके साथ यहोवा की उपमा दी जाएगी?'' (1 राजा 8:23; भजन. 97:9)। परमेश्वर पवित्र लोगों की गोष्ठी में अत्यंत प्रतिष्ठा के योग्य है। बाइबल के लेखक इस्राएल के परमेश्वर के किसी के समान न होने के बारे में चुप हैं-वह ''ईश्वरों का परमेश्वर'' है (व्यवस्था. 10:17, भजन. 136:2)।

''पवित्रों की सभा' में ये प्राणी वास्तविक हैं। इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में, मैंने एक संदर्भ का उल्लेख किया था जिसमें परमेश्वर यह निर्धारित करने को अपनी स्वर्गीय सेना से मिला कि राजा अहाब का कैसे अन्त करे। उस संदर्भ में, इस स्वर्गीय समूह के सदस्यों को आत्मा कहा जाता था। यदि हम विश्वास करते हैं कि आत्मा जगत वास्तविक है और इसमें परमेश्वर तथा उसके द्वारा बनाए गए आत्मिक प्राणी (जैसे स्वर्गदूत) रहते हैं, तब हमें यह स्वीकार करना है कि परमेश्वर की अलौकिक कार्य सेना, जिसके बारे में मैंने उपरोक्त पदों और अन्य कईयों में बताया, वास्तविक हैं। अन्यथा, हम आत्मिक वास्तविकता में केवल होंठों की सेवा करते हैं।

और चूंकि बाइबल इन ईश्वरीय सभा के सदस्यों को आत्मा मानती है, हम जानते हैं कि ईश्वर केवल पत्थर या लकड़ी के नहीं हैं। मूर्तियाँ स्वर्गीय सभा में परमेश्वर के लिए कार्य नहीं करतीं। यह सत्य है कि प्राचीन संसार के लोग जिन्होंने विरोधी ईश्वरों की आराधना की उन्होंने मूर्तियाँ बनाईं। परन्तु वे जानते थे कि जिन मूर्तियों को उन्होंने अपने हाथों से बनाया था उनमें सच्ची सामर्थ नहीं थी। हाथ से बनी ये मूर्तियाँ केवल अपने ईश्वरों के लिए बलिदान ग्रहण कर पाईं और अपने अनुयायियों तक ज्ञान को वितरित कर पाईं, जिन्होंने अपने ईश्वरों से उन तक आने और मूर्ति में वास करने की विनती की थी।

सभा संरचना और व्यवसाय

भजन संहिता 82:1 के ईश्वरों को बाद में भजन में ''परमप्रधान के पुत्र'' कहा गया है (पद 6)। ''परमेश्वर के पुत्र'' बाइबल में कई बार प्रगट हाते हैं, सामान्यता परमेश्वर की उपस्थिति में (जैसे अय्यूब 1:6; 2:1 में)। अय्यूब 38:7 हमें बताता है, वे परमेश्वर के पृथ्वी को सजाने और मानवता को बनाए जाने से पहले से ही साथ में थे।

और यह बहुत रोचक है। परमेश्वर इन आत्मिक प्राणियों को अपने पुत्र कहता है। चूंकि परमेश्वर ने उन्हें बनाया, 'परिवार' भाषा का अर्थ दिखता है, इसी प्रकार आप अपनी संतान को अपना पुत्र या पुत्री कहते हैं क्योंकि उनके बनाए जाने में आपका योगदान था। परन्तु उनका पिता होने के साथ-साथ, परमेश्वर उनका राजा भी है। प्राचीन संसार में, राजाओं ने प्राय: अपने विस्तृत परिवारों के द्वारा शासन किया। राजपद वारिसों तक जाता था। प्रभुत्व पारिवारिक व्यवसाय था। परमेश्वर अपनी सभा का प्रभु है। और उसके पुत्र उसके साथ अपने संबन्ध के कारण गुणों के द्वारा अगले उच्च स्थान पर आते हैं। परन्तु जैसा हम इस पूरी पुस्तक में विचार करेंगे, कुछ हुआ-उनमें से कुछ विश्वासघाती हो गए।

परमेश्वर के पुत्र निर्णय लेनेवाले भी हैं। 1 राजा 22 (और कई अन्य संदर्भों) से हम जान पाते हैं कि परमेश्वर के व्यवसाय में मानव इतिहास से व्यवहार करना सम्मिलित था। जब परमेश्वर ने निर्णय लिया कि अब दुष्ट अहाब के मरने का समय है, वह इस विषय को अपनी सभा में लेकर गया कि वह निर्धारित करें ऐसा कैसे होगा।

भजन संहिता 82 और 1 राजा 22 में ईश्वरीय सभाएं केवल वही नहीं हैं जिनका बाइबल में हमसे संबन्ध है। इनमें से बहुतों ने साम्राज्यों की नियति को निर्धारित किया था।

दानिय्येल 4 में नबूकदनेस्सर, बेबीलोन का राजा, परमेश्वर द्वारा अस्थायी पागलपन के रूप में दण्डित किया गया था। यह सज़ा ''परमप्रधान की आज्ञा'', (दानि. 4:24) और ''पहरूओं की आज्ञा'' (दानि. 4:17) से निकली थी। पहरुआ शब्द परमेश्वर की सभा के ईश्वरीय प्राणियों के लिए प्रयुक्त किया जाता था।

यह बताता है कि कैसे वे मानवीय कार्यों की पहरेदारी करते थे; वे कभी सोते नहीं थे।

ईश्वरीय सभा सत्र के ये बाइबल संबन्धी भाव हमें बताते हैं कि परमेश्वर की सभा के सदस्य परमेश्वर के शासन में योगदान देते हैं। कम से कम कुछ मामलों में, परमेश्वर जिस कार्य को करना चाहता है उसकी आज्ञा देता है परन्तु अपने अलौकिक कार्यकर्ताओं को साधन निर्धारित करने की स्वतंत्रता देता है।

स्वर्गदूत भी परमेश्वर की सभा में योगदान देते हैं। बाइबल की मूल भाषा में पुराने और नये नियम में अनुवादित स्वर्गदूत शब्द का वास्तविक अर्थ संदेशवाहक है। स्वर्गदूत शब्द मूल रूप से एक कार्य विवरण है। स्वर्गदूत लोगों तक संदेश पहुंचाते हैं। हम स्वर्गदूतों और उनके कर्तव्यों के बारे में अधिक जानेंगे-साथ ही इस पुस्तक में बाद में-परमेश्वर की सभा के अन्य सदस्यों के कर्तव्यों के बारे में भी जानेंगे।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

अब तक आपने इस पुस्तक में जो पढ़ा है उसके प्रति आपकी प्रतिक्रिया संभवत: कुछ इस तरह की हो, ''विस्मयकारी सामग्री—मैंने बाइबल में ऐसा पहले कभी नहीं देखा। परन्तु इस सारी जानकारी का मेरे दैनिक जीवन और मेरे चर्च के कार्यकारी ढंग से क्या अर्थ निकलता है'' और जवाब है, इस पुस्तक के प्रत्येक सत्य का हमारी इस समझ के लिए अर्थ है कि परमेश्वर कौन है, और हम कैसे उससे संबद्धित होते हैं और पृथ्वी पर हमारा क्या उद्देश्य है। इसके स्पष्टीकरण में सहायता के लिए, मैं प्रत्येक अध्याय का अन्त इस तरह के विभाग से करूंगा जो उस अध्याय के व्यावहारिक अर्थ को व्यक्त करेगा।

इस अध्याय में, हमने विचार-विमर्श किया कि बाइबल परमेश्वर के अंतरीक्षी प्रबन्धन के बारे में कैसे बताती है और इन विवरणों से हमें परमेश्वर और इस बारे में क्या जानकारी मिलती है कि परमेश्वर का हमसे कैसे संबन्ध है।

सर्वप्रथम, परमेश्वर के स्वर्गीय परिवार का कार्य (व्यवसाय) इसका एक नमूना है कि वह अपने पार्थिव परिवार से कैसे संबद्धित है। हम अगले अध्याय में इस पर विचार-विमर्श करेंगे, परन्तु यह एक उदाहरण है: आप आश्चर्य कर सकते हैं कि परमेश्वर को सभा या गोष्ठी की आवश्यकता क्यों होगी। कुछ भी करने के लिए परमेश्वर को किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, आत्मिक संसार में भी। वह परमेश्वर है! परन्तु बाइबल इस बारे में स्पष्ट है कि वह काम को करने के लिए निम्न प्राणियों का भी प्रयोग करता है।

उसे ईश्वरीय सभा की आवश्यकता नहीं परन्तु वह कुछ करने के लिए इसका चयन करता है। और उसे हमारी भी आवश्यकता नहीं है। यदि परमेश्वर चाहे, तो वह उन सभी लोगों से ऊँची आवाज़ में बोल सकता है जिन्हें सुसमाचार की ज़रूरत है, प्रत्येक को अपनी ओर फिराने को आवश्यक प्रोत्साहन दे सकता है, और इसे अच्छा कह सकता है। वह लोगों के हृदयों में अपनी आवाज़ के द्वारा एक दूसरे से प्रेम करने का बढ़ावा दे सकता है। परन्तु वह ऐसा नहीं करता। इसके विपरीत आपको और मुझे करने को काम दिया जाता है।

दूसरा, परमेश्वर चाहे तो अपनी इच्छानुसार प्रत्येक काम के किये जाने का पूर्व निर्धारण कर सकता है। परन्तु वह नहीं करता। राजा अहाब की कहानी में, परमेश्वर अपने स्वर्गीय सहायकों को निर्धारित करने देता है कि कैसे उसकी इच्छा पर कार्य करें। अन्य शब्दों में, वह उन्हें उनकी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग करने देता है। यह हमें बताता है कि सभी बातें पूर्व निर्धारित नहीं हैं। और यह केवल अनदेखे संसार में ही सत्य नहीं है- यह हमारे संसार में भी सत्य है।

बाइबल में, अनदेखे संसार की एक बनावट है। परमेश्वर सी.ई.ओ. है। उसके लिए काम करनेवाले उसका परिवार हैं। वे प्रभुत्व में सहभागी हैं। वे कंपनी को चलाने में योगदान देते हैं।

आश्चर्यजनक रूप में, बाइबल मानवता के बारे में इसी प्रकार से बताती है। अदन में आरम्भ से ही परमेश्वर ने मानवता को पृथ्वी पर उसके साथ शासन करने को बनाया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा,

''फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो'' (उत्प. 1:28)। आदम और हव्वा परमेश्वर की सन्तान थे-परमेश्वर का पार्थिव परिवार। परमेश्वर उनके साथ रहना चाहता था और वह चाहता था कि वे पूरे संसार को अदन के समान बनाने में अपना योगदान दें।

अधिकांश पाठकों की यह परिचित अवधारणा है। परन्तु क्या यह स्पष्ट नहीं है कि अदन में आदम और हव्वा ही परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के रूप में नहीं थे। उसका ईश्वरीय परिवार भी वहाँ था। परमेश्वर जहाँ रहता था-और जहाँ परमेश्वर रहता है-वही अदन था, वैसे ही उसका परिवार है। हम स्वर्ग को एक ऐसे स्थान के रूप में देखते हैं जहाँ हम परमेश्वर और उसके स्वर्गदूतों—उसके ईश्वरीय परिवार—के साथ रहेंगे। मूल रूप से ऐसे ही होने की आशा की गई थी, और यह इसी तरह से होगा। यह कोई संयोग नहीं है कि बाइबल का अन्त पृथ्वी पर एक नये स्वर्ग, विश्वव्यापी अदन के लौटने पर होता है (प्रका. 21.22)।

अपनी नियति को समझने के लिए हमें उस समय में लौटने की आवश्यकता है जब परमेश्वर के दो परिवारों ने एक ही स्थान पर अधिकार कर लिया था। हमें वाटिका में लौटने की आवश्यकता है।

अध्याय तीन
पहले के और भविष्य के राजा

परमेश्वर की स्वर्गीय सभा-उसके अनदेखे परिवार और कार्य सेना का हमने संक्षिप्त परिचय देखा। इससे भी बहुत अधिक है-जिसे हमें देखने की आवश्यकता है, विशेषकर, कैसे मुख्य खिलाड़ी यीशु और शैतान चित्र में सही बैठते हैं। परन्तु इससे पूर्व कि हम इस पर लौटें कि अनदेखे संसार में क्या होता है, हमें स्वयं के बारे में नये ढंग से सोचने की आवश्यकता है। परमेश्वर का अपनी सभा के द्वारा अनदेखे संसार पर राज करना-पृथ्वी पर उसके राज का एक नमूना है-जिसे धर्मविद्वान परमेश्वर का राज्य कहते हैं। इस सब का आरम्भ उत्पत्ति में, अदन की वाटिका में हुआ।

अदन-परमेश्वर का गृह कार्यालय

''अदन की वाटिका'' सुनने पर आपको पहला क्या विचार आता है? अधिकांश लोगों ने आदम और हव्वा पर विचार करने के बारे में बताया। अदन उनका घर था। यहीं परमेश्वर ने उन्हें रखा था। (उत्प. 2:15-25)।

परन्तु अदन परमेश्वर का घर भी था। यहेजकेल अदन को 'परमेश्वर की वाटिका'' कहता है (यहेज. 28:13; 31:8-9)। इसमें वास्तव में कोई आश्चर्य नहीं। आश्चर्य की बात यह है कि अदन को ''परमेश्वर की बारी (वाटिका)'' कहने के पश्चात् ही यहेजकेल इसे ''परमेश्वर का पवित्र पर्वत'' कहता है (पद 28:14)। अधिकांश प्राचीन धर्मों में, भव्य बागों और अगम्य पर्वतों को ईश्वरों का घर कहा जाता था। बाइबल अदन के लिए दोनों ही विवरणों का उपयोग करती है। अदन परमेश्वर का घर था, इसलिए, वहाँ उसने कार्य (व्यवसाय) किया। यह उसका मुख्यालय या गृह कार्यालय था।

और जहाँ परमेश्वर है, उसकी सभा उसके साथ है।

परमेश्वर के स्वरूपवाले

बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण पदों में से एक हमें इसकी अग्रिम सूचना देता है कि परमेश्वर और उसकी सभा दोनों ही अदन में थे। उत्पत्ति 1:26 में परमेश्वर कहता है, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप अपनी समानता में बनाएं (बल दिया गया है)। परमेश्वर एक समूह को अपने अभिप्राय के बारे में बताता है। वह किससे बात कर रहा है? अपनी स्वर्गीय सेना-अपनी सभा से। वह त्रिएकता के अन्य सदस्यों से नहीं बोल रहा है, क्योंकि

परमेश्वर ऐसा कुछ नहीं जान सकता जिसे वे न जानते हो। और यहां वह जिस समूह से बोल रहा है वह यह जान पाता है कि परमेश्वर ने क्या करने का निर्णय लिया है।

घोषणा को समझना सरल है। यह मेरा कुछ मित्रों से ऐसा कहने के समान होगा, ''चलो पिज़्ज़ा लें।'' ''चलो ऐसा करें!'' ऐसा ही है। परन्तु कुछ ऐसा है जिससे हम चूकना नहीं चाहते। परमेश्वर वास्तव में अपने निर्णय को पूरा करने के लिए समूह को शामिल नहीं करता।

हमने जिन ईश्वरीय सभा सत्रों को देखा उनके विपरीत परमेश्वर की सभा के सदस्य इस निर्णय में योगदान नहीं देते। अगले पद में जब मानवजाति को बनाया जाता है (उत्प. 1:27) एकमात्र परमेश्वर ही रचनेवाला है। मानवता की रचना कुछ ऐसी है जिसे परमेश्वर ने स्वयं किया। अपने पिज़्ज़ा स्पष्टीकरण की ओर लौटता हूँ, यदि मैं सभी को घोषणा करके पिज़्ज़ा स्थान की ओर लेकर जाता और भुगतान करने के लिए बाध्य करता हूँ, तो सब काम करनेवाला मैं ही हूंगा। यहाँ हम यही होते देखते हैं।

यह सही लगता है कि मनुष्यों को बनानेवाला परमेश्वर ही है। उसकी सभा के ईश्वरीय प्राणियों में ऐसी सामर्थ नहीं। परन्तु यह अन्य विचित्रता को उत्पन्न करता है। उत्पत्ति 1:27 में, मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए (''परमेश्वर ने मानवजाति को अपने स्वरूप में बनाया'' बल दिया गया है)। पद 26 से ''हमारे स्वरूप'' का क्या हुआ?

वास्तव में, कुछ नहीं। उत्पत्ति 1:26-27 में ''हमारे स्वरूप'' और ''उसके स्वरूप'' के बीच की अदला-बदली कुछ विस्मयकारी प्रगट करती है। परमेश्वर के कथन-''आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं''-का अर्थ है कि वह और जिनसे वह बोल रहा है उनमें कुछ सामान्य है। वह चाहे कुछ भी है, मनुष्य भी परमेश्वर द्वारा बनाए जाने के बाद उसके सहभागी होंगे। हम किसी न किसी तरह से न केवल परमेश्वर के समान हैं, परन्तु हम उसकी सभा के ईश्वीय प्राणियों के समान भी हैं।

''किसी न किसी'' ''परमेश्वर के स्वरूप'' वाक्यांश से आता है। उत्पत्ति 1:26 का श्रेष्ठ अनुवाद यह होगा कि परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने स्वरूप में बनाया। मनुष्य होना परमेश्वर के स्वरूप वाला होना है। हम परमेश्वर के प्रतिनिधि हैं, यदि कहा जाए तो।

परमेश्वर का स्वरूप हमें परमेश्वर द्वारा दी कोई योग्यता नहीं है, जैसे बुद्धिमानी। हम योग्यताओं को खो सकते हैं, परन्तु हम परमेश्वर के स्वरूप में होने के स्तर को नहीं खो सकते। ऐसा होने के लिए मनुष्य न होना ज़रूरी होगा! प्रत्येक मनुष्य, मृत्यु की अवधारणा तक सदैव मनुष्य रहेंगे और सदैव परमेश्वर के स्वरूप में होंगे। इसी कारण मानव जीवन पवित्र है।

हम परमेश्वर को कैसे प्रस्तुत करते हैं? पिछले अध्याय में हमने देखा कि परमेश्वर अपने अधिकार को अपनी अनेदखी कार्य-सेना के साथ बांटता है। पृथ्वी पर मनुष्यों के साथ वह ऐसा ही करता है। परमेश्वर सभी दृश्य व अदृश्य वस्तुओं का उच्च राजा है। वह राज करता है। वह आत्मिक संसार और मानव संसार के अपने परिवार के साथ उस राज (शासन) को बांटता है। हम परमेश्वर की संसार को वैसा बनाने की योजना में जैसा वह इसे बनाना चाहता है, सहभागी हैं कि उसके साथ इसका आनन्द लें।

अन्ततः परमेश्वर ने हमें दिखाया कि हमें ऐसा कैसे करना है। परमेश्वर को प्रस्तुत करने में यीशु अन्तिम उदाहरण है। उसे अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप (कुलु. 1:15) और परमेश्वर के तत्व की छाप (इब्रा. 1:3) कहा जाता है। इसी कारण हमें यीशु की नकल करनी है (रोमि. 8:29; 2 कुरि. 3:18)।

दो सभा, एक नियति

इस सबका एक अभिप्राय है और मेरी आशा है कि आप इसे समझ रहे हैं। मनुष्य मूल रूप से पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रबन्धक–उसकी सभा हैं। हमें परमेश्वर की उपस्थिति में, उसके स्वर्गीय परिवार के साथ रहने को बनाया गया था। हमें उसके साथ आनन्द करने और सर्वदा उसकी सेवा करने को बनाया गया था। मूल रूप में पृथ्वी पर ऐसा होने की आशा की गई थी। अदन वहाँ था जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी एक दूसरे को काटते थे। परमेश्वर और उसके सभा सदस्यों ने एक परिवार में उसी स्थान पर अधिकार किया। परन्तु कब तक?

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा, ''फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो...और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो'' (उत्प. 1:28)। यह परमेश्वर के स्वरूपवालों के लिए कार्य था। उन्हें सृष्टि पर सेवक राजाओं के रूप में सेवा करनी थी। मानवता का कार्य पृथ्वी पर फैलना और पूरे ग्रह पर अदन को बढ़ाना था-कि परमेश्वर का राज्य बढ़े। यह काम दो लोगों के लिए बहुत बड़ा था, इसलिए परमेश्वर चाहता था कि आदम और हव्वा संतान उत्पन्न करें।

जैसा हम जानते हैं, आदम और हव्वा और उनकी सन्तान असफल रहे। मानवता ने पाप किया। यदि ऐसा नहीं हुआ होता, तो पृथ्वी धीरे-धीरे विश्वव्यापी अदन के रूप में बदल गई होती। हमारा एक सिद्ध ग्रह पर परमेश्वर और उसके आत्मिक परिवार के साथ रहते हुए एक अनन्त जीवन होता।

परमेश्वर ने मानवता से प्रेम किया, इस कारण उसने आदम और हव्वा को क्षमा किया परन्तु यहीं से शेष मानवता आदम और हव्वा के पद्चिन्हों पर चलने को निर्दिष्ट हो गई। हम सभी पाप करते और परमेश्वर की मध्यस्थता के बिना मृत्यु पाने के योग्य थे (रोमि. 6:23)। हम नाशवान हैं और, इसलिए पापी हैं। हमें उद्धार की आवश्यकता है।

परमेश्वर का हमें उसके परिवार से जोड़ने का विचार, कि उसकी सभा के सदस्य बनें और उसकी उपस्थिति में रहें, बाइबल द्वारा कही जानेवाली कुछ अद्भुत बातों को समझने में सहायता करता है।

यह स्पष्ट करता है कि बाइबल विश्वासियों को ''परमेश्वर के पुत्र'' या ''परमेश्वर की सन्तान'' कहती है (यूहन्ना 1:12;11:52; गला. 3:26; 1 यूहन्ना 3:1-3)। यह स्पष्ट करता है कि हमें क्यों परमेश्वर और उसके राज्य के ''वारिस'' (गला. 4:7; तीतुस 3:7 याकूब 4:5) और ''ईश्वरीय स्वभाव के समभागी'' (2 पत. 1:4; 1 यूहन्ना 3:2 भी देखें) कहा जाता है। यह स्पष्ट करता है कि विश्वासियों को परमेश्वर के परिवार में ''लेपालक'' के रूप में क्यों वर्णन किया गया है (गला. 4:5-6; रोमि. 8:14-16)। यह स्पष्ट करता है कि क्यों यीशु के लौटने के पश्चात् वह विश्वासियों को ''जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को'' देगा (प्रका. 2:7)। यह स्पष्ट करता है कि उसने हमारे साथ जातियों पर राज्य करने की प्रतिज्ञा क्यों की है (प्रका. 2:26-28), अपने सिंहासन पर बैठाने की भी (प्रका. 3:21)। हम इस जीवन से आगे अदन की ओर लौटते हैं। स्वर्ग पृथ्वी पर आएगा।

जीवन पश्चात् हम यही कर रहे होंगे–नये विश्वव्यापी अदन में शासन करते हुए। हम वही कर रहे होंगे जैसी आदम और हव्वा से किये जाने की आशा की गई थी। अनन्त जीवन सारा समय (24/7) वीणा बजाना और गाना नहीं है। यह निष्कलंक सृष्टि का पता लगाने और आनंद लेने के बारे में है, जिसमें स्वयं परमेश्वर, जी उठे यीशु और हमारे सह स्वरूपवाले, मानव व अलौकिक की अकल्पनीय पूर्णता का साथ होगा।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

यह संभवत: इस तरह का न लगे, परन्तु बहुत से जीवन बदलनेवाले विचार इस सबसे आते हैं। सचेत रूप में जीवन बिताना मानों हमारे जीवन परमेश्वर और उसकी आगामी योजनाओं को समर्पित हैं-चाहे हम उस योजना को देख भी न पाएं। हमारे प्रतिदिन के जीवन जीने के ढंग में परिवर्तन लाएगा।

परमेश्वर की मूल योजना संपूर्ण पृथ्वी को अदन के समान बनाने की थी। परमेश्वर चाहता था कि मनुष्य समस्त पृथ्वी पर उसके अच्छे शासन को जैसा वह अदन में था, फैलाने में अपना योगदान दें। उसने आदम और हव्वा से कहा कि संतान उत्पन्न करो और सृष्टि के स्वामी व रखवाले बन जाओ (उत्प. 1:26-28) पतन के पश्चात् इस आज्ञा को नहीं भुलाया गया था। वास्तव में, इसे बाढ़ की विस्मयकारी घटनाओं के पश्चात् दोहराया गया था (उत्प.8:17; 9:1)। अदन के मिट जाने पर भी परमेश्वर ने इसे पुनर्गठित करना चाहा। अन्त में, उसका शासन-उसका राज्य-यीशु के लौटने पर अपने पूर्ण विस्तार में आएगा और परमेश्वर एक नये आकाश और नई पृथ्वी की रचना करेगा (जो प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में, अदन के समान दिखती है)। तब तक, हम परमेश्वर के सत्य और यीशु के सुसमाचार को हर कहीं फैला सकते हैं। हम अपने प्रत्येक मिलनेवाले पर और प्रत्येक स्थान में परमेश्वर को प्रस्तुत कर सकते हैं। हम यहाँ और अभी अदन को पुनर्गठित करने को परमेश्वर के कार्यकर्ता हैं, उस दिन की ओर आगे देखते हुए जब यीशु उस योजना को पराकाष्ठा तक पहुंचाएगा

स्वयं को परमेश्वर के कार्यकर्ता-उसके स्वरूप वाले के रूप में देखने का अर्थ है कि हमारे द्वारा लिए जानेवाले निर्णय महत्व रखते हैं। मसीही पाप में अधिक समय तक न रहकर पवित्र आत्मा की सहायता से परमेश्वर की योजना को पूरा कर सकते हैं। हम यहाँ परमेश्वर के साथ जीवन की भलाई को बांटने और लोगों को यह बताने के लिए हैं कि जिन्हें सुसमाचार की ज़रूरत है वे उसका आनन्द कैसे ले सकते हैं। हमारे जीवन कई लोगों के आर-पार जाते हैं। जिनसे उनका सामना हुआ था उसकी स्मृति न केवल उनके जीवनों को प्रभावित करती है परन्तु उनके भी जिनके जीवनों को उन्होंने स्पर्श किया था। हम परमेश्वर के साथ जीवन या परमेश्वर के बिना जीवन की झलक को देखते हैं। इसके बीच का कोई स्थान नहीं है।

यह ज्ञान कि सभी मनुष्य परमेश्वर के स्वरूपवाले हैं हमें यह देखने को भी प्रेरित करनेवाला होना चाहिए कि मानव जीवन कितना पवित्र है। इसमें वे क्षणिक निर्णय भी आते हैं जो जीवन और मृत्यु से संबद्धित हैं। जो कुछ हमने सीखा है उसका प्रभाव इस पर सबसे अधिक होता है कि हम एक दूसरे से कैसे संबन्धित होते हैं। जातिवाद का परमेश्वर के संसार में कोई स्थान नहीं है। परमेश्वर को प्रस्तुत करने में अन्याय का कोई मेल नहीं। घर, कार्यस्थल, या प्रशासन में शक्ति का दुरुपयोग-अनुचित है। हमें यह नहीं देखना कि परमेश्वर ने अदन में अपनी संतान से कैसा व्यवहार किया, सह-स्वरूपवालों के साथ हमारे व्यवहार करने में इसका कोई स्थान नहीं है।

अन्त में, परमेश्वर को प्रस्तुत करने का अर्थ है कि प्रत्येक काम जो उसे आदर देता है एक आत्मिक बुलाहट है। प्रत्येक वैध कार्य हमारे संसार को अदन की ओर बढ़ाने और सह-स्वरूपवालों में आशीष बढ़ाने का भाग हो सकता है, या नहीं। परमेश्वर सेवकाई में लोगों को उनके कार्य विवरण के कारण अधिक पवित्र या विशिष्ट के रूप में नहीं देखता। परमेश्वर की रुचि इसमें होती है कि हम जहाँ हैं वहाँ हम उसे कैसे प्रस्तुत करते हैं। हम या तो अंधकार के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं, उस जीवन को जीने के द्वारा जिसका अनुभव पाने की आशा परमेश्वर सभी के लिए करता है, या फिर हम ऐसा नहीं कर सकते हैं। सुअवसर के लिए विशिष्टता की आवश्यकता नहीं; इसे केवल लेने की आवश्यकता है।

परमेश्वर का अदन में जितना प्रभावशाली अभिप्राय था, उतनी ही गति से दर्शन की मृत्यु हुई। परमेश्वर ही सिद्ध है। असिद्ध प्राणियों के हाथों में स्वतंत्रता-चाहे वे ईश्वरीय हों-विनाशकारी परिणामवाली हो सकती है।

अध्याय चार
ईश्वरीय विद्रोह

पिछले अध्याय का अन्त मैंने इस विचार से किया था कि असिद्ध प्राणियों के हाथों की स्वतंत्र इच्छा, चाहे वे ईश्वरीय हों या मनुष्य, विनाशकारी परिणामवाली हो सकती है। यह एक न्यूनोक्ति है। बाइबल के शुरुआती अध्यायों में कुछ प्रलय, सभी मनुष्यों और अलौकिक प्राणियों से जुड़े थे, इस बात का समर्थन करते हैं।

स्मरण करें कि परमेश्वर ने अपने अधिकार को अलौकिक क्षेत्र के ईश्वरीय प्राणियों और पृथ्वी पर मनुष्यों दोनों के साथ बांटने का निर्णय लिया। यह परमेश्वर के इस कथन की पृष्ठभूमि थी, ''आओ हम मानवजाति को अपने स्वरूप में बनाएं'' (उत्प. 1:26, बल दिया गया है) और वास्तविकता यह है कि तब परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने स्वरूप में बनाया। आत्मिक प्राणी और मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में हैं। हम उसके अधिकार के समभागी हैं और उसे सह-शासन के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

एक ओर, यह अद्‌भुत निर्णय था। स्वतंत्र इच्छा परमेश्वर के समान होने का हिस्सा है। यदि यह हमारे पास नहीं है तो हम उसके समान नहीं हो सकते। स्वतंत्र इच्छा के बिना, प्रेम और आत्म-त्याग जैसी धारणाएं मर जाती हैं। यदि आपको केवल ''प्रेम'' करने को तैयार किया गया है, तो इसमें कोई निर्णय नहीं है। यह वास्तविक नहीं है। लिखे गए शब्द और कार्य असली नहीं हैं। इस पर विचार करना मुझे मूल स्टार वार फिल्म 'द रिटर्न ऑफ द जेडी' की ओर ले जाता है। ओबिदन केनोबी की आत्मा ल्यूक को बताती है कि उसका पिता डार्थ वेडर, ''क्या अब मशीन मनुष्य से अधिक नहीं है।'' और तथापि, अन्त में हम इसे सत्य नहीं पाते। वेडर ल्यूक को अपनी जान की कीमत पर सम्राट से बचाता है। वह कोई योजनाबद्ध मशीन नहीं था। उसका निर्णय उसके हृदय, उसकी मानवता– उसकी अपनी स्वतंत्र इच्छा–से आया था।

परन्तु परमेश्वर के निर्णय का एक दु:खद पक्ष भी है। बुद्धिमान प्राणियों को स्वतंत्रता देने का अर्थ है कि वे गलत चुनाव कर सकते हैं या करेंगे और जानबूझकर विद्रोह करेंगे और ऐसा होना निश्चित है, क्योंकि एकमात्र सिद्ध प्राणी परमेश्वर ही है। केवल वही है जिस पर भरोसा किया जा सकता है। यही कारण है कि अदन में चीज़ें गलत हो पाईं और हुईं।

स्वर्ग में संकट

अदन की व्यवस्था पर विचार करें। आदम और हव्वा अकेले नहीं हैं। परमेश्वर वहाँ अपनी सभा के साथ है। अदन पूरी पृथ्वी पर ''अधिकार'' रखने की ईश्वरीय/मानवीय मुख्यालय है (उत्प. 1:26:28)- कि पूरे ग्रह पर अदन के जीवन को फैलाए। परन्तु सभा का एक सदस्य परमेश्वर की योजनाओं से प्रसन्न नहीं है।

जैसा हमने उत्पत्ति 1 में देखा, उत्पत्ति 3 में इसके संकेत हैं कि अदन अन्य ईश्वरीय प्राणियों का घर है। पद 22 में, आदम और हव्वा के पाप करने के पश्चात् परमेश्वर कहता है: ''मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है।''

उत्पत्ति 1:26 (''अपने स्वरूप'') में हमने जो देखा था यह वाक्यांश उसी का दिशा निर्देश सूचक है।

हम उत्पत्ति 3 के मुख्य चरित्र, सांप, को जानते हैं जो वास्तव में सांप नहीं था। वह वास्तव में जानवर नहीं था। चिड़ियाघर में उसे पिंजरे में रखने का कोई प्रभाव नहीं होता और वह इससे प्रसन्न भी नहीं होता। वह एक ईश्वरीय प्राणी था।

प्रकाशितवाक्य 12:9 उसे इब्लीस, शैतान बताता है।

कुछ मसीही प्रकाशितवाक्य 12:7-12 के आधार पर हम यह मानते हैं कि सृष्टि किये जाने के कुछ समय पश्चात् ही वहाँ स्वर्गदूतों का विद्रोह हुआ :

> फिर स्वर्ग में लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले; और अजगर और उसके दूत उससे लड़े, परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही। तब वह बड़ा

अजगर, अर्थात् वही पुराना सांप जो इब्लीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमानेवाला है पृथ्वी पर गिरा दिया गया और उसके दूत उसके साथ गिरा दिये गए। (प्रका. 12:7-9)

परन्तु यहाँ वर्णित युद्ध मसीह के जन्म से जुड़ा है (प्रका. 12:4-5,10)

वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ कि जब वह बच्चा जन्मे तो उस बच्चे को निगल जाए। वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिये हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था, और वह बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुंचा दिया गया....

फिर मैंने स्वर्ग से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना,

अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ

और राज्य

और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है।

क्योंकि हमारे भाईयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया है।

बाइबल इसका कोई संकेत नहीं देती कि, अदन की घटनाओं से पूर्व, उसके स्वरूप में बने-मानवीय या ईश्वरीय-किसी ने भी परमेश्वर की इच्छा का विरोध किया या विद्रोह किया। उत्पत्ति 3 में परिस्थितियाँ नाटकीय रूप से बदलीं।

सांप का अपराध यह था कि उसने खुले रूप से परमेश्वर के अधिकार को ठुकराया था। परमेश्वर ने यह निर्धारित किया था कि आदम और हव्वा पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ें, जैसा कहा जाता है। उन्हें पृथ्वी पर अदन को बढ़ाना था। परन्तु शत्रु नहीं चाहता था कि वे वहाँ रहें। उसने स्वयं को परमश्वेर के स्थान पर रखा। उसने अपने मन में कहा, ''मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा (यशा. 14:13)।

उसे एक रूखी जागृति मिली थी। चूकि सांप का छल आदम और हव्वा को पाप की ओर लेकर गया, इस कारण उसे परमेश्वर के घर से निकाल दिया गया (यहेज. 28:14-16) और पृथ्वी पर छोड़ दिया गया- बाइबल की भाषा में, ''भूमि पर गिराया (काटा)'' (यशा. 14:12)- ऐसा स्थान जहाँ मृत्यु का राज्य है, जहाँ जीवन अनन्तकालीन नहीं है। जीवन का स्वामी होने के बजाय, वह मृत्यु का स्वामी बन गया, जिसका अर्थ है कि अब सबसे बड़े शत्रु का सभी मनुष्यों पर आधिपत्य था क्योंकि अदन में जो हुआ उसका अर्थ पार्थिव अमरता को खोना था। मानवता को अब एक नये अदन में परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन पाने को छुटकारा पाने की आवश्यकता होगी।

परिणाम (प्रहार) शापों की श्रृंखला था। सांप पर शाप के साथ-साथ भविष्यद्वाणी में भी कुछ कहा गया था। परमेश्वर ने कहा कि हव्वा की संतान और सांप की संतान एक दूसरे के विरुद्ध होगी। ''तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा...मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में और तेरे वंश और इस स्त्री के वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा'' (उत्प. 3:14-15)। हव्वा की सन्तान कौन है? मानवजाति। और सर्प संतान कौन हैं? यह अधिक सामान्य है। प्रेरित यूहन्ना हमें उदाहरण देता है-जैसे यहूदी अगुवे जो यीशु से घृणा करते थे। यीशु ने उनसे कहा, ''तुम अपने पिता शैतान से हो'' (यूहन्ना 8:44)। यीशु ने अपने विश्वासघाती यहूदा, को शैतान कहा (यूहन्ना 6:70)।

वह प्रत्येक व्यक्ति सर्प की संतान है जो उसके समान परमेश्वर की योजना के विरुद्ध खड़ा होता है।

बुरा बीज

अधिक संकट आने में ज़्यादा समय नहीं लगा। आदम और हव्वा की संतानों में से एक हत्यारा बन गया। कैन ने हाबिल की हत्या की, यह दिखाते हुए कि वह ''उस दुष्ट से था'' (1 यूहन्ना 3:12)। बाइबल कहानी में जैसे मानव संख्या बढ़ी, वैसे ही बुराई भी (उत्प. 6:5)।

अब एक अन्य अलौकिक अपराध होता है, जिस पर रविवार संदेशों में अधिकांशत: चर्चा नहीं की जाती, परन्तु इसका पृथ्वी पर बुराई के विस्तार में बड़ा प्रभाव था। इस बार एक से अधिक विद्रोह हुआ था। उत्पत्ति 6:5 में संक्रमक रूप से फैलती हुई बुराई को उत्पत्ति 6:1-4 से जोड़ा जाता है जो परमेश्वर के पुत्रों के बारे में है जो अपनी पार्थिव सन्तान का पालन पोषण कर रहे थे जिन्हें नपीली कहा जाता था।

बाइबल उत्पत्ति में इस बारे में अधिक नहीं बताती कि आगे क्या हुआ परन्तु बाइबल में यहां-वहाँ कहानी के टुकड़े दिखाई देते हैं, और बाइबल से बाहर यहूदी परंपरा में नये नियम के लेखक इससे भली-भांति परिचित थे और अपने लेखों में उन्होंने इसे उद्धृत किया।

उदाहरण के लिए, पतरस और यहूदा उन स्वर्गदूतों के बारे में लिखते हैं जिन्होंने बाढ़ से पूर्व पाप किया था (2 पत. 2:4-6; यहूदा 5-6 भी देखें)। जो उन्होंने कहा उसमें से कुछ बाइबल से बाहर यहूदी स्रोतों से है। पतरस और यहूदा का कहना है कि पाप करनेवाले स्वर्गदूतों को पृथ्वी के नीचे बंदी बनाकर डाल दिया गया था-अन्य शब्दों में वे न्याय के दिन तक नर्क में रहनेवाले हैं। वे परमेश्वर के अन्तिम न्याय का हिस्सा होंगे, ऐसी चीज़ जिसे बाइबल ''प्रभु का दिन'' कहती है।

पतरस और यहूदा के स्रोतों से बाइबल विद्वान भली-भांति परिचित हैं। उनमें से एक को 1 हनोक की पुस्तक कहा जाता था। यह यीशु के दिनों में यहूदियों और आरम्भिक कलीसिया के दिनों में मसीहियों में प्रचलित थी, यद्यपि इसे पवित्र और प्रेरक माना जाता था। परन्तु पतरस और यहूदा ने सोचा कि यह सामग्री इतनी महत्वपूर्ण थी कि इसे अपने लेखों में सम्मिलित किया जाए।

इन स्रोतों का अनुमान है कि परमेश्वर के पुत्र या तो मानवता को ईश्वरीय ज्ञान देने के द्वारा उसकी ''सहायता'' करना चाहते थे, परन्तु भटक गए, या फिर वे अपने स्वरूपवालों की रचना कर परमेश्वर की नकल करना चाहते थे। उन्होंने इस स्पष्टीकरण को भी जोड़ा कि दुष्टात्माएं कहाँ से आईं हैं। दुष्टात्माएं मृत नपीलियों की आत्माएं हैं जो बाढ़ से पहले या बाढ़ के समय में मरे थे। वे पृथ्वी के मनुष्यों पर हमला करतीं व देह पाने की खोज में घूमते रहीं। उत्पत्ति 6:1-4 के पश्चात् की बाइबल की पुस्तकों में नपीली जातिवालों के वंश को अनाकवंशी और रपाई कहा जाता है। (गिन. 13:32-33; व्यवस्था. 2:10-11)। इनमें से कुछ रपाई मृतक क्षेत्र के पाताल में दिखाई देते हैं (यशा. 14:9-11) जहाँ सर्प को डाला गया था। नये नियम के लेखकों ने इसे बाद में नर्क कहा।

ये विचार हमें दिखाते हैं कि आरम्भिक यहूदी लेखक उत्पत्ति 6:1-4 के आतंक को समझ गए थे। परमेश्वर के पुत्र अदन को नया रूप देने का प्रयास कर रहे थे, जहाँ ईश्वरीय और मानवीय अपने ढंग से रहते थे। उनका यह मानना था कि वे इस बारे में परमेश्वर से अधिक जानते थे कि पृथ्वी पर क्या होना चाहिए, जैसा मूल शत्रु ने किया था। परमेश्वर के शासन को पुनगर्ठित करने की योजना में सुधार का अन्त एक बुरी स्थिति को और भी बुरा बनाने से होता है। न केवल उत्पत्ति 6:1-4 सर्प के वंश की भयानक गूंज था-स्वेच्छा से परमेश्वर का विरोध-यह बुरी चीज़ों के आने की भूमिका को बनानेवाला था। मूसा और यहोशू के दिनों में प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने के प्रयास के समय में उनका जिन कुछ विरोधियों से सामना हुआ वे दानव वंशों के रूप में फैले हुए थे (व्यवस्था. 2-3)। ये दानव कई नामों से जाने जाते थे। गिनती 13:32-33 में इन्हें अनाकवंशी कहा गया है। इन्हें विशिष्ट रूप से नपीली लोगों-उत्पत्ति 6:1-4 में परमेश्वर के पुत्रों की संतान-के जीवित वंशज कहा

गया। पुराना नियम हमें बताता है कि इस्राएली दाऊद के समय तक इन विशालकाय शत्रुओं से लड़ते रहे। दाऊद ने गोलियत को मारा (1 शमू. 17), और उसके कुछ पुरुषों ने गोलियत के भाइयों को मारकर आतंक का अन्त किया (2 शमू. 21:15-23)।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

सर्प पर भविष्यसूचक शाप और बाद के पाप उसकी आरम्भिक अवस्थाएं हैं जिसे धर्म वैज्ञानिक आत्मिक युद्ध कहते हैं-भले और बुरे के बीच युद्ध, परमेश्वर और उसके लोगों के विरुद्ध एक बड़ा युद्ध। यह एक ऐसा युद्ध है जो दो युद्ध भूमियों के क्षेत्रों में लड़ा गया: दृश्य और अदृश्य।

इन कहानियों के विचित्र होने के साथ-साथ, यह महत्वपूर्ण शिक्षा को सिखाती हैं: मानव नियति के समय में परमेश्वर की ईश्वरीय प्रतियोगिता थी। वह अभी भी है। पृथ्वी और मानवता के लिए परमेश्वर की इच्छा का विरोध जीवित है, आत्मिक क्षेत्र और मानवजाति दोनों में। परन्तु परमेश्वर की इस बारे में अपनी योजनाएं हैं कि कैसे आकाश और पृथ्वी फिर से एक होंगे विरोधी हस्तक्षेप दण्डित हुए बिना न रहेगा। मानवता अत्यंत कीमती है। अपने मानव परिवार के लिए परमेश्वर की योजना में कोई बदलाव या परिर्वतन नहीं होगा।

ये संदर्भ सकारात्मक शिक्षा भी सिखााते हैं। परमेश्वर के विरुद्ध लंबे युद्ध का पता परमेश्वर के अपने स्वरूपवालों, मानवीय और ईश्वरीय, को रचे जाने के निर्णय से लगाया जा सकता है, जिससे उसने अपनी स्वतंत्रता के गुण का समभागी करना चाहा, बुराई का कारण परमेश्वर नहीं है।

बाइबल में इसका कोई संकेत नहीं मिलता कि परमेश्वर ने अपने स्वरूपवालों को आज्ञा उल्लंघन करने के लिए उकसाया, या उनकी अनाज्ञाकारिता पूर्वनिर्धारित थी। सच्चाई यह है कि परमेश्वर जानता है कि भविष्य का अर्थ यह नहीं कि यह पूर्व निर्धारित है। हम 1 शमूएल 23:1-14 जैसे संदर्भ से इसकी निश्चितता को जानते हैं, जो हमें उस समय के बारे में बताता है जब दाऊद ने कीला नगर को पलिश्तियों से बचाया था। युद्ध पश्चात् शाऊल को पता चला कि दाऊद उस नगर में है। शाऊल कुछ समय से दाऊद को इस भ्रम भय से मारने का प्रयास कर रहा था कि वह उसके सिंहासन पर अधिकार करनेवाला है। शाऊल ने कीला नगर में अपनी सेना को भेजा, इस आशा से कि दाऊद को नगर के भीतर ही पकड़ लिया जाए। शाऊल की योजनाा के बारे में जानकर दाऊद ने परमेश्वर से पूछा:

''क्या कीला के लोग मुझे उसके वंश में कर देंगे? क्या जैसे तेरे दास ने सुना है, वैसे ही शाऊल आएगा? हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, अपने दास को यह बता।''

यहोवा ने कहा, ''हाँ, वह आएगा.... हाँ, वे कर देंगे।'' (1 शमू. 23:11-12)

तब दाऊद ने वही किया जो हममें से कोई भी करता-वह जितना जल्द हो सके नगर से बाहर निकल गया। और इससे हमें पता चलता है कि घटनाओं का परमेश्वर के पूर्वज्ञान का अर्थ यह नहीं कि वे पूर्वनिर्धारित है। 1 शमूएल 23 में परमेश्वर की पूर्वज्ञात दो घटनाएं हैं जो कभी नहीं घटी। कि परमेश्वर को पहले से पता था कि ईश्वरीय विद्रोह होगा और मानव असफलता का अर्थ यह नहीं कि उसने इन चीज़ों के ऐसा होने को बनाया था। पूर्वज्ञान में पूर्वनिर्धारण की आवश्यकता नहीं होती।

इस रोशनी में हमें पतन की घटनाओं को देखने की आवश्यकता है। परमेश्वर को पता था कि आदम और हव्वा निराश करेंगे। वह आश्चर्यचकित नहीं था। वह सभी बातें जानता है, वास्तविक और संभव। परन्तु यह सच्चाई कि परमेश्वर इस संसार में बुराई और विद्रोह के प्रवेश को देख सका, मानवीय और ईश्वरीय विद्रोह दोनों में जिसने मानवजाति को विद्रोह करने को लुभाया, इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर इसका उत्तरदायी है।

अपने जीवनों और समयों में हम इसी तरह से जिस बुराई का अनुभव करते हैं उसे हम देख सकते हैं व हमें उसे देखना भी चाहिए। परमेश्वर ने पहले से पतन को देखा और उसके पास इसके सुधार की योजना भी थी। उसे यह भी पता था कि हम पापी के रूप में जन्म लेंगे और असफल होंगे (बहुत से-ईमानदार बनें)। परन्तु असफलताओं को उसने पूर्वनिर्धारित नहीं किया था। पाप करने पर हमें उस पाप की ज़िम्मेदारी लेने की आवश्यकता है। हम ऐसा करने का चुनाव करते हैं इसलिए हम पाप करते हैं। हम ऐसा नहीं कर सकते कि परमेश्वर ऐसा चाहता था, या कि हमारे पास कोई चुनाव ही नहीं था क्योंकि यह पूर्वनिर्धारित था।

परन्तु परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया कि ''जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमि. 5:6-8)। यह जानते हुए कि हम क्या करेंगे उसने हमसे प्रेम किया। उसने न केवल हमें पाप करने की स्वतंत्रता दी, उसने सुसमाचार पर विश्वास करने और यीशु के लिए जीने की स्वतंत्रता भी दी।

परमेश्वर यह भी जानता है-कि लोगों, यहां तक कि मसीहियों के साथ बुरी चीज़ें होती हैं। संसार में बुराई है क्योंकि लोगों (और ईश्वरीय प्राणियों) को बुरा करने की स्वतंत्रता है। हमारा परमेश्वर विकृत देवता नहीं है जो विस्मयकारी चीज़ों को पूर्वनिर्धारित करता है या जिसे बड़ी योजनाओं पर कार्य करने को भयानक अपराधों व पापों की ज़रूरत होती है। परमेश्वर को बुराई, अवधि की आवश्यकता नहीं। उसके योजनाएं इसके बिना भी आगे बढ़ेंगी-इसे परास्त करते और अन्त में इसका न्याय करते हुए।

हम पूछ सकते है कि परमेश्वर अभी बुराई को क्यों नहीं मिटा देता। इसका एक कारण है: बुराई को मिटाने के लिए परमेश्वर को अपने स्वरूपवालों को मिटाना होगा, मानवीय और ईश्वरीय, जो उसके समान सिद्ध नहीं हैं। यही बुराई की समस्या का समाधान कर सकता है, परन्तु इसका अर्थ यह होगा कि परमेश्वर का मूल विचार, अन्य ईश्वरीय कार्यकर्त्ताओं और मनुष्यों को उनके साथ रहने व राज्य करने को बनाना, एक बड़ी गलती थी। परमेश्वर गलती नहीं करता।

हम यह भी सोच सकते हैं कि काश परमेश्वर ने मनुष्यों को स्वतंत्रता न दी होती, परन्तु तब हम कहाँ होते? हमें स्वतंत्रता देने का चुनाव करने में, परमेश्वर ने बुद्धिहीन या रोबोट न बनाने का भी चुनाव किया। स्वतंत्र इच्छा रखने का यह विकल्प है। परन्तु चूंकि स्वतंत्रता एक ऐसा गुण है जिसमें हम परमेश्वर के सहभागी हैं, इसके बिना हम वास्तव में परमेश्वर के स्वरूपवाले नहीं होते। परमेश्वर रोबोट नहीं है। उसने हमें अपने समान बनाया। यह भी कोई गलती नहीं थी। परमेश्वर ने मानवता के विचार से इतना अधिक प्रेम किया कि विकल्प का निर्णय ले। इसलिए उसने संसार में बुराई के प्रवेश करने के पश्चात् योजना बनाई कि मानवता को छुड़ाए, अदन को नया बनाए, और प्रत्येक आँसू को पोंछ डाले (प्रका. 7:17; 21:4)।

परमेश्वर के विरुद्ध लंबे युद्ध पर हमारा निरीक्षण जारी है। परमेश्वर की युद्ध रणनीति है। परन्तु उसके प्रथम कदम लेने से पूर्व ही स्थिति और बुरी होनेवाली है।

अध्याय पाँच

अंतरीक्षी भूगोल

पिछले अध्याय में हमने जिस ईश्वरीय अपराधों को देखा था उनमें कुछ सामान्य था। दोनों ही अलौकिक विद्रोह थे जिनका उद्देश्य मानवजाति के लिए परमेश्वर की योजना और उसके शासन के पुनर्गठन का मिलकर चयन करना था। इस अध्याय में एक अन्य विद्रोह को देखेंगे, जो लोगों से जुड़ा था।

इस विद्रोह ने एक ऐसी दुर्दशा को उत्पन्न किया जिसका हिस्सा हम सभी अब तक हैं, और इस दुर्दशा में अलौकिक प्राणी भी आते हैं। परमेश्वर के पुनर्गठन की रणनीति के असाधारण संघर्ष ने एक ऐसा बुरा मोड़ लिया जिसका समाधान यीशु के लौटने पर ही होगा।

बाबुल की मीनार

बाबुल के मीनार की कहानी (उत्प. 11:1-9) बाइबल में प्रचलित व कम समझे जानेवाले विवरणों में से एक हैं। बच्चे इसके बारे में सण्डे स्कूल में सीखते हैं जब परमेश्वर ने पृथ्वी पर मनुष्य भाषा में गड़बड़ी डाल दी थी।

बाढ़ के पश्चात्, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को दी इस आज्ञा को दोहराया कि पृथ्वी में भर जाओ। वह मानवजाति के द्वारा अपने शासन प्रभाव को आरम्भ करने का प्रयास कर रहा था। एक बार पुनः, इसने कार्य नहीं किया। लोागें ने इसे ठुकरा दिया। उनके मनों में विद्रोह था, उनका सोचना था कि उनके पास इससे अच्छा विचार है। फैलने से बचने के लिए उन्होंने एक मीनार बनाने का निर्णय किया (उत्प. 11:4)। तर्क अजीब लगता है। निस्संदेह, एक विचित्र मीनार उन्हें प्रसिद्ध कर देती (उत्प. 11:4), परन्तु यह उन्हें पृथ्वी पर फैलने से कैसे बचाता?

जवाब मीनार में है। बाइबल विद्वान और खगोलशास्त्री प्राचीन बेबीलोन और इसके नगरों के आस-पास मीनारों के निर्माण के बारे में जानते हैं जिसे ज़िगुरेट कहा जाता है। इन ज़िगुरेटों का उद्देश्य ऐसे स्थानों का प्रावधान करना था जहाँ लोग देवताओं से मिल सकते थे। वे मन्दिर क्षेत्र का हिस्सा थे। संसार को अदन के समान बनाने के विपरीत कि हर कहीं परमेश्वर के ज्ञान व शासन को फैलाएं-लोग परमेश्वर को नीचे एक स्थान पर लाना चाहते थे।

यह परमेश्वर की योजना नहीं थी और वह प्रसन्न नहीं था। अतः अपनी सभा के सदस्यों से पुनः उसका यह कथन ''आओ, हम उतर के उनकी भाषा में गड़बड़ी डालें'' सुनने में आता है (उत्प. 11:7)। परमेश्वर ने यही किया, और मानवजाति अलग-अलग होकर फैल गई। यह घटना स्पष्ट करती है कि उत्पत्ति 10 अध्याय में सूचीगत जातियां अस्तित्व में आईं।

इस कहानी से अधिकांश मसीही परिचित हैं। और एक है जिससे वे नहीं हैं।

परमेश्वर और उनकी जातियाँ

उत्पत्ति 11 एकमात्र ऐसा संदर्भ नहीं है जो यह बताता है कि बाबुल की मीनार का क्या हुआ। व्यवस्थाविवरण 32:8-9 इसे इस तरह से बताता है :

> जब परमप्रधान ने एक एक जाति को निज निज भाग बांट दिया, और आदमियों को अलग-अलग बसाया, तब उसने देश देश के लोगों की सीमाएं इस्राएलियों की गिनती के अनुसार ठहराईं। क्योंकि यहोवा का अंश उसकी प्रजा है, याकूब उसका नपा हुआ निज भाग है।

कुछ बाइबल अनुवाद में ''परमेश्वर के पुत्र'' के बजाय 'इस्राएली' इस वाक्य में आया है। परन्तु बाबुल की मीनार के समय में इस्रासल का कोई अस्तित्व नहीं था। बाबुल के बाद परमेश्वर ने केवल अब्राहम को ही बुलाया था (उत्प. 12)। 'इस्राएली' सही नहीं हो सकता। मृत सागर के चर्मपत्र, जो बाइबल के सबसे पुराने लेख हैं, उनमें ''परमेश्वर के पुत्र'' शब्दावली पाई जाती है।

शब्दावली महत्वपूर्ण है। जाति जाति का विभाजन किये जाने पर, उनका परमेश्वर के पुत्रों के बीच भी विभाजन किया गया था। इस बारे में बाइबल का स्पष्टीकरण यह है कि अन्यजातियाँ अन्य देवताओं की आराधना करने को क्यों आईं। बाबुल तक, परमेश्वर समस्त मानवजाति के साथ संबन्ध में रहना चाहता था। परन्तु बाबुल

के विद्रोह ने इसे बदल दिया। परमेश्वर ने अपनी ईश्वरीय सभा के सदस्यों का अन्य जातियों पर प्रबन्धन कराने का निर्णय लिया।

परमेश्वर ने मानवजाति का न्याय किया था। बाढ़ के पश्चात् भी वे राज्य की उस योजना को नहीं समझ पाए जिसका आरम्भ अदन में हुआ था। अत: परमेश्वर ने एक नई जाति व्यवस्थाविवरण 32:9 के अनुसार अपने ''अंश''- इस्राएल-को बनाने का निर्णय किया। उसने ऐसा उत्पत्ति 12 में अब्राहम को बुलाने के साथ आरम्भ किया, बाबुल की मीनार की कहानी के बाद का ही अगला अध्याय।

परमेश्वर का जातियों को अन्य देवताओं का बंटवारा पूरे पुराने नियम को बनाता है। कैसे? शेष पुराना नियम इस्राएल के परमश्वेर और उसके लोगों, इस्राएलियों, के अन्य राष्ट्रों के देवताओं और उनमें रहनेवाले लोगों के बीच के संघर्ष का है।

परमेश्वर की मूल मंशा यह नहीं थी। जी हाँ, बाबुल में जातियों के साथ उसने जो किया वह न्याय था परन्तु परमेश्वर ने यह कभी नहीं चाहा था कि जातियों को सदा के लिए छोड़ दिया जाए। अब्राहम के साथ वाचा किये जाने के पश्चात् परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया था कि अब्राहम और उसके वंश के द्वारा ''भूमण्डल के सारे कुल आशीष पाएंगे'' (उत्पत्ति 12:3)। परमेश्वर किसी प्रकार से जातियों को अपने परिवार में लौटा लाने की योजना बना रहा था।

पौलुस को इस सबकी जानकारी थी। एथेंस में अन्यजाति विद्वानों के समक्ष अपने भाषण में उसने कहा :

उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं। और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिये बांधा है

कि वे परमेश्वर को ढूंढें कदाचित उसे टटोल कर पाएं, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं। (प्रेरित. 17:26-27)।

मूसा के द्वारा, परमेश्वर ने अपने लोगों को ''स्वर्ग की सेना'' की आराधना न करने की चेतावनी दी (व्यवस्था. 4:19-20), एक ऐसा उपनाम जो ईश्वरीय सभा के लिए अन्य स्थानों पर भी मिलता है (1 राजा 22:19)। प्रेरितों के काम 17:26-27 स्पष्ट करता है कि परमेश्वर का उद्देश्य यही था कि जातियाँ किसी तरह उसकी खोज करें।

परन्तु जिन देवताओं को जातियों पर अधिकार दिया गया था उन्होंने इस योजना में दो तरह से हस्तक्षेप किया।

भजन संहिता 82:1 में हमने पहले देखा कि परमेश्वर ने ईश्वरों की सभा को इकट्ठा किया था। पूरा भजन हमें बताता है कि क्यों। जातियों के देवताओं ने उन जातियों पर अन्यायपूर्ण राज्य किया था—उस तरह से जो सच्चे परमेश्वर की इच्छा और न्याय के सिद्धान्तों के प्रतिकूल था। सभा के आरम्भ होते ही परमेश्वर ने उन पर अभियोग लगाया था: ''तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते और दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे?'' (भजन. 82:2)। उनके अन्याय के लिए उन पर दो अन्य पदों में प्रहार करने के पश्चात् प्रभु ने बताया कि ईश्वर या देवता जातियों की अन्धकार में से सच्चे परमेश्वर तक जाने में सहायता करने में असफल रहे थे: ''वे न तो कुछ समझते और न कुछ जानते हैं, परन्तु अन्धेरे में चलते फिरते रहते हैं; पृथ्वी की पूरी नींव हिल जाती है'' (भजन. 82:5)।

दुर्भाग्यवश इस्राएली उन ईश्वरों की आराधना करने में तनावयुक्त थे जिन्हें परमेश्वर ने ''उन्हें नहीं दिया था'' (व्यवस्था. 29:26; 32:17 भी देखें) बजाय इसके कि सच्चे परमेश्वर की खोज करें। परमेश्वर की

प्रतिक्रिया तीव्र व कठोर थी (भजन. 82:6-7): ''मैंने कहा था तुम ईश्वर हो, और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो। तौभी तुम मनुष्यों के समान मरोगे, और किसी प्रधान के समान गिर जाओगे।''

ईश्वरों को अपनी अमरता को खोकर (भजन. 82:7) मनुष्यों के समान मरना होगा। अन्य संदर्भों से हम जान पाते हैं कि यह न्याय किसी न किसी तरह से अन्तिम समयों से जुड़ा है (यशा. 34:1-4)। भजन. 82 के अन्त में लेखक उस दिन की आशा करता है जब परमेश्वर अन्ततः जातियों की अपनी मीरास के रूप में घोषणा करेगा। आगे हम देखेंगे, नये नियम में उसकी इच्छा पूरी हो पाएगी।

व्यवस्थाविवरण 32 विश्वालोकन

व्यवस्थाविवरण 32 के विश्वालोकन के कारण, बाइबल का भूगोल अंतरीक्षी है। भूमि या तो पवित्र है, अर्थात् यहोवा को समर्पित, या फिर इस पर अन्य ईश्वर का अधिकार है। बाइबल में कई स्थानों पर यह विश्वालोकन दिखता है। उदाहरण के लिए, पुराने नियम की दानिय्येल की पुस्तक पराई अथवा विदेशी जातियों पर ईश्वरीय ''प्रधान'' द्वारा शासन किये जाने के बारे में बताती है (दानि. 10:13, 20-21)। अन्य उदाहरणः जिस समय दाऊद राजा शाऊल से भाग रहा था, उसे इस्राएल से पलिश्त में निकाल दिया गया था। 1 शमूएल 26:19 में दाऊद पुकार उठा, ''उन्होंने अब मुझे निकाल दिया कि मैं यहोवा के निज भाग में न रहूं, और उन्होंने कहा है, 'जा पराए देवताओं की उपासना कर'।'' दाऊद देवताओं की अदला बदली नहीं कर रहा था। वह इस बात से भी इन्कार नहीं कर रहा था कि परमेश्वर प्रत्येक स्थान पर है। परन्तु इस्राएल पवित्र भूमि था, वह स्थान जो सच्चे परमेश्वर से संबद्धित था। दाऊद अन्य ईश्वर के प्रभुत्व में फंसा हुआ था।

पुराने नियम की मेरी पसंदीदा कहानी जो इसे स्पष्ट करती है वह 2 राजा 5 में मिलती है। नामान अरामी सेना का सेनापति था। वह कोढ़ी भी था। एलीशा के यरदन नदी में सात बार स्वयं को धोने के निर्देश का पालन कर, वह कोढ़ से चमत्कारिक रूप से चंगा हो गया था। नामान ने एलीशा से कहा, ''समस्त पृथ्वी में इस्राएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है'' (5:15)। भविष्यद्वक्ता ने भुगतान नहीं लिया, अतः नामान ने नम्रतापूर्वक पूछा कि क्या वह अपने साथ दो खच्चर मिट्टी लेकर जा सकता है। मिट्टी? मिट्टी के लिए क्यों पूछा? क्योंकि वह भूमि इस्राएल के परमेश्वर की थी। वह पवित्र थी।

यह कोई संयोग नहीं कि हम ऐसी ही विचारधारा को नये नियम में देखते हैं। पौलुस विरोधी ईश्वरीय प्राणियों के लिए कई शब्दों का प्रयोग करता है (इफि. 1:20-21; 3:10; 6:12; कुलु 1:16; 2:15): प्रधानता, अधिकार सामर्थ, प्रभुता। उनमें सामान्य क्या है? ये सभी शब्द भौगोलिक प्रबन्धन में प्रयोग किये जाते हैं।

प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया को उन कुछ स्थितियों को बताने को दो पत्र लिखे जिनके बारे में उसने सुना था। पहले पत्र में, वह कलीसिया को ऐसे व्यक्ति को निष्कासित करने को कहता है जो पश्चात्ताप रहित यौन पाप में जी रहा था (1 कुरि. 5:1-13)। उत्सुकतापूर्वक, उसने लिखा कि वह ''इस व्यक्ति को शैतान को सौंपें'' (1 कुरि. 5:5)। इस भाषा का क्या कोई अर्थ बनता है?

पौलुस के कथन का पुराने नियम के अंतरीक्षी-भौगोलिक विश्वालोकन की पृष्ठभूमि के विरुद्ध ही कोई अर्थ निकलता है। पुराने नियम में, यहोवा का ''अंश'' इस्राएल और वह भूमि था जिसे वह इस्राएलियों को दे रहा था-कनान की भूमि। उसकी उपस्थिति ने भूमि को शुद्ध किया था- इसे पवित्र किया था। पहले, यहोवा की उपस्थिति तम्बू के भीतर पाई जाती थी। जब इस्राएलियों ने विश्राम किया और छावनी बनाई, वाचा के संदूक को केन्द्र में रखा गया, इस्राएलियों की छावनी को पवित्र भूमि के रूप में रेखांकित करते हुए। बाद में, जब इस्राएली कनान में रहने लगे, तब यहोवा की उपस्थति मन्दिर में थी-प्रतिज्ञा की भूमि को पवित्र भूमि के रूप में शुद्ध करते हुए-यहोवा और उसके लोग घर में थे। अब, यहोवा की उपस्थिति विश्वासियों में वास करती है-हम

परमेश्वर के मन्दिर हैं (1 कुरि. 6:19; 2 कुरि. 6:16; रोमि. 8:9)। अर्थात् विश्वासी, मसीह की देह, परमेश्वर के नये लोग, नया इस्राएल हैं। गलातियों 3 में पौलुस इसे विशिष्ट रूप से स्पष्ट करता है:

> जो विश्वास करनेवाले हैं, वे ही अब्राहम की सन्तान के हैं....
>
> क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो। (गला. 3:7, 26-29)

चूंकि विश्वासी-और जिन स्थानों पर विश्वासी इक्ट्ठे होते हैं-पवित्र भूमि हैं, पाप को निकालना चाहिए। जिस तरह से इस्राएली शिविर के चारों ओर की भूमि और अन्य ईश्वरों के प्रभुत्व में रहनेवाले आस-पास के देश अपवित्र भूमि के रूप में जाने जाते थे-अत: नये नियम के समय में-और अभी-संसार अपवित्र भूमि था। अत: पौलुस पश्चात्तापहीन विश्वासी को संसार—शैतान के अधीन—निष्कासित करने की आज्ञा देता है। कलीसिया से निकालना अपवित्र क्षेत्र में डालना था। पाप का इसी से संबन्ध था।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

अंतरीक्षी भूगोल जो बाबुल में देशों का जातियों पर परमेश्वर के न्याय का परिणाम था बाइबल के संघर्ष की पृष्ठभूमि है। यह सुसमाचार के लिए मंच को भी तैयार करता है। क्रूस पर यीशु के कार्य का शुभ समाचार यह है कि परमेश्वर के लोग अब केवल यहूदी ही नहीं परन्तु इसके विपरीत यीशु पर विश्वास करनेवाले सभी हैं (गला.3)। शिष्यों के संसार में जाने पर, शैतान का कार्यक्षेत्र परमेश्वर के क्षेत्र में बदल गया। परमेश्वर का राज्य जातियों पर पुन: नियंत्रण पाते हुए बढ़ता है।

शिक्षा यह है कि यह संसार हमारा घर नहीं है। पूरी पृथ्वी पर अंधकार फैल चुका है। अविश्वासी आत्मिक सेनाओं के बंधक हैं। स्वतंत्र होने के लिए उन्हें सुसमाचार की आवश्यकता है। और यह न भूलें: सुसमाचार ही हमारा शस्त्र है। प्रधानताओं और सामर्थ से प्रत्यक्ष रूप से सामना करने को हम अधिकृत नहीं हैं। ऐसा कोई आत्मिक दान नहीं है जिसका प्रभाव प्रेरितों द्वारा हमें न मिला हो। परन्तु सुसमाचार का विश्वासयोग्य वितरण लहर की दिशा को बदल देगा। महान कार्य एक आत्मिक युद्ध योजना है। आगे के अध्यायों में हम इस बारे में और जानेंगे।

अन्य शिक्षा: हमें सच्चे विश्वासियों की प्रत्येक मण्डली को पवित्र भूमि के रूप में देखने की आवश्यकता है। बाहरी रूप, भवन और मण्डली के आकार से परमेश्वर का कोई लेना देना नहीं है। महत्व यह रखता है कि, जहाँ दो या तीन इकट्ठे होते हैं, यीशु उनके बीच में होता है (मत्ती 18:20)। स्थान पवित्र है। प्रत्येक मण्डली चाहे कितनी छोटी या अज्ञात हो, आत्मिक युद्ध की अग्रिम रेखा पर है। प्रत्येक कलीसिया का एक ही कार्य है। अंधकार की सामर्थ प्रबल नहीं होगी।

यीशु की सेवकाई से जुड़ने पर हम अंतरीक्षी भूगोल के विचार को पुन: देखेंगे। अभी, युद्ध रेखा खींची गई है। संसार की जातियों का न्याय किया गया और मीरास से वंचित किया गया है। यह परमेश्वर का आरम्भ करने और अपने अंश व लोगों को तराशने का समय है।

अध्याय छह
वचन, नाम और स्वर्गदूत

पिछले अध्याय में हमने बाइबल के अंतरीक्षी भूगोल के बारे में जाना। बाबुल की मीनार के मानव विद्रोह की प्रतिक्रिया में, परमेश्वर ने जातियों को छोड़ दिया। उसने उन्हें अपनी स्वर्गीय सभा के सदस्य, परमेश्वर के पुत्र, होने को नियुक्त किया था (व्यवस्था. 32:8-9)।

इन छोड़ी गई जातियों के स्थान पर, उसे नये लोगों, अपनी जाति को बनाना था। पृथ्वी पर उसके राज्य को नया बनाने के लिए वे उसके अभिकर्त्ता होंगे। परन्तु यह कार्य एक विस्मयकारी या भयानक संघर्ष प्रमाणित होनेवाला था, क्योंकि अन्य ईश्वर और उनके प्रभुत्व में रहनेवाले लोग इस्राएल और परमेश्वर के हिंसक शत्रु होंगे।

परमेश्वर के नये लोगों का आरम्भ अब्राम नामक एक व्यक्ति से होगा, जिसका नाम बाद में परमेश्वर अब्राहम रखेगा। बाबुल का न्याय करने के पश्चात् ही, परमेश्वर उससे मिलने गया।

अब्राहम की वचन से भेंट

अधिकांश मसीही उत्पत्ति 12 में परमेश्वर के अब्राहम के पास आने के विषय में जानते हैं। परमेश्वर अब्राहम से अपने घर को छोड़ एक ऐसे स्थान पर जाने को कहता है जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। परमेश्वर उसका मार्गदर्शन करने की प्रतिज्ञा करता है। वह अब्राहम से कहता है कि वह उसका परमेश्वर होगा और वह उससे विशेष वाचा प्रतिज्ञाएं करता है। अब्राहम और सारा के बूढ़े हो जाने के बावजूद वह उन्हें पुत्र उत्पन्न करने के योग्य करेगा। उस पुत्र से एक बड़ा वंश आएगा-वे लोग जो परमेश्वर के नये पार्थिव परिवार को बनाएंगे। उनके द्वारा जातियाँ आशीष पाएंगी।

हम प्राय: सोचते हैं कि अब्राहम ने स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज़ को सुना था या यह अब्राहम के मन की आवाज़ थी। या संभवत: परमेश्वर स्वप्न में आया। बाइबल स्पष्ट करती है कि परमेश्वर ने ऐसा भविष्यद्वक्ताओं और अन्य लोगों के द्वारा किया। परन्तु अब्राहम के साथ ऐसा नहीं हुआ था। परमेश्वर ने कुछ अधिक नाटकीय रूप से किया था। वह एक व्यक्ति के रूप में आया। उसने और अब्राहम ने आमने-सामने बात की।

उत्पत्ति 12:6-7 में हमें इसका संकेत मिलता है। बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन दिया। तीन अध्याय पश्चात् परमेश्वर ने पुन: दर्शन दिया (उत्पत्ति 15:1-6)। इस बार परमेश्वर अब्राहम के पास दर्शन में 'यहोवा के वचन' के रूप में आया। यह उसके मन की आवाज़ नहीं थी, क्योंकि ''वचन'' अब्राहम को बाहर लेकर आया और उसे यह बताने को तारे दिखाए कि उसकी संतान अनगिनत होगी (उत्प. 15:5)।

अन्य अवसरों पर परमेश्वर अब्राहम पर व्यक्ति के रूप में प्रगट हुआ (उत्प. 18)। इसहाक, जिस पुत्र की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी (उत्प. 26:1-5), और याकूब, इसहाक के पुत्र, के साथ भी उसने ऐसा ही किया (उत्प. 28:10-22; 31:11-12; 32:24-30)।

''वचन'' या परमेश्वर की आवाज़ परमेश्वर का मानव रूप में व्यक्त करने का तरीका अनपेक्षित स्थानों में दिखता है। मेरी एक मनपसंद घटना 1 शमूएल 3 में मिलती है। बालक शमूएल रात में सोने जाते समय उसे बुलानेवाली आवाज़ को सुनने का प्रयास करता रहा। अन्तत: एली, वह याजक जिसके साथ शमूएल रहता था और जिसके लिए काम करता था, उसने जाना यह परमेश्वर था। पद 10 में, परमेश्वर शमूएल के पास पुन: आया: तब यहोवा आ खड़ा हुआ, और पहले के सामान पुकारा, ''शमूएल! शमूएल!'' हम जानते हैं कि यह मानव रूप में परमेश्वर था क्योंकि यहाँ बताया गया है कि वह आ खड़ा हुआ, और क्योंकि अध्याय के अन्त में बताया गया है (1 शमू. 1:21), ''यहोवा'' ने अपने आप को ...शमूएल पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया।

अन्य भविष्यद्वक्ता जिसके पास ''यहोवा का वचन'' शारीरिक मानव रूप में आया, नहेम्याह था। यिर्मयाह 1 में, जहाँ उसे भविष्यद्वक्ता होने को बुलाया गया है, यिर्मयाह कहता है, ''वचन'' उस तक पहुंचा। यिर्मयाह ने ''वचन'' को परमेश्वर के रूप में जाना। यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ (यिर्म. 1:1-9)।

मानव रूप में परमेश्वर

परमेश्वर का व्यक्ति के रूप में प्रगट होना वास्तव में पुराने नियम का एक नमूना है, नासरत के यीशु के आने से बहुत पहले। यदि आप इस पर विचार करें तो आपको यह समझ में आएगा। परमेश्वर हम से पूर्णतया भिन्न है। बाइबल इसका संकेत देती है कि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के सत्य तत्व, सच्ची महिमामयी उपस्थिति को देखकर जीवित नहीं रह सकता। बाइबल चरित्रों ने परमेश्वर का शारीरिक रूप से सामना किये जाने पर मृत्यु की आशा की (उत्प. 32:30; व्यवस्था. 5:24; न्यायि. 6:22-24)। ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को किसी ऐसी चीज़ के द्वारा स्पष्ट किया जिसे मानव मन जान पाए-आग, बादल, और अधिकांशत: बहुत से मसीहियों ने एक व्यक्ति को देखा।

कई अवसरों पर, मानव रूप में परमेश्वर का प्रगटीकरण ''यहोवा के स्वर्गदूत'' से भेंट के रूप में बताया गया। यह स्वर्गदूत जाना-पहचाना चरित्र है। उदाहरण के लिए, वह मूसा को जलती झाड़ी में दिखता है (निर्ग. 3:1-3)। झाड़ी में परमेश्वर ने मूसा से अपने लोगों को मिस्र से बाहर निकाल लाने की प्रतिज्ञा की। परमेश्वर याकूब को बेतेल में दर्शन में दिखा (उत्प. 28:10-22), जहाँ उसे प्रभु (यहोवा) के रूप में जाना गया। बाद में परमेश्वर के दूत ने अन्य स्वप्न में याकूब से आकर साफ-साफ कहा, कि वह वही परमेश्वर है जो उससे पहले बेतेल में मिला था। (उत्प. 31:11-12)।

बहुत से बाइबल शिक्षक इस दूत को परमेश्वर मानने में संकोच करते हैं। परन्तु, ऐसा होने के कई सुरक्षित संकेत हैं। संभवत: सबसे महत्वपूर्ण परमेश्वर के मूसा को व्यवस्था दिये जाने के पश्चात् मिलता है। इस्राएलियों के प्रतिज्ञात् भूमि की यात्रा पर जाने की तैयारी पर, परमेश्वर मूसा से कहता है

> सुन, मैं एक दूत तेरे आगे-आगे भेजता हूँ जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैंने तैयार किया है उसमें तुझे पहुंचाएगा। उसके सामने सावधान रहना, और उसकी मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा; इसलिये कि उसमें मेरा नाम रहता है।
>
> यदि तू सचमुच उसकी माने और जो कुछ मैं कहूं वह करे, तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूंगा। (निर्ग. 23:20-22)।

यह कोई सामान्य दूत नहीं है। यह दूत पाप क्षमा कर सकता (या नहीं कर सकता) है। इस दूत में परमेश्वर का नाम है। यह अभिव्यक्ति अजीब लगती है परन्तु महत्वपूर्ण है। ''नाम'' स्वयं परमेश्वर, परमेश्वर की उपस्थिति या तत्व को बताने के लिए पुराने नियम का तरीका है। उदाहरण के लिये, यशायाह 30:27-28 यहोवा का नाम एक व्यक्ति-स्वयं परमेश्वर के रूप में लेता है:

> देखो यहोवा दूर से चला आता है।
>
> उसका प्रकोप भड़क उठा है, और धुएं का बादल उठ रहा है;
>
> उसके होंठ क्रोध से भरे हुए,
>
> और उसकी जीभ भस्म करनेवाली आग के समान है। उसकी सांस.....उमण्डनेवाली नदी के समान है...

आज भी अनुपालक यहूदी परमेश्वर का उल्लेख हा-शेम (''नाम'') कहते हुए करते हैं।

इस दूत के परमेश्वर के मानवरूप में होने के विषय जानने का अन्य तरीका निर्गमन 23:20-22 की अन्य संदर्भों से तुलना करना है। जो दूत मूसा से जलती झाड़ी में मिला था, परमेश्वर के नाम का दूत उसके भीतर था,

वही निस्संदेह इस्राएलियों को मिस्र से निकालकर प्रतिज्ञा की भूमि में लाया था (न्यायि. 2:1-3)। परन्तु यही यहोवा (यहोशू 24:17-18) और परमेश्वर की उपस्थिति ने किया था (व्यवस्था. 4:37-38)। यहोवा, उपस्थिति और यहोवा का दूत एक ही आकार (व्यक्ति)-परमेश्वर की ओर संकेत करने के भिन्न तरीके हैं। परन्तु दूत मानव रूप में है।

बाइबल के संदर्भों में से एक जो इस बात को अधिक अकाट्य बनाता है वह बहुत अस्पष्ट भी है। कुछ लोगों ने ही इस पर कभी ध्यान दिया होगा। यह मृत्युशय्या का दृश्य है। अपनी मृत्यु पूर्व, याकूब यूसुफ की सन्तान को आशीष देना चाहता था। अपनी आशीष में वह अपने जीवन की घटनाओं-परमेश्वर से उसकी भेंट होने-को याद करता है। वह इस तरह से आशीष देना आरम्भ करता है (उत्प. 48:15-16):

परमेश्वर जिसके सम्मुख मेरे बापदादे अब्राहम और इसहाक चले,

वही परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा चरवाहा बना है,

और वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है...

तत्पश्चात्, आश्चर्यजनक रूप से, पद 16 में वह प्रार्थना करता है, ''वह अब इन लड़कों को आशीष दे,'' (बल दिया गया है)। वह ऐसा नहीं कहता, ''वे इन लड़कों को आशीष दें।''

वह दो भिन्न व्यक्तियों परमेश्वर और दूत के बारे में बोल रहा है। वह प्रार्थना में उन्हें एक साथ जोड़ता है: वह इन लड़कों को आशीष दे।

इससे भी अधिक मस्तिष्क को नचानेवाला न्यायियों 6, गिदोन की बुलाहट है। इसमें यहोवा और यहोवा का दूत दोनों एक ही स्थान पर मिलते हैं (न्यायि. 6:22-23)। पुराने नियम में भी, परमेश्वर एक से अधिक व्यक्तियों में था और उन्हीं में से एक व्यक्ति के रूप में आया।

यीशु : वचन, नाम, दूत

अब तक हमने परमेश्वर के जिस विवरण को देखा है वह चिर-परिचित दिखना चाहिए-वे सभी पुराने नियम के रूपांतरण हैं कि कैसे नया नियम यीशु के बारे में बताता है।

अब्राहम वचन, मानव रूप में परमेश्वर से मिला। यूहन्ना 1:1 में, प्रेरित लिखता है ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।'' पद 14 में, यूहन्ना कहता है कि यह वचन ''देहधारी हुआ; और ...हमारे बीच में डेरा किया।'' प्रथम शताब्दी के यहूदी के यूहन्ना का, सुसमाचार पढ़ने पर, उसका मन परमेश्वर की ओर जाता जो वचन के रूप में आया है। वास्तव में, यीशु ने यह भी दावा किया कि अब्राहम ने उसके दिन को देखा था, और कि वह अब्राहम से पहले से था'' (यूहन्ना 8:56-58)।

मूसा यहोवा के दूत, मानव रूप में परमेश्वर, से जलती झाड़ी में और बाद में मिला। दूत इस्राएल को मिस्र से प्रतिज्ञा के देश में लेकर आया। परन्तु यहूदा ने अपने छोटे पत्र में लिखा: ''पर यद्यपि तुम सब बात एक बार जान चुके हो, तौभी में तुम्हें इस बात की सुधि दिलाना चाहता हूँ कि प्रभु ने एक कुल को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लानेवालों को नष्ट कर दिया'' (1:5)। दूत मानव रूप में परमेश्वर था। दूत त्रिएक परिवार का दूसरा व्यक्ति था-जो बाद में कुंवारी मरियम से जन्म लेता।

परमेश्वर की उपस्थिति, नाम, ने इस दूत को अन्य सभी से पृथक बनाया। नये नियम में सारा समय, यीशु पिता परमेश्वर को नाम के रूप में बताता है। गतसमनी बाग की प्रार्थना में जांच पड़ताल के लिए पकड़े जाने से कुछ पहले, जिसके बाद क्रूसारोपण होना था, यीशु ने प्रार्थना की: ''अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी। मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया है जिन्हें तूने जगत में से मुझे दिया...मैंने तेरा नाम उनको बताया'' (यूहन्ना 17:5-6, 26)। इस अन्तिम वाक्य से उसका

क्या अर्थ था? यीशु यह नहीं कह रहा था कि उसने लोगों को परमेश्वर का नाम बताया था। वे यहूदी थे। वे परमेश्वर का नाम जानते थे-जो यहोवा था। उनके पास पुराना नियम था। वे हज़ारों पदों में परमेश्वर का नाम देख सकते थे। जब यीशु ने कहा कि उसने लोगों पर परमेश्वर का नाम प्रगट किया था, उसका यह अर्थ था कि उसने स्वयं परमेश्वर को लोगों पर प्रगट किया था। वह उनकी आँखों के समक्ष परमेश्वर था। वह वो नाम था जो देहधारी हुआ।

यह क्यों महत्वूपर्ण है

भूमि की बाइबल संबन्धी नींव डालने को हम अपने अध्ययन में काफी दूर आ चुके हैं। आप जिन सभी बाइबल कहानियों के बारे में जानते हैं वे अनदेखे संसार में अति महत्वपूर्ण आत्मिक युद्ध के परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत हुईं। यह विजेता के ईश्वरों से मुठभेड़ के बारे में हैं।

अनदेखे संसार के बाइबल संबन्धी दृष्टिकोण में, परमेश्वर के गंभीर शत्रु, अन्य देवता, रहे हैं जिन्हें उसने बनाया था जो किसी समय उसके प्रति निष्ठावान थे परन्तु बाद में उन्होंने अपना अलग मार्ग लिया। इन विद्रोही देवताओं या ईश्वरों को पौलुस अंधकार की शक्तियां, प्रधानताएं और अनदेखे संसार के अधिकारी बताता है (इफि. 6:11; कुलु. 1:16)। वे अभी भी यहां हैं। नये नियम में कुछ भी ऐसा नहीं बताता कि वे चले गए हैं। वे परमेश्वर के शासन का विरोध करने-और सुसमाचार के द्वारा उसे उसके प्रिय मानव परिवार से अनन्तकालीन पुनर्मिलन से वंचित करते हैं।

इन अंधकार की शक्तियों में से एक मृतकों का प्रभु है। उसका मानवजाति पर उचित अधिकार है, क्योंकि आदम और हव्वा से उसके छल का परिणाम अमरता का नाश होने से हुआ। और उसका लक्ष्य यही था-यहोवा के लोगों का उन्मूलन। इस्राएलियों के कनान में प्रवेश करने पर इसका जन्म परमेश्वर के विरोधी पुत्रों में हो चुका था: देश पर परमेश्वर के लोगों को अधिकार करने से रोकने के लिए मर जाएं या मार डालें। इस्राएल के देश में प्रवेश करने पर अंधकार की शक्तियों का लक्ष्य वही था, परन्तु उनकी रणनीति बदल गई थी: परमेश्वर के लोगों को अन्य देवताओं की आराधना करने को लुभाना, और तब यहोवा उन्हें हमारे लिए छोड़ देगा। और ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने अपने लोगों को निर्वासन में भेजा।

परन्तु अंधकार की शक्तियों को कुछ और भी पता था: यहोवा अपनी योजना को नहीं छोड़ेगा। मूल विद्रोह पर शाप में पहले से ही कहा गया था कि, एक दिन, हव्वा का वंश, जो अदन में मानव असफलता के प्रभावों को नष्ट करेगा, आएगा। उन्हें पता था कि कभी न कभी प्रतिज्ञा अवश्य पूरी होगी-यद्यपि जैसा पौलुस ने हमें बताया, वे ठीक-ठीक नहीं जानतीं कि परमेश्वर क्या योजना बना रहा था (1 कुरि. 2:6-8; इफि. 3:10; 6:12)। इसी कारण, यह एक रहस्य है, जिसे परमप्रधान द्वारा सभी से जानते-बूझते छिपाया गया है।

अध्याय सात
अनुबंध के नियम

हमारी अब तक की कहानी: परमेश्वर ने बाबुल में जातियों और उनके लोगों को निकाल दिया था। छोटे ईश्वरों या देवताओं को उन पर प्रभुत्व करने के लिए चुना गया (व्यवस्था. 32:8-9)। जब परमेश्वर ने अब्राहम के साथ आरम्भ किया, यह स्पष्ट था कि उसने एक दिन इस्राएल के प्रभाव द्वारा जातियों को सही मार्ग पर लाने की योजना बनाई थी (उत्प. 12:3)। परन्तु जातियों के ईश्वरों को अपनी शक्ति और आराधना को सौंपना था (भजन. 82:6-8)। अर्थात् युद्ध-देखे और अनदेखे क्षेत्रों में। इस्राएल ईश्वरों के बीच फंसा रहा था।

यहोवा कौन है?

इस्राएल की बाइबल कहानी को एक संकटपूर्ण स्थिति में समाप्त होने में अधिक समय नहीं लगा। यूसुफ की कहानी (उत्प. 37-50) स्पष्ट करती है कि इस्राएल मिस्र क्यों गया। परमेश्वर के प्रबन्ध ने यूसुफ के भाइयों द्वारा उसे पहुंचाई जानेवाली हानि को अकाल से इस्राएल के उद्धार में बदल दिया (उत्प. 46:3-4; 50:20)। परमेश्वर का इस्राएल को तत्काल ही मिस्र छोड़ने के लिए न कहना सुविचारित था। परमेश्वर को पता था कि जिस फिरौन ने यूसुफ को सम्मानित किया था वह मर जाएगा और उसका स्थान एक शत्रु लेगा (निर्ग. 1) उसे अनुमान था कि मिस्र इस्राएलियों से जबरन मज़दूरी कराएगा (उत्प. 15:13-16)। उसे यह भी पता था कि सही समय आने पर वह इस्राएल को छुड़ाएगा (उत्प. 46:4)।

परन्तु प्रतीक्षा क्यों? परमेश्वर का दु:ख के लिए सदा एक अच्छा कारण रहा है। हम इसे सदा जान नहीं सकते। यहाँ पवित्रशास्त्र इसे स्पष्ट करता है।

मूसा के मिस्र से भाग जाने और जंगल में निवास करने के पश्चात्, परमेश्वर ने जलती झाड़ी में से उसे बुलाया (निर्ग. 3:1-14) कि उसे वापस मिस्र भेजे। उसके आदेश सरल थे: फिरौन से कह, ''मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे'' (निर्ग. 5.1)। फिरौन के अन्य विचार थे। वह मिस्र में देह में ईश्वर था, सारी महिमा और सामर्थ का प्रतीक। वह नहीं चाहता था कि इब्री चरवाहों का कोई परमेश्वर उससे कुछ करने को कहे। वह यह भी नहीं जानता था कि मूसा का परमेश्वर वास्तविक था भी या नहीं। उसने ठट्ठा करते हुए जवाब दिया, ''यहोवा कौन है कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूं?'' (निर्ग. 5:2)।

उसे जवाब मिलनेवाला था- जिससे दु:ख पहुंचता। परमेश्वर ने उसे स्थिर किया था। परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''मैं उसके मन को हठीला करूंगा, और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा'' (निर्ग. 4:21)। परमेश्वर को एक लड़ाई लड़नी थी। शताब्दियों तक उन्होंने इस्राएलियों पर अत्याचार किया था, अब मिस्र और उसके ईश्वरों के दण्डित होने का समय था। फिरौन का हठीला होना इस षड्यंत्र का भाग था। बाइबल हमें बताती है कि विपत्तियां मिस्र के देवताओं पर दण्ड थीं-विशेष रूप से अन्तिम, पहलौठे की मृत्यु-(निर्ग. 12:12; गिन. 33:4), जिसने फिरौन के घर पर प्रत्यक्ष हमले का रूप ले लिया था: ''आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर विराजनेवाले फिरौन से लेकर गड़हे में पड़े हुए बंधुए तक, सबके पहिलौठों को, वरन् पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला'' (निर्ग. 12:29)।

फिरौन ने परमेश्वर का ठट्ठा किया था, और स्थिति ज़बरदस्त रूप से बदल गई थी। जैसा पौलुस ने बाद में इस तरह से कहा, ''धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा'' (गला. 6:7)। इस्राएिलयों को मुक्त करने के बाद उन पर प्रहार करने का मिस्र को उचित बदला मिला। दूर रहनेवाले कनान के लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर द्वारा मिस्र और इसके देवताओं को दी गई बड़ी हार के बारे में सुना। (यहोशू 2:8-10; तुलना करें निर्ग. 15:16-18; यहोशू 9:9)। यित्रो, मूसा के ससुर, ने मूसा के अन्तत: लौट आने पर यह सारांश निकाला, ''अब मैंने जान लिया है कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है'' (निर्ग. 18:11)।

अत: इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि लाल समुद्र के दूसरी ओर मूसा ने फिरौन और उसकी डूबी हुई सेना का ठट्ठा करते हुए यह आलंकारिक प्रश्न किया : हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? (निर्ग. 15:11)।

मिस्र से बाहर निकलने और लाल समुद्र से जाते हुए इस्राएलियों को पता था कि उन्हें कहाँ जाना है। वे अपने परमेश्वर से उसके नये पार्थिव घर और मुख्यालय, सीनै पर्वत, पर मिलनेवाले थे।

वास्तव में, इस्राएली परमेश्वर के बारे में अधिक नहीं जानते थे। निर्गमन के दिनों में किसी भी तरह से बाइबल नहीं थी। इस्राएलियों को परमेश्वर के बारे में ज्ञान अपने माता-पिता से सुनी कहानियों से मिला था, जो

पीढ़ी से पीढ़ी तक आगे बढ़ती जाती थीं। अब बाइबल में कहानी पढ़ने पर हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि परमेश्वर किस योग्य था। इस्राएलियों को बहुत कुछ सीखना था। सीनै कक्षा थी।

इस्राएल-परमेश्वर का परिवार और पार्थिव प्रतिनिधि

निर्गमन से पूर्व, जब मूसा फिरौन के सामने खड़ा था, उसने उससे कहा कि परमेश्वर का एक संदेश है: ''इस्राएल मेरा पुत्र वरन् मेरा जेठा है... मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे'' (निर्ग. 4:22-23)। यहाँ पर परमेश्वर का पुत्र होने का विचार जो अब्राहम के सभी वंशजों को बताता है-महत्वपूर्ण है। यह हमें परमेश्वर की आदम और हव्वा की सृष्टि में वापस ले जाता है।

परमेश्वर एक मानव परिवार चाहता था। वह पृथ्वी पर अपने बनाए लोगों के साथ रहना चाहता था। वह चाहता था कि उसका अनदेखा परिवार और उसका मानव परिवार उसके साथ रहे और उसकी सेवा करे। वह चाहता था कि लोग संख्या में बढ़ें और सारी पृथ्वी अदन के समान हो जाए। परन्तु जब परमेश्वर ने बाबुल की मीनार पर मानवजाति को छोड़ दिया था, उसकी तब तक कोई संतान नहीं थी जब तक कि उसने अब्राहम को नहीं बुलाया था। इस्राएल परमेश्वर का नया परिवार था। यह परमेश्वर की मूल योजना पर लौटने का समय था। जबकि आदम और हव्वा परमेश्वर के पार्थिव स्वरूपवाले रहे थे, इस्राएल को इस भूमिका को पूरा करना था।

सीनै लौटना घर वापसी था। स्वर्गीय सभा के वहाँ होने पर भी, परमेश्वर की योजना को देखना गति देना था। वे परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक नई वाचा-व्यवस्था के गवाह थे।

परमेश्वर की व्यवस्था-परमेश्वर की सभा द्वारा की गई

क्या मेरे यह कहने पर आपको आश्चर्य हुआ कि दस आज्ञाओं के दिये जाने के समय में स्वर्गीय सभा सीनै पर उपस्थित थी? यदि आपने कभी निर्गमन फिल्म देखी या सीनै की यात्रा की हो, आपने स्वर्गदूत को नहीं देखा होगा। परन्तु बाइबल बताती है कि वे वहाँ थे। यह ये भी बताती है कि उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को दिया था (प्रेरित. 7:52-53; इब्रा. 2:1-2)।

यह ये भी बताती है कि व्यवस्था ''परमेश्वर के हाथ की अंगुली'' से लिखी गई थी (व्यवस्था. 9:9-10)। यह भाषा जानी-पहचानी होनी चाहिए- परमेश्वर मानव रूप में। सीनै पर परमेश्वर एक व्यक्ति के रूप में दिखता था, ठीक वैसे जैसे उत्पत्ति में यहोवा के दूतों की कहानियाँ हैं। उसने और उसकी स्वर्गीय सेना ने मूसा और इस्राएल को व्यवस्था दी।

व्यवस्था के दिये जाने के बाद, मूसा, हारून, हारून के पुत्र और इस्राएल के सत्तर प्राचीनों ने इस्राएल के परमेश्वर को पुनः मानव रूप में देखा। इस बार वे भोजन के लिए मिले (निर्ग. 24:9-11)। जिस तरह से यीशु के समय में अन्तिम भोज ने उसके लहू की नई वाचा पर मुहर लगाई थी, यह भोजन सीनै पर इस्राएल के साथ परमेश्वर की नई वाचा-व्यवस्था-के लिए था।

परमेश्वर ने इस्राएल को व्यवस्था को दिया ताकि वे पवित्र हों (लैव्य. 19:2)। वह इस्राएल को अन्य लोगों से पृथक रखना चाहता था कि हर कोई उसे उसके परिवार के रूप में जाने। जिस तरह से परमेश्वर अन्य सभी देवताओं और प्रत्येक पार्थिव वस्तु से अलग है, वैसे ही परमेश्वर के लोगों को अन्य लोगों से पृथक होने की ज़रूरत होगी।

पवित्रता का क्या अर्थ था? इसके पीछे की धारणा क्या थी? पवित्रता का अर्थ अजीब होने से नहीं था। पवित्रता का अर्थ परमेश्वर के साथ जाने जाना, परमेश्वर के प्रति समर्पित होना और जीवन में सभी अच्छी वस्तुओं का आनन्द लेना था जो परमेश्वर के साथ सही रहने से मिलती हैं। परमेश्वर चाहता था कि इस्राएल अन्य देशों को अपनी ओर आकर्षित करे (व्यवस्था. 4:6-8; 28:9-10)। इसी कारण बाइबल इस्राएल को

''याजकों का राज्य'' (निर्ग. 19:6) और ''जातियों के लिए ज्योति'' कहती है (यशा. 42:6; 49:6; 51:4; 60:3 भी देखें)। समस्त राष्ट्र सभी जातियों के लिए आशीष होने को अब्राहम के स्थान का वारिस था (उत्प. 12:3)।

ईमानदारी पर विश्वास करना

परमेश्वर के साथ सही होना उद्धार के बारे में बात करने का अन्य तरीका है। परन्तु सण्डे स्कूल में हमें प्राय: जो सिखाया जाता है, इस्राएलियों तक उद्धार नियमों का पालन, व्यवस्था पर चलने से नहीं आया। चाहे पुराना नियम हो या नया, उद्धार को कभी अर्जित नहीं किया जाता या इसके योग्य नहीं हुआ जाता। इसे विश्वास की प्रतिक्रिया में परमेश्वर के अनुग्रह से दिया जाता है। जन्म।

इस्राएलियों को भी, हमारे समान जिनका जन्म मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पश्चात् हुआ, विश्वास रखना था। उन्हें विश्वास रखना था कि उनका परमेश्वपर सभी देवताओं का परमश्वेर है, यह भरोसा करते हुए कि उसने उन्हें उसके लोग बनाया था। वे अकेले ईश्वरों के ईश्वर तक पहुंच सकते थे। व्यवस्था इस बारे में नहीं थी कि इस्राएलियों ने उद्धार कैसे पाया-यह इस बारे में थी कि उन्होंने परमेश्वर, जिस पर वे विश्वास करते थे, उसके प्रति ईमानदारी को कैसे दिखाया था। इस्राएलियों के लिए उद्धार ईश्वरों के परमेश्वर के चरित्र और प्रतिज्ञाओं में विश्वास के बारे में और अन्य देवता की आराधना करने से इन्कार किये जाने के बारे में था। यह हृदय से विश्वास करने व ईमानदार रहने के बारे में था, न कि परमेश्वर से चॉकलेट पाने के लिए नंबर बनाना था।

राजा दाऊद ने व्यभिचार और हत्या कराने जैसे भयानक काम किये (2 शमू. 11)। व्यवस्था के अनुसार, वह व्यवस्था को तोड़नेवाला और अपने अपराधों के लिए मृत्यु पाने के योग्य था। तौभी, वह परमप्रधान परमेश्वर पर यहोवा के रूप में विश्वास करने से कभी नहीं डगमगाया था। उसने अन्य देवता के प्रति अपनी निष्ठा की कभी अदला-बदली नहीं की थी। और परमेश्वर उसके प्रति दयावंत था।

नये नियम में भी यही सत्य है। सुसमाचार पर विश्वास करने का अर्थ यह विश्वास करना है कि इस्राएल का परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्य रूप में आया, हमारे पापों के बलिदान के रूप में स्वेच्छा से क्रूस पर मरा, और तीसरे दिन फिर जी उठा। हमें इसका विश्वास से अंगकार करना है और तत्पश्चात् यीशु के प्रति निष्ठा को अन्य सभी देवताओं को छोड़ने के द्वारा दिखाना है। इस पर ध्यान दिये बिना कि ये अन्य देवता उद्धार के बारे में कहते हैं, बाइबल हमें बताती है कि यीशु के अतिरिक्त किसी और नाम में उद्धार नहीं है (प्रेरित. 4:12) और कि विश्वास अक्षत रहना चाहिए (रोमि. 11:17-24; इब्रा. 3:19; 10:22; 38-39)। व्यक्तिगत असफलता यीशु का दूसरे देवता के लिए व्यापार करने के समान नहीं है-और परमेश्वर अन्तर बता सकता है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

निर्गमन में और सीनै में जो हुआ इसके बहुत से आकर्षक संकेतवाद हैं। वह दृश्य जहाँ मूसा व अन्यों ने परमेश्वर के साथ सीनै पर मानव रूप में भोजन किया तत्काल हमारे ध्यान को खिंचता है। यहाँ मूसा के साथ सत्तर प्राचीन हैं। यदि आप उत्पत्ति 10 में जातियों की गणना करें जिन्हें परमेश्वर ने बाबुल की मीनार की घटना के पश्चात् बेकार समझ कर छोड़ दिया था, वे सत्तर थीं। ये जातियाँ परमेश्वर के पुत्रों-अन्य निम्न देवताओं-के लिए निर्धारित थीं- जब इस्राएल के परमेश्वर ने जातियों का न्याय किया (व्यवस्था. 4:19-20; 32:8-9)। सत्तर प्राचीन, सत्तर परमेश्वर के पुत्र और सत्तर मीरास से वंचित जातियाँ क्यों?

समानताएं सुविचारित हैं। अपनी पार्थिव सेवकाई का आरम्भ करते समय, यीशु ने सत्तर शिष्य भेजे (लूका 10:1)। यह महान कार्य का अग्रदूत था। संख्या इस विचार को देती है कि यीशु के शिष्यों को परमेश्वर के

राज्य शासन के लिए जातियों को फिर से पाना है। यही राज्य प्रकाशितवाक्य 21-22 के नये विश्वव्यापी अदन में अन्तिम दिनों में अपने अन्तिम रूप को पाएगा। सत्तर की संख्या का दोहराया जाना एक संदेश है: परमेश्वर का नया पार्थिव परिवार, इस्राएल-अब्राहम की संतान-जो खो गया उसकी पुन: प्राप्ति का साधन होंगे।

परन्तु यह यहीं नहीं रुक जाता। प्रेरित पौलुस ने गलतियों में लिखा कि विश्वासी अब्राहम से की प्रतिज्ञाओं के वारिस हैं। यीशु पर विश्वास करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति विश्वास द्वारा अब्राहम की संतान है (गला. 3:26-29)। इसका अर्थ यह है कि आपको और मुझे देवताओं से जातियों को लौटा लाने का कार्य मिला है। हम पृथ्वी पर परमेश्वर की नई मानव सभा हैं। और महिमा पाने पर, हम नये अदन में उसके ईश्वरीय परिवार से जुड़ेंगे।

बाइबल कई स्थानों पर इस विचार को देती है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक विश्वासियों के अन्त के दिनों में यीशु के साथ जातियों पर शासन करने की मीरास पाने के बारे में बताती है। (प्रका. 3:21)। अर्थात् हम परमेश्वर के पुत्रों का स्थान लेंगे जो बाबुल के समय से उन जातियों पर अधिकार करते थे। इसी कारण यूहन्ना कहता है, विश्वासियों को परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार है (यूहन्ना 1:12; 1 यूहन्ना 3:1-3 की तुलना में); हम वास्तव में अन्तिम दिनों में ईश्वरीय स्थान लेंगे परन्तु परमेश्वर के पुत्रों के बैरी बनेंगे।

इसी कारण पौलुस विश्वासियों को लिखते समय सांसारिक न्यायालयों द्वारा उनके झगड़ों का समाधान रोकने के संबन्ध में कहता है, ''क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे?'' (1 कुरि. 6:3)। नई पृथ्वी पर ईश्वरीय (महिमामयी) बनाए जाने पर, हम स्वर्गदूतों से पद में ऊपर होंगे। एक दिन हम यीशु के समान बनेंगे (1 यूहन्ना 3:1-3; 1 कुरि. 15:35-49) और उसके साथ उन जातियों पर राज्य करेंगे (प्रका. 2:26) जिन पर अभी विरोधी देवताओं का नियंत्रण है। विश्वासी, अब्राहम की आत्मिक संतान, अदन की असफलता के कारण आए मृत्यु के शाप के साथ-साथ जातियों के मीरास से वंचित होने के शाप को भी बदलेंगे।

हमें इस तरह से जीना है कि मानों हमें इस नियति पर विश्वास है। पुराने नियम योजना की प्रत्येक चीज़ हम तक आती है। अदन पर पुनर्विचार करें। परमेश्वर अपने दो परिवारों-एक ईश्वरीय, दूसरा मानव-के साथ अदन में मिलकर रहना व शासन करना चाहता था। विद्रोह के कारण वह योजना बिगड़ गई, परन्तु मिस्र से इस्राएल को बचाने के कारण पुनर्जीवित हुई। अब्राहम की संतान से मसीह को आना था, जो अदन की असफलता को नष्ट करेगा (उत्प. 3:15)। इस्राएल के बिना, हमारी कोई नियति नहीं होगी।

और इसी कारण ईश्वर और उनके अनुयायी पुन: इस्राएल को मिटाने का प्रयास करेंगे।

अध्याय आठ
पवित्र स्थान

इस्राएलियों ने सीनै पर्वत पर एक वर्ष से अधिक समय बिताया। इतना समय क्यों? वे परमेश्वर के साथ वाचा में प्रवेश कर चुके थे और उन्होंने दस आज्ञाएं पाई थीं। परन्तु उन्हें अभी भी बहुत कुछ सीखना था। अपने पितरों-अब्राहम, इसहाक और याकूब-के परमेश्वर पर विश्वास करना और उसके प्रति निष्ठावान रहना एक चीज़ थी। यह जानना दूसरी कि परमेश्वर क्या चाहता था और वह किसके समान था।

पवित्रता की अवधारणा

पुराने नियम के कई अजीब नियम और विधियाँ लोगों को यह सिखाने की आवश्यकता पर आधारित हैं कि परमेश्वर किसी भी अन्य चीज़ से भिन्न है। अपने स्वभाव और चरित्र में वह अनोखा है; वह मानवता और किसी भी अन्य चीज़ से पूर्णतया अलग है। इस्राएल के लिए, यही सत्य था जिसका सभी समयों में समर्थन करना था। अन्यथा, परमेश्वर को साधारण समझा जाता।

परमेश्वर के दूसरों से अद्वितीय होने के विचार के लिए बाइबल शब्द पवित्रता है। इसका अर्थ है ''अलग रखना'' या ''पृथक होना।'' यह अवधारणा आवश्यक रूप से नैतिक चरित्र के बारे में नहीं है- इस विचार के बारे में कि हमें परमेश्वर के पृथक नैतिक मानदण्डों को दिखाने के लिए एक निश्चित ढंग से व्यवहार करना है- यद्यपि इसे सम्मिलित किया गया है (लैव्य. 19:2)।

परमेश्वर इस्राएलियों को पवित्रता का बौद्धिक स्पष्टीकरण देकर संतुष्ट नहीं था। वह चाहता था कि उसकी भिन्नता की धारणा प्राचीन इस्राएल के जीवन में व्याप्त हो। बाइबल हमें बताती है कि पवित्र क्षेत्रों में पहुंचने के लिए इसे रीति-रिवाज़ों (प्रतीकात्मक कार्यों) और नियमों से पूरा किया गया था।

परमेश्वर कैसे ''भिन्न'' है?

इस प्रश्न का संक्षिप्त जवाब है, ''हर तरह से'', परन्तु यह बहुत संक्षिप्त है। बाइबल अत्यधिक व्यावहारिक है, और इस्राएली समुदाय के जीवन व्यतीत करने की रीतियों व नियमों का इस पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर न केवल इस्राएल का जीवन स्रोत था—वह जीवन था। परमेश्वर इस पृथ्वी का नहीं है, एक ऐसा स्थान जहाँ हर कहीं मृत्यु, रोग व अपूर्णता है। उसका कार्यक्षेत्र अलौकिक है। हमारा कार्यक्षेत्र पार्थिव है। वह जिस पार्थिव स्थान पर आता है वह उसकी उपस्थिति से पवित्र और पारलौकिक बन जाता है। हम जिस स्थान पर हैं वह साधारण है। परमेश्वर साधारण के विपरीत है।

प्राचीन इस्राएल में, ये विचार इस सच्चाई से प्रगट होते थे कि परमेश्वर के समान स्थान पाने को लोगों को शुद्ध होना था। पुराने नियम के बहुत से नियम इस शुद्धिकरण से नियंत्रित थे।

इस्राएलियों को विभिन्न गतिविधियों और स्थितियों द्वारा अयोग्य (अशुद्ध) ठहराया जा सकता था। यौन संबन्ध, खून बहाना, निश्चित हाथों के काम, और मृत देह को छूना (मनुष्य या जानवर भी) सभी इस्राएलियों को अशुद्ध करते थे। इस्राएलियों को शिकार के कुछ निश्चित पक्षियों को खाने की मनाही थी? जो मृत जानवरों को खाते थे (जैसे गिद्ध, बाज; लैव्य. 11:13-19) या रेंगनेवाले जानवर (जैसे छिपकली, चूहे; लैव्य. 11:24-40)।

इन उदाहरणों में, गंदगी केवल नैतिकता के बारे में नहीं थी परन्तु इसके विपरीत जीवन खोने और परमेश्वर की सिद्धता से असंगति के बारे में थी। तर्क के सरल होने पर भी यह हमारे आधुनिक मनों को अजीब लगता है। लहू या यौन तरल पदार्थ की कमी को उस कमी के रूप में देखा जाता था जिसे बनाया गया था और जिसमें जीवन था। परमेश्वर जीवन की कमी से नहीं जुड़ा था परन्तु इसके विपरीत जीवन देनेवाले के रूप में। ऐसे तरल पदार्थ की कमी के पश्चात् ''शुद्धिकरण'' की आवश्यकता परमेश्वर के स्वभाव को स्मरण करानेवाला था। इसी तरह के ''शुद्धिकरण'' की आवश्यकता मृत के संपर्क से अशुद्ध होने पर थी। किसी को भी शारीरिक अपूर्णता या घाव के कारण इस्राएल के पवित्र स्थानों से निकाला जा सकता था, ऐसी स्थिति में इस तरह की अपूर्णता का परमेश्वर की पूर्णता या सिद्धता से कोई मेल नहीं था।

इन सभी नियमों का उद्देश्य अलौकिक विश्वालोकन को लाना था।

गंदगी की समस्या की मरम्मत

पवित्र स्थान तक जाने को ''अशुद्ध'' और अनुपयुक्त होना प्राचीन इस्राएलियों के लिए एक गंभीर विषय था। अशुद्ध होने पर वे बलिदानों व भेंटों को अपेक्षित स्थानों तक नहीं ला सकते थे। समाधान पारंपरिक शुद्धिकरण था, कई बार अपने बलिदान या प्रतीक्षा की अवधि से जुड़ा हुआ होता था।

लहू बलिदान का तर्क—एक व्यक्ति या वस्तु पर लहू छिड़कना कि उन्हें पवित्र स्थान तक जाने को शुद्ध व योग्य किया जाए—हमारे लिए अजीब है। परन्तु लहू बलिदान का धर्मवैज्ञानिक उद्देश्य था—उसने प्रतिस्थापन्न की अवधारणा को बनाया। चूंकि लहू जीवन का स्रोत था (लैव्य. 17:11), किसी पशु जीवन को समाप्त करने ने

यह शिक्षा दी कि परमेश्वर तक उसके अभिप्राय को छोड़ और किसी तरीके से पहुंचने का अर्थ मृत्यु है। बलिदान का लहू एक सौभाग्यपूर्ण प्रतिस्थापन्न था कि किसी इस्राएली की दूषित, अशुद्ध स्थिति को सुधारे।

शिक्षा का सारांश यह था कि परमेश्वर बलिदान के प्रतिस्थापन्न द्वारा किसी इस्राएली के जीवन को बचा रहा था। मानव जीवन पशु जीवन से अधिक पवित्र था क्योंकि मनुष्यों का परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था (उत्प. 1:26; 9:6)। इस्राएलियों ने एक अलौकिक हस्तक्षेप द्वारा अपने अस्तित्व को पाया था जिसने अब्राहम और सारा को संतान पाने के योग्य किया था (उत्प. 12:1-3)। परन्तु मानव जीवन पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में खतरे में था। बलिदानों ने उन्हें स्मरण कराया कि परमेश्वर का जीवन और मृत्यु पर अधिकार है—और परमेश्वर उन पर दया दिखाना चाहता था।

पृथ्वी पर स्वर्ग (और नर्क)

परमेश्वर की भिन्नता पर ध्यान लगाना कुछ विचारों को देता है—न केवल परमेश्वर के बारे में, परन्तु अलौकिक सीमाओं के बारे में भी। ''कार्यक्षेत्र की भिन्नता'' का विचार इस्राएल के अलौकिक विश्वालोकन के लिए मूलभूत था। यदि जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति होती थी वह पवित्र होता था, उसके आस-पास की भूमि पवित्र नहीं होती थी—तब यह या तो साधारण या कुछ मामलों में विरोध या बुराई की होती थी।

अदन को स्मरण करने के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति को स्पष्ट किया जाता था। तम्बू और मन्दिर में बहुत सी चीज़ें लोगों को अदन की याद दिलाने को बनाई गई थीं, वह स्थान जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी मिलते थे। सोने के दीवट को एक वृक्ष के रूप में सजाया व तैयार किया गया था (निर्ग. 25:31-40), अदन के जीवन के वृक्ष की समरूपता में। यह उस स्थान पर सुरक्षा के रूप में खड़ा था, जो परमपवित्र के मार्ग को रोकता था, वह स्थान जहाँ वाचा का सन्दूक रखा गया था (निर्ग. 25:10-22)।

परमपवित्र स्थान के भीतर करूबों का भी अदन से साफ सम्बंध है। अदन के करूब अदन में परमेश्वर के निवास स्थान की सुरक्षा पर खड़े थे (उत्प. 3:24)। परमपवित्र स्थान के भीतर करूबों ने वाचा के सन्दूक के ढक्कन की रक्षा की (निर्ग. 25:18-20)। बाद में, सुलैमान द्वारा मन्दिर का निर्माण किये जाने के पश्चात्, मन्दिर के भीतर से तम्बू की बनावट को हटा दिया गया और परमेश्वर के सिंहासन के रूप में सन्दूक पर दो विशाल करूबों को स्थापित किया गया, सन्दूक को उसके पांवों की चौकी बनाते हुए (1 इति. 28:12)।

मन्दिर को अदन की वाटिका के समान भी सजाया गया था, जो सघन वनस्पति और पशुओं के प्रतिरूपों से भरा था (1 राजा 6-7)। फूल, खजूर वृक्षों, शेरों और अनारों को इसकी शिल्पकला में तराशा गया था। यह उस स्थान की दृश्य स्मृति करानेवाला था जहाँ परमेश्वर सबसे पहले पृथ्वी पर अपने मानव परिवार के साथ रहने को आया था।

इस्राएलियों को वाचा के अंतरीक्षी भूगोल की भी स्मृति कराने की आवश्यकता थी। यदि इस्राएली शिविर, और बाद में इस्राएल राष्ट्र, पवित्र भूमि था, परमेश्वर और उसके लोगों का घर; तब बाहरी इस्राएल का भू-भाग अपवित्र भूमि था। परमेश्वर ने सीनै से बहुत पहले अन्य राष्ट्रों को छोड़ दिया था और उन्हें निम्न ईश्वरों के अधीन कर दिया था (व्यवस्था. 4:19-20; 32:8-9)। किसी दिन वह उन राष्ट्रों को फिर एकत्रित करेगा, परन्तु बाइबल के दिनों में वे अंधकार के क्षेत्र में थे।

एक इस्राएली रीति ने इस अविस्मरणीय विवरण में शिक्षा दी। प्रायश्चित का दिन (योम किप्पुर), प्रति वर्ष होता था जिसका लैव्यव्यवस्था 16 में वर्णन किया गया, इसमें एक और विस्मयकारी शिक्षा मिलती है कि लोगों को पवित्र और अपवित्र भूमि की याद दिलाए।

इसमें दो बकरे लिये जाते थे। एक को बलिदान कर उसके लहू को पवित्र स्थान में अगले वर्ष के लिए मानव अशुद्धता को साफ करने के लिए छिड़का जाता था। बलिदान किया गया बकरा प्रभु के लिए था। दूसरे बकरे को मारा नहीं जाता था–महायाजक इस पर लोगों के पापों को प्रतीकात्मक रूप से डालकर जंगल में छोड़ देता था। यह बकरा ''अज़ाज़ेल के लिए'' था।

''अज़ाज़ेल'' कौन और क्या है? कुछ अनुवाद अज़ाज़ेल के विपरीत बलि का बकरा का उपयोग करते हैं। मृत सागर के चर्मपत्रों में, इस प्रश्न के लिए उपयुक्त इब्री नाम–दुष्टात्मा है। जंगल की यात्रा से लेकर प्रतिज्ञा के देश की यात्रा तक, इस्राएली दुष्टात्माओं को बलिदान चढ़ाते रहे थे (लैव्य. 17:7), क्योंकि उन्हें भय था कि बुरी शक्तियाँ उनके शिविर को संकट में डालेंगी। जंगल, अन्ततः इस्राएली शिविर के बाहर का स्थान था, और इसी कारण यह बुरे तत्वों का स्थान था। इस रीति को रोकना था, और अज़ाज़ेल के बकरे ने इसे पूरा किया। अज़ाज़ेल का बकरा बुरे देवताओं के लिए भेंट नहीं था–बकरे को बलिदान नहीं किया जाता था। इसके विपरीत, इसे जंगल में भेजना पवित्र भूमि (इस्राएली शिविर) को पाप से साफ करने का प्रतीकात्मक ढंग था।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

नये नियम में चीज़ें बदल गईं, परन्तु पहले के समान भी रहीं। परमेश्वर अभी भी भिन्न है। उसकी पवित्रता की मांग है कि उसकी उपस्थिति में प्रवेश करने को हम शुद्ध हों। हमारे लिये, ऐसा उस पर विश्वास करने से है जो यीशु ने क्रूस पर किया।

हमारे लिए यीशु ने जो किया वह अलौकिक रूप से उलट था। वह जंगल में गया–वह स्थान जहाँ हम दुष्ट शक्तियों के होने की आशा करते हैं–और शैतान की परीक्षा पर विजयी हुआ। यह घटना उसकी सेवकाई के आरम्भ किये जाने के बाद की थी, जिसका समापन दुष्ट पर विजयी होने से हुआ, उसे ''मृत्यु पर शक्ति मिली थी'' (इब्रा. 2:14)। यीशु को पवित्र नगर के बाहर क्रूसित किया गया था (इब्रा. 13:12)। हमारे पापों को उस पर डाले जाने के कारण वह अशुद्ध था, और यरूशलेम पवित्र भूमि थी।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान हमें शुद्ध करते हैं–हमें उसकी उपस्थिति में जाने के योग्य बनाते हैं। हमारे पापों को ''दूर कर दिया गया'' (रोमि. 11:27; 1 यूहन्ना 3:5 भी देखें)। अशुद्ध पापी होने पर भी, यदि हम मसीह में हैं तो हम पवित्र हैं। हमारे अपूर्ण होने पर भी, यीशु के कारण हमारी अपूर्णता को अनदेखा किया जाता है। यह सरल है, तौभी यह अथाह है।

हम प्रायः सोचते हैं कि हमारी तुलना में इस्राएलियों के पास अधिक आत्मिक सुअवसर थे। आखिरकार, उनके बीच परमेश्वर की उपस्थिति रहती थी। वे एक ऐसे संसार में थे जहाँ अलौकिक, अंतरीक्षी भूगोल वास्तविक था। हम प्रायः ऐसा सोचते हैं कि जो उनके पास था यदि वह हमारे पास होता तो हम अधिक आत्मिक, अधिक परमेश्वर से संबद्ध होते, यदि परमेश्वर द्वारा निरंतर हमें स्मरण कराया जाता।

नया नियम बताता है कि हमारे पास वे हैं।

पवित्र स्थान के चिह्न के रूप में हमें तम्बू या मन्दिर की आवश्यकता नहीं। हमारी देह पवित्र स्थान है। पौलुस हमारी पार्थिव देहों को ''डेरा'' कहता है (2 कुरि. 5:4) क्योंकि हम उसी ईश्वरीय उपस्थिति में रहते हैं जो तम्बू और मन्दिर में महापवित्र स्थान पर भरी थी (रोमि. 8:9-11)। अन्त में, हमारी देह, हमारी आत्मा का पार्थिव घर, मर जाएगी, उस स्थान में जाने को ''जो हाथों से बना घर नहीं'' (2 कुरि. 5:1-3), स्वर्गीय निवास–नये अदन, स्वर्ग का पृथ्वी पर लौटना (प्रका. 22:1-3)।

चूंकि परमेश्वर आज अपने आत्मा के द्वारा विश्वासियों में रहता है, प्रत्येक कलीसिया–विश्वासियों की प्रत्येक सभा–उसकी पवित्र भूमि है। इसी कारण पौलुस कुरिन्थवासियों को उस मसीही को निष्कासित करने को

कहता है जो पाप में रह रहा था, उसने उन्हें निर्देश दिया कि उसे ''शैतान को सौंपा जाए'' (1 कुरि. 5:5)। कलीसिया पवित्र भूमि थी। विश्वासियों की सहभागिता से बाहर शैतान का अधिकार था। पाप और स्व-विनाश इसी से जुड़े थे।

यह स्वयं को अलौकिक आँखों से देखने का समय है। आप परमेश्वर की संतान हैं, पवित्र स्थान के लिए उपयुक्त, उसके कारण नहीं कि आप क्या करते या क्या नहीं करते हैं, परन्तु इसलिए कि आप मसीह में हैं, परमेश्वर द्वारा अपनाए गए (रोमि. 8:15; गला. 4:5)। आपको अंधकार के क्षेत्र से निकालकर ''उसके प्रिय पुत्र के राज्य'' में प्रवेश कराया गया है (कुलु. 1:13)।

हमें कभी भी, एक क्षण के लिए भी, यह नहीं भूलना, कि हम मसीह में कौन हैं–और इसका संसार के लिए क्या अर्थ है।

अध्याय नौ

पवित्र युद्ध

बाइबल एक विवादास्पद पुस्तक है। जो लोग इसे परमेश्वर के वचन के रूप में नहीं देखते वे प्राय: इसकी कही बातों का विरोध करते हैं। परन्तु बाइबल के कुछ अंश मसीहियों को भी दुविधा में डाल देते हैं। प्रतिज्ञा की भूमि पर विजय पाने के लिए इस्राएल का युद्ध मुख्य विषय है।

क्यों? अधिकांश लोगों को मारने के कारण। यह विवेकहीन और पूर्णता से दूर प्रतीत होता है। कुछ नगरों में संपूर्ण जनसंख्या–पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों और यहाँ तक कि पशुओं–को भी मार डालना आवश्यक था? वहाँ के निवासियों को आत्म-समर्पण क्यों नहीं करने दिया? उनकी हत्या करने के विपरीत उन्हें निर्वासित करना क्या अच्छा नहीं होता?

इन विरोधों का एक जवाब है-परन्तु मैंने यह जाना है कि इसका यह जवाब मसीहियों को दुविधा में डालने के साथ-साथ समस्या मे भी डालता है। एक इस्राएली के अलौकिक विश्वालोकन के द्वारा देखने पर आप न केवल विजयी विवरण के मूलाधार व उद्देश्य को ही समझ सकते हैं।

इस्राएल का अलौकिक तर्क

प्रतिज्ञा भूमि के लिए युद्ध दो तथ्यों से जुड़ा है, दोनों ही इस्राएल के अपने संसार को समझने में गहराई से जुड़े हैं, न केवल मानवजाति के निवास-स्थान के रूप में परन्तु अनदेखे आत्मिक युद्ध में प्रतिफल के रूप में भी। हम दोनों के बारे में ही चर्चा कर चुके हैं, परन्तु आएं अभी समीक्षा करें।

एक तथ्य बाबुल की मीनार की घटनाओं का परिणाम है, जब जातियों के परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किये जाने पर उसने यह निर्णय लिया, कि वह अब से उन जाति के लोगों के साथ प्रत्यक्ष संबन्ध में नहीं रहेगा। इसके विपरीत, उसने अपनी ईश्वरीय सभा के सदस्यों, परमेश्वर के पुत्रों, को उन पर अधिकार रखने को नियुक्त किया (व्यवस्था. 4:19-20; 32:8-9)। तत्पश्चात् उसने अब्राहम को बुलाया और उसे व उसकी पत्नी सारा को एक संतान (इसहाक) को पाने के योग्य किया, जिससे इस्राएल के लोग आते।

भजन संहिता 82 में हमने देखा कि ये निम्न ईश्वर भ्रष्ट हो गए। इन्होंने अन्याय होने दिया। लोग परमप्रधान परमेश्वर की आराधना करने के बजाय इनकी आराधना करने लगे। अत:, वे परमेश्वर और उसके लोगों, इस्राएल, के शत्रु बन गए। चूंकि कुछ जातियाँ कनान देश में ही थी, जिसे परमेश्वर निर्गमन के पश्चात् अपनी जाति इस्राएल को देना चाहता था, मूसा और इस्राएलियों का यह मानना था कि उस पर अधिकार प्राप्त लोग उनके नैतिक शत्रु थे और उनके ईश्वर इस्राएल का नाश करने को हर संभव प्रयास करेंगे।

दूसरा तथ्य इस्राएलियों के लिए भी अधिक भयावह था। यह स्पष्ट रीति से बताया गया है कि इस्राएलियों के कनान, प्रतिज्ञा की भूमि, की सीमा पर पहुंचने पर क्या हुआ था।

मूसा ने देश और इसके वासियों का विवरण पाने को बारह भेदियों को कनान भेजा। भेदिये इस प्रमाण के साथ लौटे कि देश अद्‌भुत है और इसमें परमेश्वर के कहे अनुसार ''दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं'' (गिन. 13:27)। परन्तु इसके बाद उन्होंने मानों तोप का गोला गिराया: ''वह देश जिसका भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुरुष हमने उसमें देखे वे सबके सब बड़े डील-डौल के हैं। फिर हमने वहाँ नपीलों को अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे'' (गिन. 13:32-33)।

हमने नपीलों के बारे में पहले भी बात की है। वे परमेश्वर के पुत्रों और मनुष्यों की पुत्रियों से उत्पन्न हुए थे (उत्प. 6:1-4)। जिन अनाकी दानवों को इस्राएली भेदियों ने कनान में देखा था वे उनके वंशज थे, और बहुत से कनान देश में इधर-उधर फैले हुए थे, उन जातियों और नगरों में जिन्हें इस्राएलियों को देश पाने को हराना था (गिन. 13:28-29)। देश और इसके ईश्वरों को जीतने का कार्य पहले कठिन लग रहा था; परन्तु अब यह पूरी तरह से असंभव लग रहा था। अब देश पर अधिकार करने को उन्हें असामान्य आकार वाले योद्धाओं का सामना करना होगा।

केवल दो भेदियों-यहोशू और कालिब ने विश्वास किया कि परमेश्वर अनाकबंश्यिों को हराने में इस्राएलियों की सहायता करेगा। बाकी ने लोगों को यह विश्वास दिलाया कि वे परास्त हो जाएंगे। यह भरोसा करने के बजाय कि परमेश्वर जिसने फिरौन और उसकी समस्त सेना का नाश किया वह उन्हें विजयी करेगा परन्तु इसके विपरीत उन्होंने शिकायत करते हुए कहा, ''उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हमसे बलवान हैं'' (गिन. 13:31)।

परमेश्वर ने जवाब दिया, ''वे लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे'' (गिन. 14:11)। वास्तव में परमेश्वर इतना क्रोधित था कि उसने इस्राएल को मीरास से वंचित करने की धमकी दी, वही चीज़ जो उसने बाबुल की मीनार पर जातियों के साथ की थी-और इस बार इसे पुन: मूसा के साथ आरम्भ किया-''मैं उन्हें मरी से मारूंगा, और उनके निज भाग से उन्हें निकाल दूंगा, और तुझ से एक जाति उत्पन्न करूंगा जो उनसे बड़ी और बलवन्त होगी'' (गिन. 14:12)।

मूसा ने परमेश्वर को नरम पड़ने को कहा (गिन. 14:13-19)। परमेश्वर ने ऐसा किया परन्तु वह लोगों के अविश्वास को अनदेखा नहीं कर सका। एक सबक सीखना था। यह कठोर होगा। उसने मूसा से कहा:

> तेरी विनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूँ; परन्तु मेरे जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी; उन सब लोगों ने जिन्होंने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें नहीं मानीं, इसलिये जिस देश के विषय मैंने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएंगे; अर्थात् जितनों ने मेरा अपमान किया है उनमें से कोई भी उसे देखने न पाएगा....
>
> तुम्हारे शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे; और तुम सब में से बीस वर्ष के या उससे अधिक आयु के जितने गिने गए थे, और मुझ पर बुड़बुड़ाते थे, उनमें से यपुन्ने के पुत्र कालिब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश में न जाने पाएगा, जिसके विषय मैंने शपथ खाई है कि तुम को उसमें बसाऊंगा। परन्तु तुम्हारे बालबच्चे जिनके विषय तुम ने कहा है, कि वे लूट में चले जाएंगे, उनको मैं उस देश में पहुंचा दूंगा; और वे उस देश को जान लेंगे जिस को तुम ने तुच्छ जाना है (गिन. 14:20-31)।

बाइबल के दिनों में ''बार-बार'' (उत्प. 31:7; अय्यूब 19:3) के लिए ''दस बार'' बोली रूप था। अब तक, परमेश्वर लोगों की शिकायतों को सहता रहा था। मिस्र में बंधुआ दास न बने रहने के रोमांच के विपरीत, वे उस भोजन के नियंत्रण में थे जो वे वहाँ खाते थे (गिन. 11:1-14; 31-35) और परमेश्वर के चुने हुए अगुवे, मूसा, के बारे में शिकायत की (गिन. 12:1-16)। परन्तु उसका धीरज समाप्त हो चुका था; इस बार, उनके अविश्वास की भयानक कीमत होनेवाली थी। इस्राएल चालीस वर्षों तक जंगल में तब तक भटकनेवाला था जब तक कि सभी विश्वास करनेवाले व्यस्क मर न जाएं।

दूसरा अवसर

इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश को लेने का दूसरा अवसर होगा। व्यवस्थाविवरण 2-3 इसका वृतांत देता है कि कैसे 40 वर्षों तक भटकने के समय में इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा की भूमि के पूर्व में यरदन नदी (जिसे ट्रांस यरदन कहा जाता था) के दूसरी ओर के क्षेत्र में समापन किया। ट्रांस यरदन की भूमि एदोम, मोआब और अम्मोम थीं, वे क्षेत्र जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम के भतीजे लूत और एसाव, याकूब के भाई को दिया था। वहाँ रहनेवाले लोग इस्राएलियों के संबन्धी थे...उनमें से अधिकांश, किसी न किसी तरह से। परन्तु वहाँ अन्य भी थे।

परमेश्वर ने मूसा को इस यात्रा को विशिष्ट उद्देश्य के लिए बनाने का निर्देश दिया था। यह दूर के संबन्धियों से मिलने से संबद्धित नहीं था। इस्राएलियों ने अन्ततः बाशान नामक क्षेत्र में अपना मार्ग लिया। यह स्थान सुनाम नहीं था। बाइबल से बाहर के प्राचीन साहित्य में, बाशान ''सर्प के स्थान'' के रूप में जाना जाता था। इसके दो मुख्य नगरों, अश्तारोत और एद्रेई, का वर्णन इस यात्रा के संबन्ध में किया गया (व्यवस्था. 1:4; यहोशू 13:12), जो मृतक क्षेत्र के अपराध लोक के प्रवेश द्वार के रूप में जाने जाते थे। इस्राएल के अलौकिक विश्वदृष्टिकोण के संदर्भ में, परमेश्वर इस्राएलियों को नर्क के फाटकों तक लेकर गया था।

और केवल इतना ही नहीं था।

परमेश्वर इस्राएलियों को वहाँ दो राजाओं, सीहोन और ओग, से सामना करने को लाया। ये दोनों राजा एमोनी थे (व्यवस्था. 3:2-3; 3:14) और बाइबल के कथानुसार रपाई के शासक थे। जैसे व्यवस्थाविवरण 2:11 को अनिष्टसूचक माना जाता था, अनाकियों के समान वे भी रपाई गिने जाते थे। परमेश्वर मूसा के द्वारा लोगों को एक और ऐसे क्षेत्र में लेकर गया जहाँ इसी तरह के दानवों का अधिकार था जिन्होंने इस्राएली भेदियों को अविश्वास के पूर्व वर्षों में भयभीत किया था (गिन. 13:32-33), वह घटना जिसके कारण वे चालीस वर्षों तक भटके थे।

परमेश्वर उन्हें वहाँ क्यों लाया था? क्योंकि यह मुठभेड़ उसका पूर्वानुभव था जो चालीस वर्ष के अन्त में होना था। इस्राएल को उस भूमि पर अधिकार करने को यरदन को पार करना था, जिसे परमेश्वर ने उसे दिया था। परमेश्वर अपने लोगों को परख रहा था। क्या वे इस बार विश्वास करेंगे और लड़ेंगे? ऐसा होने पर, विजय से उनको उसके लिए विश्वास व भरोसा मिलेगा जो उनके लिए आगे रखा था।

इस्राएली वर्षों पूर्व इस विश्वास से हट चुके थे। परन्तु इस बार कहानी का अन्त भिन्न तरह से हुआ। मूसा ने कहा ''हमारे परमेश्वर यहोवा ने उसको (सीहोन को) हमारे द्वारा हरा दिया, और हमने उसके पुत्रों और सारी सेना समेत मारा डाला...हमारे परमेश्वर यहोवा ने सारी सेना समेत बाइबल के राजा ओग को भी हमारे हाथ में कर दिया; और हम उसको यहां मारते रहें कि उनमें से कोई भी बच पाया'' (व्यवस्था. 2:33; 3:3)। आमोस भविष्यद्वक्ता कई वर्षों बाद अपनी बाइबल पुस्तक में मुठभेड़ को स्मरण करता है उसने परिणाम का इस तरह वर्णन किया: ''मैंने (यहोवा ने) उनके सामने से एमोरियों को नष्ट किया था, जिनकी लम्बाई देवदारों की सी, और जिनका बल बांज वृक्षों का सा था'' (आमोस 2:9)।

उनके दूसरे अवसर के आरम्भ का यह कठोर तरीका था। परमेश्वर ने उनसे उनके भयों का सामना करने की मांग की-वह भय जिसकी कीमत में उन्हें चालीस वर्ष तक भटकना पड़ा। उनका वह परमेश्वर था जिसने लाल समुद्र को उनके लिए दो भागों में बांट दिया था। यह उनका उसे स्मरण करने का समय था।

''विनाश के लिए सौंपे गए''

इस्राएल सीहोन और ओग के विरुद्ध विजयी रहा। और यहाँ हम जान पाते हैं कि प्रतिज्ञा के देश को विजयी करना कई बार विनाश से क्यों जुड़ा था। नगर की समस्त जनसंख्या जो विशाल रपाइयों का घर थी ''विनाश को सौंपे गए थे'' (व्यवस्था. 3:6)। लक्ष्य बदला लेना नहीं था। लक्ष्य नपीली वंश को समाप्त करना था। इस्राएलियों के लिए, दानव कुल की वंशावली राक्षसी थी, जो पतित ईश्वरीय प्राणियों के विद्रोह से उत्पन्न हुई थी। वे राक्षसी विरासत के सहअस्तित्व में नहीं रह पाए।

समय बीतता गया और इस्राएलियों के यरदन पार कनान जाने से पूर्व, मूसा की मृत्यु हो गई। अगुआई यहोशू के पास चली गई। उसने इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश पर विजय देने को कई सैनिक अभियानों की अगुआई की, और इन अभियानों का मार्गदर्शन दो तथ्यों के द्वारा किया गया था जिसका मैंने इस अध्याय में वर्णन किया था: विरोधी शत्रु देशों को राक्षसी कुल वंशावली को मिटाने के लिए निकालना।

उस संदर्भ में देखा गया, प्रतिज्ञा के देश को जीतना एक पवित्र युद्ध था-अंधकार की शक्तियों और विरोधी ईश्वरों के प्रभुत्व में आनेवाले शत्रुओं के विरुद्ध बाइबल कहती है कि वास्तविक आत्मिक तत्व हैं।

विजय के तर्क का सारांश यहोशू 11:21-22 में दिया गया है:

> उस समय यहोशू ने पहाड़ी देश में आकर हेब्रोन, दबीर, अनाब, वरन् यहूदा और इस्राएल दोनों के सारे पहाड़ी देश में रहनेवाले अनाकियों को नष्ट किया; यहोशू ने नगरों समेत उनका नाश कर डाला। इस्राएलियों के देश में कोई अनाकी न रह गया; केवल अज्जा, गत और अशदोद में कोई रह गए।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

यहोशू के अभियान अधिकांशत: सफल रहे, परन्तु पूरे नहीं। कुछ दानव बच गए थे- और जबकि यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं लग रहा था, यह आगे होनेवाली घटनाओं का पूर्वाभास था। गत में कुछ तनावयुक्त था। गत एक पलिश्ती नगर बन गया था (यहोशू 13:3) और राजा दाऊद के समय में गोलियत का गृहनगर था (1 शमू. 17:4)। गोलियत गत में एकमात्र दानव नहीं था (1 इति. 20:5-8)। न ही वे सभी जिन्हें प्रतिज्ञा के देश को विजयी करने के दौरान ''विनाश को सौंपा गया'' था, नष्ट हुए थे और यह तथ्य कि विजय ने अपने सभी प्रमुख निवेशों को पूरा नहीं किया था जिसके परिणाम इस्राएलियों को झेलने पड़े थे।

न्यायियों की पुस्तक हमें बताती है कि विजय यहोशू की मृत्यु के समय में अन्य तरह से अपूर्ण थी। इसे पूर्णतया कभी जाना नहीं गया था। इस्राएलियों ने यह निर्णय लिया कि उन्होंने सही किया था और अन्य देशों को निकालने के लिए परमेश्वर का आज्ञा उल्लंघन किया। परन्तु आंशिक आज्ञाकारिता अनाज्ञाकारिता है।

इस्राएली परमेश्वर के लक्ष्यों को रोकने के अपने निर्णय का भुगतान करने को शताब्दी बिता देते। न्यायियों की पुस्तक एक अद्‌भुत चक्र को दोहराती है : इस्राएल बार-बार विरोधी देशों द्वारा परास्त किया जा रहा था, और परमेश्वर पर विश्वास करने की उनकी निष्ठा समाप्ति की ओर थी। कुछ चीज़ों में-राजा दाऊद, और उसके पुत्र, सुलैमान, के समय में सुधार आया, परन्तु सुलैमान के पश्चात् इस्राएल गृह युद्ध और मूर्तिपूजा में फंस गया।

विजय की महिमा वीरकथा की असफलता का पूर्वाभास था। पराजय को विजय के जबड़े से खींचा गया था। परमेश्वर का राज्य शासन-पुनर्गठित अदन के लिए उसकी योजना का समापन हो गया। अलौकिक विश्वालोकन, जिसका उद्‌भव बाबुल से बुरे ईश्वरों के प्रभुत्व में अविश्वासी राष्ट्रों के साथ हुआ, अक्षत बना रहा।

इस्राएल परास्त व तितर-बितर हो गया था, और उस का प्रतिज्ञा का देश अन्य ईश्वरों और उनके लोगों के शासन के अन्तर्गत आ गया था। यही विश्वालोकन नये नियम में भी व्याप्त था। अंधकार की शक्तियों का वर्णन करने को पौलुस प्रधानताएं, अधिकार, सिंहासन और सामर्थ जैसे शब्दों का उपयोग करता है। इनमें से प्रत्येक शब्द का उपयोग भौगोलिक शासन की पुरातनता को बताने के लिये किया गया था।

इस्राएलियों की असफलता का कारण परमेश्वर के लोगों की ओर से अनाज्ञकारिता व विश्वासहीनता थी। मनुष्य कमज़ोर हैं। हम आश्चर्य कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारे लिए क्यों परेशान होता है। परन्तु अदन की ओर मुड़कर देखने पर, हम इसके कारण को जान पाते हैं। परमेश्वर मानवजाति के प्रति समर्पित था। हम उसके प्रतिरूप और उसका पार्थिव परिवार हैं। उसके पृथ्वी पर शासन करने की मूल योजना का हमसे संबन्ध है। परमेश्वर का पृथ्वी पर अपने सभा शासन में मानव सहभागिता को न रखना इस संदेश को देगा कि वह इसे कार्यकारी बनाने में असमर्थ है या इससे आरम्भ करना एक बुरा विचार है। परमेश्वर अपने लक्ष्यों को पाने में असमर्थ नहीं है। और जैसा पिछले अध्याय में बताया, वह गलती नहीं करता।

यह पाप और असफलता की पुरानी समस्या तक पहुंचने का समय है। अदन राज्य शासन को पुनर्जीवित करने के द्वारा मानवजाति पर भरोसा नहीं किया जा सकता। स्वयं परमेश्वर ही वह कर सकता है जिसका किया जाना आवश्यक है। परमेश्वर ही अपनी वाचाओं के अनुबंध को पूरा कर सकता है। परन्तु मानवजाति को एक ओर नहीं किया जाएगा। इसके विपरीत, परमेश्वर को मनुष्य बनना होगा। स्वयं परमेश्वर को व्यवस्था व वाचाओं को पूरा कर समस्त मानव असफलता के लिए अपने पर दण्ड लेना होगा। परन्तु इस अविचारणीय समाधान को सफल बनाने का अर्थ यह होगा कि इसे प्रत्येक से छिपाकर रखा जाए जिसमें वे बुद्धिजीवी आत्मिक प्राणी भी आते हैं जो उसके उद्देश्यों के विरोधी हैं। यह सरल नहीं होने वाला था।

अध्याय दस
स्पष्ट दृष्टि से छिपा हुआ

पतन से ही, परमेश्वर अदन के लिए अपने मूल लक्ष्य को पुनर्जीवित करने का प्रयास करता रहा था कि पृथ्वी पर अपने ईश्वरीय और मानव परिवार दोनों के साथ रहे। परमेश्वर ने आदम और हव्वा से फल लाने व बढ़ने को कहा था, परिणामस्वरूप पूरे ग्रह पर परमेश्वर का अच्छा शासन फैलता जाए। परमेश्वर संपूर्ण पृथ्वी को एक ऐसा स्थान बनाना चाहता था जहाँ आकाश और पृथ्वी मिलते हों, जहाँ मानवता ईश्वरीयता का आनन्द ले सके, और जहाँ ईश्वरीयता पृथ्वी और मानवजाति का आनन्द ले सके।

असफलता का इतिहास

मानवजाति ने पाप किया और परमेश्वर की उपस्थिति से निकाली गई। अदन को बन्द कर दिया गया। ईश्वरीय शत्रु, सर्प, पृथ्वी पर जहाँ जीवन अनन्तकालीन नहीं है परमेश्वर की उपस्थिति से निकाला गया। वह स्थान जहाँ मृत्यु का राज्य है और वह मृत्यु का प्रभु बना; और इसी कारण अब तक के प्रत्येक व्यक्ति पर अधिकार का दावा करता है- जिसका कारण उनका पाप है, और पाप की मज़दूरी मृत्यु है (रोमि. 6:23)।

बाढ़ के पश्चात् परमेश्वर ने अदन के लक्ष्य को नूह और उसके परिवार के साथ दोहराया। फूलो-फलो और बढ़ जाओ। यह नवीनीकरण था। इसके बावजूद, मानवजाति ने विद्रोह किया। परमेश्वर का आज्ञापालन करने और प्रत्येक स्थान पर परमेश्वर के शासन और ज्ञान को फैलाने के विपरीत, उन्होने एक मीनार बनाना चाही जहाँ परमेश्वर उनसे आकार मिल सके।

फिर असफलता। परमेश्वर इससे सहमत नहीं होनेवाला था। उसने जातियों की भाषा में गड़बड़ी डाल दी और जातियों पर अपनी सभा के सदस्यों को शासन करने दिया। तत्पश्चात् उसने एक नये मानव परिवार अब्राहम और सारा के साथ पुनः आरम्भ करने का निर्णय किया। अब्राहम के वंश के माध्यम से वह अन्य राष्ट्रों या जातियों तक जाता–उसके राज्य शासन के एक बार पुनर्जीवित हो जाने के पश्चात् (उत्प. 12:3)।

यह भी असफल रहा। अतः अगला प्रयास, इस्राएल को मिस्र से निकाल कर सीनै तक लाने और तत्पश्चात् प्रतिज्ञा के देश तक लाने का था। इस्राएल असफल रहा। अन्ततः परमेश्वर ने दाऊद को उठाया और उसके पश्चात् सुलैमान को। परनतु सुलैमान की मृत्यु पश्चात् इस्राएल अन्य ईश्वरों के पीछे चलने लगा और इस्राएली एक दूसरे के प्रति कामोत्तेजित होने लगे। परमेश्वर को उन्हें प्रतिज्ञा के देश से निर्वासन में भेजना पड़ा।

परमेश्वर की उपस्थिति से अलग मानव कहानी, असफलता की कहानी है। इसका कारण मानवजाति का पतन से ही खोना है। सभी मनुष्य अपूर्ण और परमेश्वर से विरक्त है। किसी भी मानव अगुवे पर परमेश्वर के राज्य के आरम्भ करने और बनाए रखने पर भरोसा नहीं किया जा सकता। वे परमेश्वर के प्रति विश्वसनीय बने रहने का सामना करते हैं। वे अपना अपना मार्ग लेते। मनुष्य पाप करते, असफल होते, और मृत्यु के प्रभु, परमेश्वर के सबसे बड़े शत्रु, से मिलते। परन्तु परमेश्वर का नये अदन पर सेवक–राजा होकर आशीषों को बांटने का दर्शन मनुष्यों के बिना पूरा नहीं हो सकता। और मनुष्यों में परमेश्वर की योजना को अन्त तक थामे रखने की योग्यता उन्हें नया बनाने के द्वारा पूरी होगी। पतन का शाप हटना होगा।

और इसके लिए, परमेश्वर की योजना थी।

समाधान–और समस्या

परमेश्वर को एक व्यक्ति की आवश्यकता थी जो एक व्यक्ति से अधिक हो–कोई ऐसा जो परीक्षा का सामना कर सके, जो सदा आज्ञापालन करे, जो राजपद के लिए उपयुक्त हो, जो मृत्यु के शाप को अपनी मरने और सामर्थ से पुनः जी उठने के द्वारा पलट सके। यह सभी एक ही तरह से होना संभव थाः परमेश्वर स्वयं मनुष्य बने। परमेश्वर स्वयं समस्त मानवजाति के लिए मनुष्य बने और अदन को पुनर्गठित करे। मनुष्यों को क्षमा मिलने और पुनरुत्थान की सामर्थ से यीशु के समान ईश्वरीय बनाने के द्वारा (1 यूहन्ना 3:1–3) ही अदन एक वास्तविकता हो सकता है।

परन्तु इसमें एक समस्या थी। इस योजना के पता चल जाने पर–कि यहाँ जो पुनर्गठित करने को मरा और पुनर्जीवित हुआ वह परमेश्वर था–अंधकार की शक्तियाँ इसके लिए समर्पण नहीं करतीं। ठीक यही पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया को अपने पत्र में कहाः

> परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्तज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के ठहराया। जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि वे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। (1 कुरि. 2:7–8)।

पौलुस किसके बारे में बोल रहा है? हाकिम शब्द मानव अधिकारियों के बारे में भी हो सकता है–जैसे पेंतियुस पिलातुस और यहूदी अगुवे–पौलुस की दृष्टि में ईश्वरीय, शैतानी सामर्थ भी है (इफि. 2:2)। परमेश्वर के शत्रु, मनुष्य और ईश्वरीय को अंधेरे में रखना था। प्रत्येक चीज़ परमेश्वर–मनुष्य की मृत्यु और पुनरुत्थान पर आधारित थी।

परन्तु आप उसे एक रहस्य के रूप में कैसे रखते?

रहस्यमयी मसीहा

परमेश्वर-मनुष्य, निस्संदेह मसीहा नासरत का यीशु, जिस पर अदन का पुनर्गठन निर्भर करता था। परन्तु क्या आपको इससे आश्चर्य हुआ कि मैंने कहा कि मसीहा की योजना रहस्य थी? क्या हम पुराना नियम पढ़कर ही पूरी योजना को नहीं देख सकते? नहीं, हम नहीं कर सकते।

मानें या न मानें, पुराने नियम में ऐसा कोई पद नहीं है जो एक मनुष्य के लिए 'मसीहा' शब्द का उपयोग करता है जो कि वास्तव में परमेश्वर था और मानवजाति के पापों के लिए मरता। यशायाह 53:1। में ''दु:ख उठानेवाले दास'' का चित्रण भी नहीं। मसीहा शब्द उस अध्याय में और यशायाह में और कहीं नहीं दिखता, 'दास' शब्द इस्राएल जाति को बताता है, न कि एक व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता को (यशा. 41:8; 44:1-2, 21; 45:4; 48:20 49:3)। मसीहा शब्द, जिसका अर्थ 'अभिषिक्त' है, केवल दाऊद या उसके किसी वंशज के लिए जिसने उसके पश्चात् राजा के रूप में शासन किया, प्राय: इसी तरह से संबोधित किया जाता है।

वास्तव में, जो मैं कह रहा हूं उसका प्रमाण कि पुराने नियम में-जो नये नियम में स्पष्ट है-उस ईश्वरीय मसीह की छवि जिसे मरना ओर पुनर्जीवित होना था-पाना कठिन है।

इस पर विचार करें कि जब यीशु ने शिष्यों को बताया कि वह यरूशलेम में मरने को जा रहा है, उनकी क्या प्रतिक्रिया थी। इस घोषणा ने उन्हें निराश व हैरान किया था (मत्ती 17:22-23, मरकुस 9:30-32)। उन्होंने यह कहते हुए प्रतिक्रिया नहीं दी, ''ओह, सही कहा, हमने इस बारे में पवित्रशास्त्र में पढ़ा है।'' पतरस ने यीशु की ऐसा कहने के लिए झिड़का भी (मत्ती 16:21-23)।

परमेश्वर की इस नई योजना की शिष्यों को कोई जानकारी और आभास नहीं था। उन्होंने यीशु को दाऊद के पुत्र और उसके सिंहासन के उपयुक्त वारिस के रूप में जाना था, जिसने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के कहे अनुसार आश्चर्यकर्म किये।

पुनरुत्थान के बाद भी, शिष्यों को दु:ख उठानेवाले मसीहा को देखने के लिए अपने मनों को अलौकिक रूप से खुले रखना था। मृतकों में से जी उठने के पश्चात् यीशु उन्हें दिखाई दिया और उनसे बोला:

> ''ये मेरी वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, पूरी हों।'' तब उसने पवित्रशास्त्र बूझने के लिए उनकी समझ खोल दी। (लूका 24:44-45)

परमेश्वर की ''नई योजना''-कि वह पतन के शाप को के उलटने को मरे और मृतकों में से जी उठे-पुराने नियम में इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। इसके विपरीत, पूरे पुराने नियम के दर्जनों स्थानों में सुराग बिखरे हुए हैं। यह सभी एक ही स्थान पर कभी प्रगट नहीं हुए हैं। मसीहा की छवि दूरदर्शिता में ही स्पष्ट है-या केवल उसके लिए जो पहले से ही जानता है कि किसकी खोज और आशा करनी है।

बुद्धिजीवी अलौकिक बुरे प्राणी, निस्संदेह जानते थे कि दाऊद का भविष्यद्वाणी किया पुत्र आ चुका है (मत्ती 8:28-29; लूका 4:31-35)। पुराने नियम से वे इतना ही जान पाए थे। परन्तु दुष्टात्माओं के ऐसा कहने का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि वे जान गए थे कि यीशु शाप को उलटने को पृथ्वी पर मरने और पुनर्जीवित होने को आया था।

जैसा पौलुस ने कहा, यदि वे और शैतान इसे जानते, तो वे यहूदा जैसे लोगों को जो उसे मारना चाहते थे यीशु से विश्वासघात करने को नहीं उसकाते। शैतान और उसके साथ रहनेवाले बहुत कुछ हैं, परन्तु बेवकूफ नहीं हैं। वे परमेश्वर की योजनानुसार यीशु को मारने में बेवकूफ बने थे। उन्होंने घटनाओं की एक ऐसी शृंखला का आरंभ किया जो उन्हें उनके विनाश की ओर लेकर जाती। यह ईश्वरीय निर्धारित पथभ्रष्ट करना था।

छवि के अंश

दूरदर्शिता में, हम शिष्यों से कहीं अधिक मसीहा की छवि के हिस्सों को अधिक स्पष्टता से देख सकते हैं। जबकि ऐसा कोई पद नहीं है जो दाऊद के ईश्वरीय मसीहा पुत्र के शाप को उलटने हेतु मरने और जीवित होने के बारे में बताता है, जिसकी कड़ियाँ पूरे पुराने नियम में मिलती हैं। पहले यह देखा गया कि योजना ने कैसे काम किया, आप एक सुराग को पाकर निम्नलिखित नमूनों को आरम्भ करें।

उदाहरण के लिए पूछें, ''परमेश्वर का पुत्र कौन है?'' पुराने नियम में जवाब ''यीशु'' नहीं है। आदम परमेश्वर का पुत्र था- वह प्रथम मनुष्य था। इस्राएल को परमेश्वर का पुत्र कहा जाता है (निर्ग. 4:23; होशे 11:1)। इस्राएली राजा को परमेश्वर का पुत्र कहा जाता है (भजन. 2:7)। नये नियम में, यीशु ''दूसरा आदम'' और ''परमेश्वर का पुत्र'' है (रोमि. 1:4; 1 कुरि. 15:45; 2 कुरि. 1:19; इब्रा. 4:4)।

हम कह सकते हैं, ''परमेश्वर का दास कौन है?'' आदम ने परमेश्वर की सेवा की (उत्प. 2:15)। इस्राएल को परमेश्वर का दास कहा जाता था (2 शमू. 3:18; 44:1-2, 21; 45:4; 48:20; 49:3)। दाऊद और अन्य इस्राएली राजा अपनी-अपनी वंशावली में परमेश्वर के दास कहलाए (2 शमू. 3:18; भजन. 89:3; 1 राजा 3:7; 2 इति. 32:16)। यीशु भी दास था (प्रेरित. 3:13; 4:30; फिलि. 2:1-8)।

क्या परमेश्वर के इन पुत्रों और परमेश्वर के दासों ने दु:ख उठाया? क्या उनका पार्थिव अस्तित्व किसी सीमा तक समाप्त हुआ? क्या वह अस्तित्व नया बना? क्या अदन में उनका एक भविष्य है? सभी का जवाब हां है। आदम, इस्राएल, और दाऊद के वंश के राजा सभी परमेश्वर की उपस्थिति से निकाले गए-पृथ्वी पर वह स्थान जहाँ वह रहा (अदन और प्रतिज्ञा का देश)। तथापि वे परमेश्वर और जी उठे यीशु के साथ एक नये अदन में रहने को छुड़ाए गए और छुड़ाए जाएंगे।

आशय यह है कि ये सभी रूप किसी न किसी तरीके से यीशु की ओर संकेत करते हैं, और वह नमूनों को पूरा करता है। वह एक संयुक्त चित्र है जो सभी टुकड़ों का पता लगाए जाने और उनके उचित स्थानों में रखे जाने पर दृश्य हो जाता है। प्रत्येक चीज़ सरल दृष्टि में थी, तथापि, दूरदर्शिता के बिना पता लगाने में असमर्थ है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

बौद्धिक बुराई-शैतान, दुष्टात्माएं, निम्न ईश्वर जो जातियों पर शासन करते हैं-सब कुछ नहीं जानते। उनमें परमेश्वर का मन नहीं है, न ही वे इसे समझ सकते हैं। हम प्राय: यह मानते हैं कि अलौकिक होने के कारण वे सर्वज्ञानी हैं। यह सत्य नहीं। एक ही सर्वज्ञानी प्राणी-परमेश्वर है। और वह हमारी ओर है।

पतन के कारण, शैतान का हम पर उचित न्यायपूर्ण अधिकार था। मेरा इससे क्या अर्थ है? आदम के पाप के कारण, ''मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई।'' (रोमि. 5:12) सर्प को शाप दिया गया और उसे अधोलोक क्षेत्र या जिसे हम नर्क कहते हैं- उस पर शासन करने को निकाल दिया गया। पतन के कारण प्रत्येक को मरना और मृतकों के क्षेत्र-जहाँ शैतान का राज्य है- में जाना निश्चित है।

यह सब उस समय बदला जब यीशु पहली बार आया और उसने क्रूस पर मरने व मृतकों में से जी उठने के द्वारा उद्धार की योजना को पूरा किया। अदन को पुनर्गठित करने का पहला कदम मानवजाति को मृत्यु के शाप से बचाने के साधनों को देना था। वे सभी विश्वास करनेवाले, जिन्हें परमेश्वर के परिवार और राज्य का सदस्य बनाया गया है अब, मृत्यु के शाप और मृत्यु के प्रभु के बंधक नहीं हैं। इसी कारण, राज्य को नया बनाने की अपनी सेवकाई का आरम्भ करते हुए (लूका 10:1-9), यीशु ने कहा, ''मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था'' (लूका 10:18)। यीशु को पता था कि उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान हमारे प्राणों पर शैतान के अधिकार को हटाकर पापों के ऋण का भुगतान करेंगे। परमेश्वर का राज्य मृत्यु के प्रभु के अन्त का आरम्भ था।

हमें पुन: स्मरण रखना है कि हम कौन हैं-और हमारी पहचान कहाँ से है। विश्वासियों को कलीसिया में सामूहिक रूप से *मसीह की देह* कहा जाता है। और यीशु की देह को जिलाया गया था। वह जी उठा है इसलिए हम भी जी उठेंगे (1 कुरि. 15:20-23)। वह मृतकों में *पहिलौठा* है। हम ''उन पहिलौठों की साधारण सभा.. जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं'' (इब्रा. 12:22-24)। जैसा यहून्ना ने कहा: ''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं'' (यूहन्ना 1:12)। शैतान का परमेश्वर की सन्तान पर कोई अधिकार नहीं है। क्योंकि वे मृतकों में से जी उठेंगे। मृतकों के क्षेत्र में जीवन ढूंढने का कोई कारण नहीं है।

परमेश्वर हर किसी पर अपने हाथ को प्रगट नहीं करेगा-चाहे वे मानवीय हो, ईश्वरीय, निष्ठावान या विरोधी हो। मसीहा के परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने की विशिष्टता को छिपाया गया। परन्तु परमेश्वर सुस्पष्ट शब्दों में उन्हें जानने देता है कि जब मसीहा प्रगट हुआ, वह मानव देह में परमेश्वर था, और अदन के राज्य का पुनर्गठन अन्तिम खेल था। जैसा हम अगले दो अध्यायों में देखेंगे, कि लोगों के हृदयों में विश्वास को उसकाने और अंधकार की शक्तियों को उनके विनाश को गति देने के चारे के रूप में प्रयुक्त करने की पर्याप्त जानकारी थी।

अध्याय ग्यारह

अलौकिक उद्देश्य

पिछले अध्याय में, हमने देखा कि पुराना नियम कैसे मसीहा को सरल दृष्टि से छिपाते हुए प्रस्तुत करता है। अदन का पुनर्गठन करने और मानवजाति को छुड़ाने की परमेश्वर की मुख्य योजना मसीहा, यीशु, के लिए थी कि वह क्रूस पर मरे और तत्पश्चात् मृतकों में से जी उठे।

मनुष्य बनने के द्वारा परमेश्वर को यह निश्चय हो सका कि दाऊद की वंशावली से एक मानव राजा पाप में गिरे बिना और आत्मिक रूप से अलग रहकर उसके लोगों पर राज्य कर पाएगा। इस राजा के उसके लोगों के स्थान पर मरने और मृतकों में से जी उठने पर ही परमेश्वर एक ही समय में सभी के पापों का न्याय कर सकता व उद्धार दे सकता है। मसीहा की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा ही पतित लोगों का परमेश्वर की पारिवारिक सभा में स्थान होगा, मूल रूप से नियोजित उस नवीकृत अदन राज्य पर शासन करते हुए।

परन्तु उस पर विचार करें जो आवश्यक है: यीशु को, किसी तरह से यह निश्चित करना था कि अंधकार की अलौकिक शक्तियों ने उसे मार डालने को लोगों को बहकाया-जो यह नहीं जान पाए कि वे क्या कर रहे हैं। जैसा पौलुस ने कुरिन्थियों से कहा था (1 कुरि. 2:6-8), यदि वे वास्तव में जानते कि इसका क्या परिणाम होनेवाला था, वे कभी प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते।

उस पृष्ठभूमि के विरुद्ध देखने पर यीशु के जीवन और सेवकाई का अधिक अर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिए, नये नियम के पाठकों के लिये इस धारणा को पाना सरल है कि क्रूस तक ले जानेवाली यीशु की सेवकाई किसी न किसी तरह से बेतरीब थी। आखिरकार, सुसमाचार एक समान शृंखला को सदा नहीं देते-उदाहरण के लिए, यीशु का जन्म उनमें से केवल दो में मिलता है (मत्ती और लूका), और केवल एक ही ज्योतिषियों के बारे में बताता है। (मत्ती 2)। कई भिन्न सुसमाचारों में दृश्य कुछ भिन्न दिखाई देते हैं। परन्तु सुसमाचारों में वर्णित यीशु के ये कार्य क्रूसारोपण की ओर लेकर जाते हैं। बीमारों को चंगा करना, परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना, पापियों को क्षमा करना, पाखण्ड का सामना करना-एक यात्रा करनेवाले बुद्धिमान व्यक्ति

के बेतरतीब कार्यों से अधिक थे जिसने कई बार चमत्कारिक कार्य किये। आँखों को दिखाई देने से कहीं अधिक सुसमाचार की कहानियों में बहुत कुछ चल रहा था। यीशु जो कर रहा था उसका एक महत्वपूर्ण सहसंदर्भ है।

बुराई को मात देना

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई में जो घटना उल्लेखनीय है वह उसका बपतिस्मा था। यहीं पर परमेश्वर ने यीशु की अपने पुत्र के रूप में सार्वजनिक पहचान की थी (मर. 1:11), और यहीं पर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने उसे उस व्यक्ति के रूप में जाना था जो, ''जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)। यूहन्ना से इन वचनों को पढ़ने पर, हम तत्काल ही क्रूसारोपण पर विचार करते हैं। परन्तु यूहन्ना के शिष्य इस बारे में नहीं सोच रहे थे। खुलकर कहा जाए तो कोई भी नहीं। अपनी सेवकाई के अन्त की ओर पहुंचने पर–अपने बपतिस्मे के तीन वर्ष पश्चात्–यीशु अपनी मृत्यु के बारे में बताने लगा, उसके अपने शिष्यों ने उसके इस विचार को ठुकरा दिया (मत्ती 17:22–23; मर. 9:30–32)। प्रभु से उन्होंने जिस अन्तिम चीज़ के सुनने की आशा की थी वह यह कि वह शीघ्र ही मरनेवाला था। यह मूर्खतापूर्ण बातचीत थी। वे समझ नहीं पाए थे कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु आरम्भ से ही योजना रही थी। वे क्यों नहीं? क्योंकि जैसा हमने पिछले अध्याय में चर्चा की, योजना को पुराने नियम में स्पष्टता से नहीं दिया गया था।

यीशु के बपतिस्मे के बाद, उसे शैतान को सामना करने का आत्मा द्वारा जंगल ले जाया गया (मत्ती 4:1; मर.1:12; लूका 4:1–13)। दुष्ट का यीशु की परीक्षा करने को आना हमें यह बताता है कि शैतान को पता था कि यीशु कौन है–वह पृथ्वी पर परमेश्वर के 'गृह शासन'' के मिशन को पुन:स्थापित करनेवाला मसीहा था। आखिरकार, ''अभिषिक्त'' (मसीहा) दाऊद की वंशावली का राजा होगा। शैतान ''इस संसार का सरदार'' (यूहन्ना 12:31), जान गया था कि यीशु शैतान के प्रभुत्व पर वह जातियाँ जिन्हें इस्राएल के बनाए जाने से पहले बाबुल की मीनार पर निकाल दिया गया था–अपनी दृष्टि रखेगा। (व्यवस्था. 4:19–20; 32:8–9)।

हममें से अधिकांश यीशु और शैतान के बीच के दृश्य को स्मरण करते हैं। शैतान ने तीन बार यीशु की परीक्षा की (मत्ती 4:3–11)। परमेश्वर के साथ यीशु का संबन्ध बिगाड़ने की शैतान की तीसरी रणनीति परमेश्वर के पुत्र को संसार की जातियाँ देने का प्रस्ताव था (मत्ती 4:8–9), जिसके लिए वह मानता था कि यीशु अधिकार पाने को आया था :

> फिर इब्लीस उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उससे कहा : ''यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।'' (मत्ती 4:8–9)

शैतान का प्रस्ताव परमेश्वर की योजना में चतुराई से काट छांट करना था। यह परमेश्वर की इच्छानुसार परिणाम उत्पन्न करता–जातियों का बिखराव जिन्हें उसने अपने लोग होने के अधिकार से वंचित किया था। मिशन पूरा हुआ। यीशु को केवल परमेश्वर के बजाय शैतान की आराधना करनी थी।

शैतान का प्रस्ताव प्रगट करता है कि वह अब तक परमेश्वर की यीशु की मृत्यु की मांग किये जाने की योजना को नहीं जान पाया था। यीशु ने उसके प्रस्ताव पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने अपने इन्कार का स्पष्टीकरण नहीं दिया। उसने शैतान से केवल इतना कहा, दफा हो। परमेश्वर उससे जब और जैसे चाहे उससे वह वापस ले लेगा जो उसका है। यीशु का मिशन केवल सभी जातियों पर शासन करना नहीं था। यह परिवार का पुनर्निर्माण करने के बारे में था। इस परिवार में केवल इस्राएल ही नहीं, सभी जातियों के लोग शामिल थे, अर्थात् जिनके लिए पाप का पश्चात्ताप किया जाना था। परमेश्वर की मूल योजना के अनुसार, परमेश्वर की योजना में उसकी संतान भी शामिल थी। मानवजाति को छुड़ाने और परमेश्वर की योजना सही स्थान पर देखने को क्रूस अनिवार्य थी। यीशु युक्ति में नहीं फंसनेवाला था–परन्तु सही समय पर शैतान फंसेगा।

अदन का स्वाद

जंगल की परीक्षा के शीघ्र पश्चात् ही, यीशु ने दो चीज़ें कीं : अपने प्रथम शिष्यों को बुलाया (पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना) और एक दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति को चंगा किया (मर. 1:16-28; लूका 14:31-5:11)। शिष्यों को बुलाना और चंगाई एक नमूने को आरम्भ रूप देने को जारी रहे। अधिक शिष्यों को बुलाने पर, उसने उन्हें दुष्टात्माओं को निकालने और प्रत्येक बीमारी के लोगों, अपंगों को चंगा करने की सामर्थ दी (9:1-5)।

यीशु ने बारह शिष्यों को बुलाने से आरम्भ किया। यह संख्या संयोगवश नहीं है। यह इस्राएल के बारह गोत्रों को बताती है। यीशु ने दृश्य रूप में इस्राएल के साथ राज्य की योजना का आरम्भ किया। वे, आखिरकार, परमेश्वर का अंश हैं, जिन्हें अन्य सभी जातियों के अतिरिक्त चुना गया (व्यवस्था. 32:8-9)। पौलुस ने सुसमाचार के प्रसार को बाद में इसी तरह से देखा—यहूदियों से आरम्भ कर, बाद में अन्यजातियों तक जाकर (रोमि.1:16-17)।

यीशु ने बारह से समापन नहीं किया था। लूका 10 में उसने सत्तर और लोगों को चंगा करने व दुष्टात्मा निकालने का कार्य सौंपा (लूका 10:1, 9, 17)। संख्या संयोगवश नहीं थी। यह उत्पत्ति 10 में सूचीगत की संख्या है-वे जातियां जिन्हें परमेश्वर ने बाबुल की मीनार के समय में निकाला और निम्न देवताओं के अधीन कर दिया था (व्यवस्था. 4:19-20; 32:8-9)। कुछ अनुवादों में सत्तर के बजाय यह संख्या बहत्तर है। इसका कारण यह है कि पुराने नियम के कुछ प्राचीन लेख उत्पत्ति 10 में जातियों का नाम इस तरह से देते हैं कि उनकी संख्या मिलकर बहत्तर हो जाती है। किसी भी तरह से, विषय समान ही है-इन व्यक्तियों को भेजना उत्पत्ति 10 में जातियों की संख्या को बताता है। जिस तरह से बारह को बुलाना इसका संकेत था कि राज्य इस्राएल तक आया था, वैसे ही सत्तर के भेजने ने इसका संकेत दिया कि राज्य पुन: जातियों को अपनाएगा।

सत्तर के लौटने पर (लूका 10:17) यीशु की प्रतिक्रिया बता रही है: ''मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था'' (लूका 10:18)। संदेश नाटकीय है: महान पुनरावृत्ति कार्य में थी। लोगों के यीशु के हो जाने पर शैतान का मानवजाति पर कोई अधिकार नहीं होगा। ''विश्वासियों पर दोष लगाने'' को अब वह परमेश्वर के पास नहीं जा सकता (प्रका. 12:10)। वही किसी मुकदमे के बिना ही अभियोग पक्ष का वकील है।

आओ और मुझे पाओ

तीन वर्ष तक परमेश्वर के राज्य के आने का प्रचार करने, लोगों को परमेश्वर का प्रेम दिखाने और यह प्रदर्शित करने के पश्चात् कि अदन का संसार दिखने में कैसा होगा, यीशु ने अपने अंतिम उद्देश्य के लिए अन्त की तैयारी करना आरम्भ किया।

यरूशलेम की अपनी अंतिम यात्रा से कुछ पहले, यीशु शिष्यों को इस्राएल के उत्तर में लेकर गया। उसे क्रूसारोपण को बढ़ावा देने की आवश्यकता थी। अलौकिक शक्तियों पर लोहे का दस्ताना फेंकने को उसे उपयुक्त स्थान नहीं मिला।

यीशु शिष्यों को कैसरिया फिलिप्पी नायक स्थान तक लेकर आया। परन्तु यह इसका रोमी नाम था। पुराने नियम के दिनों में इसे बाशान कहा जाता था। अध्याय 9 में हमने इस बारे में पहले भी बात की है। बाशान को मृतकों के क्षेत्र-स्वर्ग के फाटक माना जाता था। कैसरिया फिलिप्पी हर्मोन पर्वत की तराई पर स्थित या, वह स्थान जिसके बारे में यहूदियों का मानना था, उत्पत्ति 6:1-4 में वर्णित विद्रोह में परमेश्वर के पुत्र पृथ्वी पर आये थे। संक्षेप में, पुराने नियम के दिनों में बाशान और हर्मोन पर दुष्ट अंतरीक्षी शक्तियों के लिए कोई स्थान नहीं था।

इसी स्थान पर परमेश्वर ने अपना चिर-परिचित प्रश्न किया था, ''तुम मुझे क्या कहते हो?'' (मत्ती 16:15)। पतरस का जवाब था, ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (पद 16)। यीशु ने उसकी सराहना करते हुए आगे कहा :

> हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य हैं; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं; परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। (पद 17-18)

यीशु द्वारा उल्लेखित ''पत्थर'' की पहचान पर शताब्दियों से तर्क-वितर्क होता रहा है। शब्द को समझने की कुंजी क्षेत्र का भूगोल है। कैसरिया फिलिप्पी बाशान के उत्तरवर्ती उत्तरी क्षेत्र में स्थित है। पुराने नियम के दिनों में, यह क्षेत्र मृतकों के क्षेत्र के फाटक माना जाता था। कैसरिया फिलिप्पी पर्वत की तराई पर था। ''पत्थर'' पहाड़ है। ''अधोलोक के फाटक'' उस स्थान को बताते हैं जहाँ यीशु और उसके शिष्य खड़े हुए थे।

यीशु अंधकार की शक्तियों को चुनौती दे रहा था। पतन के समय में, मानवजाति ने परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन को खोकर उसके विपरीत मृत्यु के भाग्य और परमेश्वर से अनन्त अलगाव को पाया था। मृतकों का प्रभु-सर्प, जिसे शैतान और इब्लीस के रूप में जाना जाता है- उसे मानवजाति पर अधिकार मिल गया। प्रत्येक मनुष्य को उससे मृत्यु के क्षेत्र में जुड़ना होगा। परन्तु परमेश्वर के अन्य विचार थे। मानवजाति के पापों के दण्ड को चुकाने के लिए यीशु को भेजने की परमेश्वर की गुप्त योजना अधोलोक के फाटकों पर सामने का हमला होगा। सारांश में, मत्ती 16 के उस परिच्छेद में, यीशु शैतान के सामने के द्वार पर जाकर उसके अधिकार को चुनौती देता है। यीशु शैतान को उत्तेजित करना चाहता था। क्यों? क्योंकि यह यीशु का परमेश्वर की गुप्त योजना को गतिशीलता में लाने को मरने का समय था।

इस शाब्दिक चुनौती के पर्याप्त न होने पर, यीशु एक कदम और आगे तक गया। मत्ती, मरकुस और लूका सभी इससे सहमत हैं कि यीशु की सेवकाई में अगली घटना रूपान्तरण था। मरकुस 9:2-8 में हम इस तरह से पढ़ते हैं:

> छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और एकान्त में किसी ऊँचे स्थान पर ले गया। वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल गया और उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहाँ तक उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता। और उन्हें मूसा के साथ एलिय्याह दिखाई दिया; वे यीशु के साथ बातें करते थे। इस पर पतरस ने यीशु से कहा, ''हमारा यहाँ रहना अच्छा है: इसलिए हम तीन मण्डप बनाएं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।'' क्योंकि वह न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिये कि वे बहुत डर गए थे। तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो।'' तब उन्होंने एकाएक चारों ओर दृष्टि की और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा।

रूपान्तरण हर्मोन पर्वत पर हुआ। यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना पर यह प्रगट करने को कि वह वास्तव में कौन है—इस स्थान को चुना।

परमेश्वर की महिमा का प्रस्तुीतकरण—वह शैतान और अंधकार की शक्तियों का ध्यान इस पर लगा रहा था : जो मेरा है उसे वापस लेने को मैं आया हूँ। परमेश्वर का राज्य निकट है। जिस कारण: ''मैं यहाँ हूँ कि इस संबन्ध में कुछ करूं।''

यह कोई संयोग नहीं है कि रूपान्तरण के शीघ्र पश्चात् ही यीशु यरूशलेम लौटकर अपने शिष्यों को बताने लगा कि वह वहाँ मरने को जा रहा था। वे यह नहीं सुनना चाहते थे। परन्तु यीशु ने शैतान और शेष दुष्ट

शक्तियों को सक्रिय करने का चारा डाला था। जिससे उनमें उससे शीघ्र छुटकारा पाने का भाव उत्पन्न हो। और यही यीशु चाहता था। उसकी मृत्यु प्रत्येक चीज़ की कुंजी थी।

यह क्यों महत्त्वपूर्ण है

यीशु की सेवकाई सुविचारित थी। पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को नया बनाने की अपनी भूमिका की उसे स्पष्ट समझ थी, जिसे उसके लौटने के दिन तक चलना होगा, वह दिन जो विश्वव्यापी अदन में जाने का प्रवेशक होगा।

हमारे जीवन उसके जीवन के समान प्रधान नहीं हैं, परन्तु हममें से प्रत्येक की शिष्यों के समान पूरा करने को एक सच्ची भूमिका है। हमें ऐसे जीना है मानों हमें उस पर विश्वास है। विश्वासियों का परमेश्वर के परिवार की सभा में लाया जाना दर्शकों के रूप में नहीं सहभागियों के रूप में है (कुलु. 1:13)

यीशु का एक उद्देश्य लोगों को यह दिखाना था कि अदन किस तरह का था, और परमेश्वर के साथ जीवन किस तरह का होगा। परमेश्वर के परिवार और परमेश्वर के शासन में, कोई रोग और शारीरिक अपूर्णता नहीं होगी। वहाँ कोई विरोधी शक्ति भी नहीं होगी। परमेश्वर का अन्तिम राज्य एक वाटिका से बड़ा, इस्राएल से विस्तृत है। राज्य विश्वव्यापी होगा। इसमें सारी जातियां होंगी। और इसमें अदन के समान सब कुछ होगा-पृथ्वी पर स्वर्ग।

हमारा कार्य यीशु की नकल करने का है। हम उसके समान हो सकते हैं; अपने सह प्रतिरूपों की देह व प्राणों की चिन्ता करनेवाले, राजा पर विश्वास करने में उनकी अगुआई करनेवाले और उसके प्रति निष्ठावान बने रहने में उनके संकल्प को दृढ़ करनेवाले। ''खेदित मन के लोगों को शांति'' देने और ''कैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार'' करने में मसीहा का अनुसरण करने को अलौकिक शक्ति के होने की आवश्यकता नहीं (यशा. 61:1), परन्तु ये अलौकिक कार्य का आधार है। ये अंधकार और सामरिक दर्शन का सामना किये जाने की मांग करते हैं। किसी हृदय को निर्देशित करने को आत्मा द्वारा प्रयुक्त दया का कोई भी कार्य असफल नहीं होगा। सुसमाचार की कोई भी अभिव्यक्ति, फलरहित नहीं होगी। यीशु की दया उसके संदेश के समनुरूप थी। न ही पहली दूसरी को धुंधला करती है। इस नमूने की नकल कोई भी विश्वासी कर सकता है-और यह राज्य दर्शन के लिए कार्य विवरण है।

अन्त: में, हमें पुन: स्मरण कराया गया है कि बौद्धिक बुराई की कोई सीमा नहीं है, परन्तु यह राज्य दर्शन और कार्य के लिए असुरक्षित है। यीशु पहले ही ''परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गए हैं'' (1 पतरस 3:22)। हम परमेश्वर के साथ ''पहले से परन्तु अभी तक नहीं'' सहशासक हैं (कुलु. 3:1; 2 तीमु. 2:12; प्रका. 2:26; 3:21)। अधोलोक के फाटक पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के रूप में कलीसिया की प्रगति व पूर्णता के सामने टिक न सकेंगे। इस महान पुनरावृत्ति में सहयोगी होने का निर्णय हमारा है।

अध्याय बारह

बादल सवार

पिछले अध्याय का समापन मैंने इस पर ध्यान दिलाते हुए किया कि अधोलोक के फाटकों और हर्मोन पर्वत पर अंधकार की शक्तियों को प्रलोभन देने के शीघ्र पश्चात् ही यीशु अपनी मृत्यु के बारे में बोलने लगा। पर चुनौती घटनाओं की एक कड़ी को सक्रिय करती है जो प्रभु को जांच अभियोग और क्रूस पर उसकी मृत्यु की

ओर लेकर जाती है। मसीहियों ने यीशु की जांच अभियोग के बारे में कई बार पढ़ा है। परन्तु इसकी एक अलौकिक पृष्ठभूमि है जिसे बार-बार अनदेखा किया जाता है।

यह जानने के लिए कि कौन सी चीज़ अन्ततः यहूदी अधिकारियों की ओर से मृत्युदण्ड की ओर लेकर गई और यीशु को पेन्तियुस पिलातुस को सौंपे जाने की ओर लेकर गई, हमें पुराने नियम की दानिय्येल की पुस्तक को देखना होगा-जिसमें परमेश्वर अपनी स्वर्गीय सेना, अपनी ईश्वरीय सभा के साथ था।

अति प्राचीन और उसकी सभा

दानिय्येल 7 का आरम्भ एक अजीब दर्शन से होता है। दानिय्येल चार जन्तुओं को महासागर से निकलते देखता है (दानि. 7:1-8)। वे चारों विचित्र हैं, परन्तु चौथा सबसे बुरा है। पुराने नियम में स्वप्नों की व्याख्या किये जाने पर, पात्र और जीवित चीज़ें दोनों ही सदैव किसी चीज़ को प्रस्तुत करते हैं, और इस स्वप्न में, दानिय्येल के दर्शन के चारों जन्तु चार साम्राज्य हैं। हम इसे इसलिए जानते हैं क्योंकि उसका स्वप्न दानिय्येल 2 में नबूकदनेस्सर के स्वप्न के विषयों से मेल खाता है, जो बेबीलोन और उसके बाद के अन्य तीन साम्राज्यों के बारे में था। तथापि हमारा केन्द्र उस पर है जो दानिय्येल बाद में बताता है :

> मैंने देखते-देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से दिखाई पड़ते थे। उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हज़ारों हज़ार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाज़िर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं। (दानि. 7:9-10)।

हम जानते हैं कि अति प्राचीन इस्राएल का परमेश्वर है। यह निर्धारित करना बहुत सरल है, विशेषकर जब हम उसके सिंहासन के विवरण की तुलना यहेजकेल के परमेश्वर के सिंहासन के दर्शन से करते हैं (यहेज. 1)। उस दर्शन में सिंहासन पर आग, पहिये और मानव रूप दानिय्येल के दर्शन के समान हैं।

परन्तु क्या आपने ध्यान दिया कि वहाँ केवल एक सिंहासन नहीं है? दानिय्येल के दर्शन में बहुत से सिंहासन हैं (दानि. 7:9)—जो ईश्वरीय अदालत, परमेश्वर की सभा के लिए पर्याप्त हैं (दानि. 7:10)।

स्वर्गीय अदालत दर्शन में-साम्राज्यों-जन्तुओं- के भाग्य का निर्धारण करने को होती है। यह निर्णय लिया जाता है कि चौथे जन्तु को मार दिया जाए और अन्य जन्तुओं के शक्तिहीन कर दिया जाए (दानि. 7:11-12)। उनका स्थान अन्य राजा और राज्य लेंगे। और यहीं चीज़ें अधिक रोचक हो जाती हैं।

मनुष्य का पुत्र जो बादलों पर आता है

दानिय्येल अपने स्वप्न को बताना जारी रखता है :

> मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा (दानि. 7:13-14)।

''मनुष्य का पुत्र'' वाक्यांश का उपयोग पुराने नियम में कई बार हुआ है। इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि यह मनुष्य के बारे में बताता है। आश्चर्य इस पर है कि इस परिच्छेद में मनुष्य का कैसे वर्णन किया गया है। दानि. 7:13 एक व्यक्ति के अति प्राचीन तक बादलों पर आने के बारे में बताता है।

यह इतना बड़ा सौदा क्यों है? क्योंकि पुराने नियम में जहाँ कहीं भी यह विवरण घटा, इसका उपयोग परमेश्वर के लिए ही किया गया (यशा. 19:1; व्यवस्था. 33:26; भजन. 68:32-33; भजन. 104:1-4) परन्तु दानिय्येल 7

में, परमेश्वर दृश्य में पहले से ही अति प्राचीन के रूप में था। यह मानों ऐसा है, दानिय्येल अपने दर्शन में एक ''दूसरे परमेश्वर'' को देखता है जो कि एक मनुष्य है-जैसा मसीही परमेश्वर पर एक व्यक्ति से अधिक के रूप में विश्वास करते हैं।

सही तथ्य यही है।

जिस समय यीशु मत्ती 26 में अपनी सुनवाई या जांच के समय कैफा के सामने खड़ा था, उसका जीवन बीच अधर में था, वह साहस करके इस विचार को देता है :

> प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे, परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। अन्त में दो जन आये, और कहा, 'इसने कहा है कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूँ और उसे तीन दिन में बना सकता हूँ।' तब महायाजक ने खड़े होकर यीशु से कहा, ''क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?'' परन्तु यीशु चुप रहा। तब महायाजक ने उससे कहा, ''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे।'' यीशु ने उससे कहा, ''तू ने आप ही कह दिया; वरन् मैं तुम से यह भी कहता हूँ कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिनी और बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।'' इस पर महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, ''इसने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो तुमने अभी यह निन्दा सुनी है! तुम क्या सोचते हो?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''यह वध होने के योग्य है।'' (मत्ती 26:59-66)

एक स्पष्ट प्रश्न का जो अर्थहीन जवाब लगता है, यीशु ने कैफा को प्रतिक्रिया में दानिय्येल 7:13 को उद्धरित किया।

कैफा, क्या तू सच में जानना चाहता है कि मैं कौन हूँ? ध्यान से सुन। प्रतिक्रिया तात्कालिक है। कैफा शीघ्र ही समझ गया कि यीशु दानिय्येल 7:13 का दूसरा परमेश्वर- वह मनुष्य जिसका वर्णन उस तरह से किया गया जिस तरह से पुराने नियम में केवल परमेश्वर का ही वर्णन किया गया था-होने का दावा कर रहा था। वह मानव रूप में परमेश्वर होने का दावा कर रहा था। यह ईशनिन्दा-और मृत्युदण्ड का आधार था।

परन्तु निस्संदेह यीशु यह जानता था। उसकी स्वयं को बचाने की कोई रुचि न थी। उसे पता था कि परमेश्वर के राज्य को पुनर्गठित करने, विश्वासियों को परमेश्वर के परिवार में लाने और उन जातियों को दुष्ट प्रधानताओं व शक्तियों से वापस पाने को उसे मरना था, इन शक्तियों ने बाबुल में परमेश्वर द्वारा ठुकराई इन जातियों पर नियंत्रण कर लिया था।

और वह मरा। भजन संहिता 22 सुपरिचित है क्योंकि दाऊद के शब्दों में यह जिस तरह से क्रूसारोपण के शारीरिक प्रभावों को बताता है, यहाँ हमें क्रूस पर अनदेखे भय की झलक देता है। दु:खी भजनकार कराहता है :

वे सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं;
और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए
सिर हिलाते हैं;
''अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए,
वह उसको उबारे क्योंकि वह उससे प्रसन्न है।''
बहुत से सांड़ों ने मुझे घेर लिया है,
बाशान के बलवन्त सांड़ मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए हैं।
वे फाड़ने और गरजनेवाले सिंह के समान मुझ पर अपना मुँह पसारे हुए हैं।

मैं जल के समान बह गया,
और मेरी हड्डियों के जोड़ उखड़ गए।'' (भजन 22:7-14)

इस विवरण का भयानक भाग बाशान के उग्र सांड़ हैं। जैसा हम पहले देख चुके हैं, पुराने नियम के दिनों में, बाशान दुष्ट ईश्वरों और मृतक क्षेत्र का केन्द्र था। यह क्षेत्र बाल की आराधना का मुख्य केन्द्र था, जो सांड़ों और गायों का प्रतीक था। ''बाशान के सांड'' दुष्टात्माओं, अंधकार की शक्तियों को बताता है। हमारे समय में इसकी प्रतिमाबली को सी.एस. लुईस के द लायन, द विच एण्ड द वार्डरोब में इसकी समस्त भयानकता में दिया गया है। इस पुस्तक को पढ़ने या फिल्म को देखनेवाला कोई भी व्यक्ति असलन को नहीं भूल सकता जिसने विनम्रतापूर्वक पत्थर की मेज़ पर श्वेत चुड़ैल के झुंड को अपना जीवन हर्षपूर्वक सौंप दिया।

और जैसे यीशु ने शैतान को चालाकी से मात दी वैसे ही श्वेत चुड़ैल को असलन मूर्ख के समान लगा। जिसे दुष्टता ने विजय का क्षण मान लिया था वह उसकी पराजय में बदल गया।

आप परमेश्वर हैं, परन्तु आप मनुष्यों के समान मरेंगे

शैतान का आदम की संतान के जीवनों पर से अधिकार को खोना केवल उसकी क्रूस पर हुई हानि ही नहीं थी। विद्रोह में उसके दल, जातियों के अलौकिक ईश्वरों ने (इलोहिम), अपने अधिकार को मिटता देखा।

इन अलौकिक ईश्वरों को उन जातियों पर परमप्रधान, इस्राएल के परमेश्वर ने नियुक्त किया था (व्यवस्था. 4:19-20; 32:8-9)। हमें नहीं बताया गया कि वे कब परमेश्वर के शत्रु बने, परन्तु उन्होंने ऐसा किया। उन्होंने परमेश्वर के निज लोगों, इस्राएल, को परमेश्वर की आराधना किये जाने से फिराया कि उनके लिए बलिदान चढ़ाएं (व्यवस्था. 17:1-3; 29:26-27; 32:17)। भजन संहिता 82, वह भजन जो हमने अध्याय 2 में ईश्वरीय सभा के परिचय में देखा था, हमें बताता है कि इन इलोहीम ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया और बुरा फल पाया। उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था और न्याय की कोई चिन्ता नहीं थी :

परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है;
वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है:
''तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते
और दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे?
कंगाल और निर्धन को बचा लो;
दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ।''
वे न तो कुछ समझते और न कुछ जानते हैं,
परन्तु अंधेरे में चलते फिरते रहते हैं;
पृथ्वी की पूरी नींव हिल जाती है। (भजन 82:1-5)

शेष भजन हमें बताता है कि परमेश्वर ने इस ईश्वरीय सभा के ईश्वरों को यह बताने को बुलाया था कि उनका भविष्य अंधकारमय था। परमेश्वर के जातियों को वापस पाने का निर्णय करने पर उनके आतंक के क्षेत्रों का अन्त होगा :

मैंने कहा था, ''तुम ईश्वर हो,
और सबके सब परमप्रधान के पुत्र हो;
तौभी तुम मनुष्यों के समान मरोगे,
और किसी प्रधान के समान गिर जाओगे।''
हे परमेश्वर उठ, पृथ्वी का न्याय कर;

क्योंकि तू ही सब जातियों को अपने भाग में लेगा।'' (भजन. 82: 6-8)।

जातियों पर पुन: अधिकार पाने का निर्णय परमेश्वर कब लेगा? हमने इसका जवाब पहले ही दानिय्येल 7:14 में देखा : उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति जाति के लोग और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।

दानिय्येल 7:13-14 का संदेश स्पष्ट है- मनुष्य के पुत्र के राज्य को पाने पर, यह अंधकार की अलौकिक शक्तियों के अन्त का आरम्भ होगा। यीशु ने अपने पुनरुत्थान पर राज्य को पाया। परमेश्वर ने उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के और हर एक नाम के ऊपर जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जायेगा, बैठाया'' (इफि. 1:20-21)।

यह क्यों महत्त्वपूर्ण है

क्रूस से पहले, शैतान का हमारे प्राणों पर अनन्त अधिकार था। सभी मनुष्य मरते—और इसलिए, मृतकों के क्षेत्र, उसके अधिकार, में जाते हैं। और यदि यीशु का बलिदान और पुनरुत्थान नहीं होता- तो हम वहीं होते। क्रूस पर उसके कार्य में विश्वास करने के द्वारा, हम उसके साथ जिलाए जाते हैं। जैसा पिछले अध्याय में हमने देखा, पृथ्वी पर राज्य का आरम्भ होने पर शैतान को परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिया गया था (लूका 10:18)।

परमेश्वर के सम्मुख विश्वासियों के विरुद्ध कोई दोष नहीं होगा। हमारे प्राणों पर अब उसका कोई अधिकार नहीं।

तब, हम वैसे क्यों जीते हैं?

उद्धार नैतिक सिद्धता से नहीं मिलता है। यह वह वरदान है जो विश्वास द्वारा अनुग्रह से मिलता है (इफि. 2:8-9)। नैतिक असिद्धता से उद्धार को नहीं खोया जा सकता। जिसे कार्यों से नहीं पाया जाता उसे बेकार कार्य से नहीं खोया जा सकता। उद्धार निष्ठा पर विश्वास करने के बारे में है- शैतान के अधिकार (दावे) को परास्त करने के लिए यीशु ने जो किया उस पर विश्वास करना-और अन्य सभी ईश्वरों से फिरना और विश्वास प्रणाली जिसका वे भाग हैं।

यह परमेश्वर के राज्य का वह संदेश है जिसे जातियों को बताने के लिए हमें नियुक्त किया गया है (मत्ती 28:19-20)। और हमारे आज्ञापालन करने पर—प्राण प्रति प्राण, क्षण प्रति क्षण-शत्रु ईश्वरों, प्रधानताओं और शक्तियों का प्रभुत्व सिमटता जाता है। अधोलोक के फाटक, मृतक क्षेत्र—पुनरुत्थान का सामना नहीं कर सकते और सुसमाचार की प्रगति का सामना नहीं कर पायेंगे।

यीशु के क्रूसारोपण के समय में, यद्यपि शिष्यों को इनमें से कुछ वास्तविक नहीं लगा। परन्तु वे शीघ्र संदेश को नाटकीय, अविस्मरणीय ढंग से पायेंगे।

अध्याय तेरह

महान बदलाव

सुसमाचारों में यीशु की कहानियों के अतिरिक्त-जैसे उसके जन्म, मृत्यु और पहाड़ी संदेश- नये नियम में संभवत: सबसे चिर-परिचित संदर्भ प्रेरितों के काम 2 है, जिसमें पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा यीशु के अनुयायियों पर तेज़ी से आया। यह यीशु के नाम में अनुभवहीन कलीसिया के आरम्भ होने और विश्वव्यापी प्रचार कार्य के आरम्भ होने का संकेत है।

इस चिर-परिचित संदर्भ में बहुत कुछ चल रहा है। प्रेरितों के काम 2 वास्तव में पुराने नियम के बाबुल-पूर्व अंतरीक्षी भूगोल में बदलाव लानेवाले अभियान के रूप में तैयार किया गया है, जिसमें इस्राएल के अतिरिक्त अन्य जातियाँ निम्न ईश्वरों के अधीन थीं। पिन्तेकुस्त पर जो हुआ वह यीशु के सुसमाचार के साथ बाबुल पर परमेश्वर द्वारा मीरास से वंचित सभी जातियों में घुसपैठ करने के लिए एक योजना थी-आत्मिक युद्ध की प्राचीन रणनीति।

पिन्तेकुस्त

प्रेरितों के काम 2 पिन्तेकुस्त के दिन जो होने के बारे में बताता है निश्चित रूप से असाधारण था :

> जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे। आकाश के नीचे की हर जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रह रहे थे। जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं। वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, ''देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं? तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी अपनी जन्मभूमि की भाषा सुनता है?'' (प्रेरित. 2:1-8)

कुछ चीज़ें जो इस असाधारण परिच्छेद में हमें पुराने नियम के अलौकिक विश्व दृष्टिकोण तक लेकर जाती हैं वे अंग्रेज़ी अनुवाद में स्पष्ट नहीं हैं। ''आंधी की सी सनसनाहट'' आत्मा के आने से संबंद्धित है जो कि पुराने नियम में परमेश्वर की उपस्थिति का चिर-परिचित चित्रण है (2 राजा 2:1; 11; अय्यूब 38:1; 40:6)। परमेश्वर के चित्रण में आग भी जानी पहचानी है (यहेज. 1:4; यशा. 6:4, 6; दानि. 7:9; निर्ग. 3:2; 19:18; 20:18)।

इन संदर्भों से यह स्पष्ट होता है कि जो कुछ हो रहा था उसमें और उसके पीछे परमेश्वर उपस्थित था। उसका उद्देश्य उन निम्न ईश्वरों से जातियों को वापस लेने के अभियान का आरम्भ करना था जिन्हें उसने जातियों पर अधिकारी बनाया था (व्यवस्था. 4:19-20; 32:8-9) परन्तु वे उसके शत्रु बन गए थे (भजन. 82)।

इसे करने को परमेश्वर का यंत्र, शिष्यों के शब्द- अत: भाषाओं की प्रतिमावली था। परमेश्वर ने यीशु के यहूदी अनुयायियों को पिन्तेकुस्त में स्थित शेष यहूदियों से बात करने में समर्थ किया-जो शत्रु ईश्वरों के प्रभुत्व वाले सभी देशों में रहते थे। सुसमाचार को सुनकर और विश्वास करने पर, वे अपने देशों में लौटकर दूसरों को यीशु के बारे में बताते।

पिन्तेकुस्त और बाबुल

बाबुल की मीनार की घटना के कारण ही परमेश्वर ने जातियों को तितर-बितर करने और अन्य ईश्वरों के अधिकार में डालने का निर्णय लिया था (व्यवस्था. 4:19-20; 32:8-9)। प्रथम बार देखने पर इस घटना और प्रेरितों के काम 2 में जो हुआ उसके बीच कोई संबन्ध नहीं दिखता। परन्तु मूल भाषाओं में, दोनों के बीच स्पष्ट संबन्ध दिखता है।

प्रेरितों के काम 2 में दो मुख्य विषय इसकी घटनाओं को बाबुल से जोड़ते हैं। सर्वप्रथम ''अग्निमय जीभों'' का वर्णन ''विभाजन'' के रूप में से किया गया है, और दूसरा, सभी जातियों में से मिश्रित यहूदियों के बारे में कहा गया कि वे ''अचम्भे'' में थे। अंग्रेज़ी में यह विशिष्टतया यथार्थपूर्ण न लगता हो। लूका यूनानी में लिख रहा है, और यहाँ ''विभाजन'' और ''गड़बड़ी'' के लिए जिन यूनानी शब्दों का प्रयोग हुआ है वे उत्पत्ति 11:7 और व्यवस्थाविवरण 32:8 से हैं, दोनों ही बाबुल में भाषाओं और जातियों के विभाजन और उससे उत्पन्न परिणाम को बताते हैं।

प्रेरितों के काम का लेखक, लूका, अन्यजाति था। वह केवल यूनानी पढ़ सकता था। परिणामस्वरूप, वह पुराने नियम के यूनानी अनुवाद का उपयोग कर रहा था जिसे उस समय में (और आज भी) सेप्टुअजिंट के रूप में जाना जाता था। यह आरम्भिक कलीसिया का पुराना नियम था, क्योंकि बहुत कम लोग ही इब्री पढ़ सकते थे। प्रेरितों के काम 2 को लिखते हुए लूका बाबुल की घटना पर विचार कर रहा था।

परन्तु वह इसे जोड़ता क्यों है? पिन्तेकुस्त पर जो हुआ उसके बारे में सोचें। आत्मा वैसे आया जैसे पुराने नियम में परमेश्वर बड़ी आंधी और आग के साथ प्राय: आता था। भिन्न भाषाओं की गड़बड़ी (जो बाबुल का परिणाम था) उस समय चली गई जब आग की जीभों ने शिष्यों को पर्व मनाने को यरूशलेम में विश्व भर के एकत्रित यहूदियों से बात करने के योग्य किया। उनमें से तीन हज़ार ने यीशु के संदेश पर विश्वास किया (प्रेरितों के काम 2:41)।

ये नये विश्वासी जिन्होंने यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार किया था वे अपने-अपने देशों में—बाबुल के समय में तितर-बितर की गई जातियाँ-उस संदेश को लेकर गए। उत्पत्ति 11 में देखें तो परमेश्वर मानवजाति के देशों से अपना मुँह फेर लिया था, और उत्पत्ति 12 में उसके शीघ्र पश्चात् अब्राहम को नये लोगों और जाति को स्थापित करने को बुलाया। वह अब सभी जातियों के लोगों को एकत्रित करने जा रहा था जिन्हें उसने ठुकराया था और अब्राहम के वंश यहूदी विश्वासियों के साथ विश्वासी परिवार का राज्य शत्रु ईश्वरों के राज्यों पर फैलेगा।

इस सबका असाधारण भाग प्रेरितों के काम 2 की जातियों की सूची और उनका क्रम में प्रस्तुत किया जाना है। यदि आप उन्हें मानचित्र पर देखें तो पूर्व से आगे बढ़ेंगे, जहाँ बेबीलोन और फारस में पुराने नियम के अन्त में यहूदियों को निर्वासित किया गया था, पश्चिमी के दूरवर्ती स्थान के रूप में उस समय जाना जाता था। वे उत्पत्ति 10 में सूचीगत जातियों की एक समान दूरी और क्षेत्र को पूरा करते हैं- वे जिन्हें निम्न ईश्वरों के अधीन किया गया था।

हमारा युद्ध मांस और लहू के विरुद्ध नहीं

प्रेरितों के काम की अधिकांश पुस्तकें पौलुस की यात्रा के बारे में हैं। पौलुस अन्यजातियों का प्रेरित था- वह व्यक्ति जिसे आरम्भ में कलीसियाओं की स्थापना करने को भेजा गया था। पौलुस की यात्राएं और जीवन परिस्थितियाँ, जैसे उसे रोमियों द्वारा बन्दी बनाया जाना, उसे सदा के लिए पश्चिम की ओर ले गये।

अपने नये नियम के पत्रों में, पौलुस प्राय: उन आत्मिक सेनाओं के बारे में बताता है जो उसकी सेवकाई और सुसमाचार के प्रसार का विरोध करती हैं। उन दुष्ट तत्वों के लिए उसकी शब्दावली, जिनके अधिकार का उसने पिन्तेकुस्त की घटना से अपमान किया था यह दिखाता है कि वह पुराने नियम के अंतरीक्षी भूगोल को समझता था। क्या आपने अंधकार की अनदेखी शक्तियों के लिए पौलुस की शब्दावली में प्रवाहित एक सामान्यता पर ध्यान दिया?

* शासक / प्रधानताएं (इफि. 1:20-21; 6:12; कुलु. 2:15)
* अधिकारी (इफि. 1:20-21 ; 3:10; 6:12; कुलु. 2:15; 1 कुरि. 2:16)
* सामर्थ (इफि. 1:20-21; 3:10)
* प्रभुताएं (कुलु. 1:16)
* प्रभु (इफि. 1:20-21; 1 कुरि. 8:5)
* सिंहासन (कुलु. 1:16)

ये सभी शब्द भौगोलिक अगुआई को बताते हैं। वास्तव में, इन्हीं शब्दों का उपयोग पुराने नियम और दानवीय राजनीति शक्ति रखनेवालों के यूनानी साहित्य में किया गया है। पौलुस की भाषा कार्य क्षेत्र पर अधिकार करने के

बारे में है। यह दिखाता है कि पुराना नियम आत्मिक संसार के संबन्ध को मानव संसार के साथ कैसे चित्रित करता है: जिन जातियों को परमेश्वर ने एक ओर रखा था वे आत्मिक प्राणियों के अधिकार में हैं जो उसके और उसके लोगों के विरोधी हैं।

''मैं स्पेन जाऊंगा''

प्रेरितों के काम पुस्तक का अन्त पौलुस की रोम यात्रा से होता है। पौलुस एक बन्दी था, और वह दो कारणों से रोम जा रहा था : कैसर से विनती करने और सुसमाचार का प्रचार करने। परन्तु पौलुस को पता था कि विरोधी ईश्वरों की अधीनस्थ जातियों को पाने के लिए उसे उस समय के परिचित संसार के अंत तक जाना था। पुराने नियम के दिनों में, उस स्थान को तर्शीश कहा जाता था। पौलुस के समय में, यह स्पेन कहलाता था। अपने मिशन को पूरा करने के लिए पौलुस को स्पेन जाना था। उसके बंदी बनाए जाने से पूर्व रोमियों से कहे उसके शब्द हमें बताते हैं कि उसका पूरा उद्देश्य स्पेन जाने का था-उसके समय में पृथ्वी के पश्चिमी अन्त की ओर-कि प्रत्येक जाति को यीशु के लिए पुन: पाए :

> जब मैं स्पेन को जाऊंगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊंगा, क्योंकि मुझे आशा है कि उस यात्रा में तुम से भेंट होगी ... इसलिये मैं यह काम पूरा करके और उनको यह चन्दा सौंपकर तुम्हारे पास होता हुआ स्पेन को जाऊंगा। (रोमि. 15:24, 28)

पौलुस इस अनुभूति से प्रेरित हुआ था कि परमेश्वर की अपने राज्य को पुनर्गठित करने की योजना का उसके जीवन में आरम्भ हुआ था। वह यह मानता था कि ''जब तक अन्य जातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें'' तब ''सारा इस्राएल उद्धार पायेगा'' (रोमि. 11:25-26)। उसका सोचना था कि जिसका आरम्भ पिन्तेकुस्त पर हुआ था उसे उसका समापन करना था।

यह क्यों महत्त्वपूर्ण है

पौलुस का अपने स्वयं के जीवन पर एक अलौकिक दृष्टिकोण था। उसने स्वयं को परमेश्वर के एक पात्र या उपकरण के रूप में देखा था। और वह था। और वैसे ही पिन्तेकुस्त के पश्चात् के सभी नये अज्ञात विश्वासी थे, जो उससे पहले यरूशलेम से गए कि अपने निवास स्थानों से शैतानी गढ़ों को ढाएं।

और वैसे ही हम हैं।

यदि जिस तरह से हम परमेश्वर के उपकरण हैं वैसे ही पौलुस परमेश्वर का उपकरण था, तौभी वह इतना अधिक प्रभावी क्यों था? एक अन्तर यह कि पौलुस जान गया था कि उसका जीवन किसलिए था। उसने माना कि पृथ्वी पर अधिकार रखनेवाली शक्तियां वास्तविक थीं-और कि उसके पीछे और उसके साथ रहनेवाली शक्ति उनसे महान थी।

क्या आपको उन चीज़ों पर विश्वास है? बाइबल इन्हें सामने रखती है। और पौलुस ने अपने जीवन में उनके साथ ऐसे ही व्यवहार किया।

पौलुस को नहीं पता था कि वास्तव में संसार कितना बड़ा था। वह उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, चीन, भारत, नार्वे, ऑस्ट्रेलिया आइलैंड और कई अन्य स्थानों के बारे में नहीं जानता था। परमेश्वर जानता था। परमेश्वर को पता था कि समस्त संसार में सुसमाचार फैलाने का कार्य पौलुस के समझ पाने से कहीं अधिक महान होगा। परमेश्वर को पता था कि पृथ्वी के प्रत्येक भाग तक सुसमाचार को फैलाने के लिए दूसरों को पौलुस के लक्ष्य का अनुसरण करना होगा। यदि हम कार्य को सक्रिय रूप से पूरा करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, तो हम वह नहीं कर रहे हैं जिसे करने को हम पृथ्वी पर हैं। यदि हम केवल यह चाहते हैं कि परमेश्वर आकर हमारी

आवश्यकताओं को पूरा करे तो यीशु, बारह शिष्यों और पौलुस की तुलना में बाबुल के लोगों के समान अधिक होते हैं।

पवित्रशास्त्र के जिन अन्य संदर्भों की हमने जांच की है उनका अर्थ यह है कि शैतानी गढ़ों की धारणा बाइबल संबन्धी है। हमें शैतानी क्षेत्रों या सीमा क्षेत्रों या अंधकार पक्ष के लिए सामाजिक प्रतिष्ठाक्रम को भी दिया गया है। तथापि, हमें यह बताया गया है, कि अनदेखी शक्तियाँ पृथ्वी को अपने अधिकार क्षेत्र के रूप में देखती हैं। हमें बताया गया है कि ये शक्तियां परमेश्वर के राज्य का विरोध करतीं और लोगों को परमेश्वर के हर कहीं उसकी भले शासन को फैलाने की योजना का भाग नहीं बनने देना चाहतीं। इसका अर्थ है कि हमें उन विरोधों का सामना किये जाने की आशा करनी है जिन्हें हम तार्किक या आनुभाविक प्रमाण से स्पष्ट नहीं कर सकते और हम इसे स्वयं पराजित नहीं कर सकते। परमेश्वर ने अपने मिशन को आगे बढ़ाने के लिए हमें अपना आत्मा और अनदेखे कार्यकर्ता दिये हैं (1 कुरि. 3:16, 6:19; इब्रा. 1:13; 1 यूहन्ना 4:4)।

हमें स्वयं से यह वास्तविक प्रश्न करना है : यदि हम प्रतिदिन संसार और इसके अलौकिक प्रभावों के दृष्टिकोण के साथ जागें जो पौलुस से मेल खाता हो, तो हमारे जीवन कैसे होंगे? यदि प्रतिदिन, हमारे जीवन परमेश्वर के परिवार के भाग के रूप में हमारे स्तर के ज्ञान से सुनियोजित हों, अपने बहन भाइयों को अंधकार से छुड़ाने से संबद्धित तो क्या होगा? यदि हम यह जानते हुए जीयें कि हमारा लिया प्रत्येक निर्णय और हमारा कहा प्रत्येक शब्द बेतरतीबी से उद्देश्यहीन है, तो क्या होगा? क्या हो यदि हम यह मानें कि हमारे आस-पास अनदेखे बौद्धिक प्राणी हमारे निर्णयों, हमारे कार्यों, हमारे शब्दों का प्रयोग-अच्छाई या भलाई के लिए-दूसरों को प्रभावित करने के लिए करते हैं, चाहे हम देखते या जानते न हों? हमारे काम, हमारी आय, हमारी प्रतिभा, हमारी समस्याओं के भी कोई परिणाम नहीं होते जब हम यह जान पाते हैं कि हम क्या हैं, और क्या होंगे, और हम यहाँ क्यों हैं? हम अलौकिक संसार को नहीं देख सकते- न ही हम सूक्षम संसार को देख सकते हैं- परन्तु हम अकथनीय रूप से दोनों का भाग हैं।

आरम्भिक विश्वासियों ने इस तरह से सोचा। जैसा हम अगले अध्याय में देखेंगे, उन्होंने विशवास किया कि उनके आस-पास का संसार उस अंधकार का दास था जो एक दिन ढह जायेगा। इस सच्चाई के बावजूद कि युद्ध विरोधी संसार और इसकी शक्तियों के विरुद्ध था, उन्होंने शांतिपूर्वक उस सार्वभौमिक चीज़ को उत्पन्न किया जिसे हम मसीहियत कहते हैं, परमेश्वर और उसके अनदेखे कार्यकर्त्ताओं के उनके साथ कार्य करते हुए। उन्होंने माना कि आत्मिक संघर्ष वास्तविक था और कि, अन्ततः वे हार नहीं सकते। हम इसका जीवित प्रमाण हैं कि वे नहीं हारे।

अध्याय चौदह

इस संसार के नहीं

जांच या सुनवाई के लिए पकड़े जाने से पहले यीशु की गतसमनी के बाग की परिचित प्रार्थना में, उसने अपने अनुयायियों से कहा, ''जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं'' (यूहन्ना 17:6)। विश्वासी निश्चय ही संसार में थे, विशेषकर प्रत्येक जाति तक सुसमाचार के कार्य को पहुंचाने के परमेश्वर के दिये कार्य के लिए (मत्ती 28:19-20), परन्तु वे संसार के नहीं थे। यह विरोधाभास-संसार में रहना परन्तु इसके न होना-कई स्मरणीय तरीकों से आरम्भिक मसीहियों में इसे प्रेषित किया गया था।

पवित्र स्थान, पवित्र भूमि, और परमेश्वर की उपस्थिति

अध्याय **8** यें हमने पवित्र स्थान की अवधारणा के बारे में बात की थी। पुराने नियम के इस्राएलियों के लिए, परमेश्वर पूर्णतया भिन्न था। उसकी उपस्थिति के लिए अधिकृत स्थान अन्य सभी स्थानों से अलग था। यह इससे इन्कार करना नहीं था कि परमेश्वर सर्वव्यापी है-सभी समयों में सभी स्थानों पर। इसके विपरीत, यह उस क्षेत्र को अंकित करने का एक तरीका था जहाँ उसने अपने लोगों से मिलने का निर्णय लिया था। तम्बू और मन्दिर के होने का यह एक उद्देश्य था। पवित्र स्थान की अवधारणा इस्राएल के बहुत से नियमों व रीतियों का मूलाधार ही नहीं था, परन्तु इसने अंतरीक्षी भूगोल के विचार पर बल भी दिया था-संसार को निम्न ईश्वरों और परमप्रधान परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर के बीच कैसे बांटा गया था।

पवित्र स्थान की धारणा नये नियम में एक नाटकीय ढंग से आई। हम सभी को यह पूछने की आवश्यकता है, ''इस समय परमेश्वर की उपस्थिति कहाँ है?'' जबकि परमेश्वर हर जगह है, वह विशिष्ट रूप से प्रत्येक विश्वासी में वास करता है। मानें या न मानें, आप पवित्र स्थान हैं। पौलुस ने यह बहुत स्पष्ट रूप से लिखा, ''तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है'' (1 कुरि. 6:19)।

यही बात उस स्थान पर सत्य है जहाँ विश्वासी एक समूह के रूप में एकत्रित होते हैं। कुरिन्थ की कलीसिया को लिखते हुए, पौलुस ने उन्हें सामूहिक रूप से बताया, ''तुम परमेश्वर का मन्दिर हो'' (1 कुरि. 3:16)। उसने इफिसी विश्वासियों को बताया कि वे ''परमेश्वर के घराने के हो गए .... प्रभु में एक पवित्र मन्दिर ... जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो'' (इफि. 2:19, 21-22)।

अर्थ चौंकानेवाले हैं। हममें से अधिकांश यीशु के इस कथन से परिचित हैं, ''जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ'' (मत्ती 18:20)। परन्तु पवित्र स्थान के पुराने नियम के विचार के संदर्भ में देखने पर, इस कथन का अर्थ है कि जहाँ विश्वासी इकट्ठे होते हैं, वे जिस पवित्र भूमि पर होते हैं वह अंधकार की शक्तियों के बीच भी पवित्र होती है।

पुराने नियम में यहोवा का अन्तिम चयनित निवासस्थान इस्राएल–यरूशलेम का मन्दिर था। परमेश्वर की उपस्थिति के इस्राएल में रहने के कारण वह पवित्र भूमि बन गया था। परन्तु इस पवित्र भूमि को इसके आस-पास की जातियों व उनके विरोधी ईश्वरों से खतरा था। इसी प्रकार आज विश्वासी एक आत्मिक युद्ध में हैं। हम अब परमेश्वर का मन्दिर हैं, परमेश्वर के आत्मा के रहने का विशेष स्थान–उसकी उपस्थिति की ज्योति की ओर संकेत करता है- और हमें अंधकार की शक्तियों के बंधन में लाकर संसार भर में तितर-बितर कर दिया गया।

शैतान को सौंपे गए

इस धारणा को पवित्र आत्मा की पवित्रता पर परमेश्वर के दृष्टिकोण में अच्छी तरह से उद्धरित किया गया। प्रत्येक विश्वासी पवित्र भूमि था, जिसमें पश्चात्तापरहित पाप का कोई स्थान नहीं था।

अध्याय 8 में हमने देखा कि शिविर की पवित्रता को सुरक्षित रखने के लिए-यह पवित्र स्थान था- इस्राएल के शिविर ने पाप से कैसा व्यवहार किया। हमने ''प्रायश्चित के दिन'' के बारे में बात की (लैव्य.16), जिसमें जाति के पापों को पारंपरिक रूप से एक बकरे पर डाल दिया जाता था- एक ''अजाजेल के लिये'' (लैव्य. 16:8-10)। अजाजेल एक शैतानी तत्व का विचार था जो जंगल में रहता था। इस्राएली अपने पापों को बकरे पर डालकर उसे जंगल में भेज देते थे। उस कार्य में पापों को प्रतीकात्मक रूप से वहां भेजा जाता था जहाँ से उनका सबंन्ध था- जंगल, आत्मिक अंधकार के स्थान में।

कुरिन्थियों में पौलुस पाप से इसी तरह से व्यवहार करता है–इसे वहाँ भेजते हुए जहाँ से यह संबद्धित है। 1 कुरिन्थियों 5 में पौलुस ने कुरिन्थियों की यौन अनैतिकता में रहनेवाले एक व्यक्ति के बारे में लिखा जिसे पश्चात्ताप करने की आवश्यकता थी। उसने आदेश दिया कि इस व्यक्ति को ''शैतान को सौंपा जाए'' (1 कुरि. 5:5)। तर्क का आधार स्पष्ट था–पवित्र भूमि पर पाप का कोई स्थान नहीं है। पश्चात्तापरहित विश्वासियों को कलीसिया से हटाना था (1 कुरि. 5:9–13)। कलीसिया से निकालकर उन्हें शैतान के क्षेत्र, वापस संसार में डालना था।

पौलुस की आशा थी कि पश्चात्तापरहित व्यक्ति का परिणाम ''शरीर का विनाश'' है ''ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए'' (1 कुरि. 5:5)। (यहाँ अर्थ शारीरिक मृत्यु से नहीं, परन्तु इस व्यक्ति को फँसानेवाली शारीरिक लालसाओं की मृत्यु से है गला. 5:24; 1 कुरि. 11:32–33)।

आत्मिक युद्ध के रूप में बपतिस्मा

इस विषय पर पतरस का पौलुस के समान ही मत था–विश्वासी अंधकार की सामर्थ के विरुद्ध थे। उसका युद्ध विचार नये नियम के 1 पतरस 3:14–22 में मिलता है :

> यदि तुम धर्म के कारण दु:ख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर लोगों के डराने से मत डरो, और न घबराओ, पर मसीह को प्रभु जानकर अपने मन में पवित्र समझो। जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ; और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिये कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है उनके विषय में वे, जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल–चलन का अपमान करते हैं, लज्जित हों। क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो कि तुम भलाई करने के कारण दु:ख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दु:ख उठाने से उत्तम है। इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दु:ख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाये; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। उसी में उसने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया, जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी, जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा और वह जहाज़ बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। उसी पानी का दृष्टांत भी अर्थात् बपतिस्मा यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है। वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किये गए हैं।

मुझे निश्चय है कि आपने संदर्भ में विचित्रताओं पर ध्यान अवश्य दिया होगा। बपतिस्मे का जहाज़, नूह और कैदी आत्माओं से क्या लेना–देना? और क्या यह बताता है कि बपतिस्मा हमें बचाता है?

रोमियों 5 में जो पौलुस करता है वही पतरस यहां कर रहा है। इस संदर्भ में पौलुस ने यीशु के बारे में बताया, परन्तु आदम को भी अपने मन में रखा। आदम के प्रतिकूल कई तरह से यीशु के होने पर विचार करें। इसी कारण पौलुस इस तरह की चीज़ें कहता है, ''क्योंकि जैसा एक मनुष्य (आदम) के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य (यीशु) के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे'' (रोमि. 5:19) 1 पतरस 3 में यीशु के बारे में लिखते हुए पतरस के मन में आदम के विपरीत हनोक है। परन्तु पतरस के लिए हनोक और यीशु प्रतिकूल नहीं थे। पतरस यीशु के बारे में जिस मुख्य बात को बताना चाहता है हनोक उसकी अनुरूपता को दिखाता है।

आपको आश्चर्य हो सकता है ''कौन सा मुख्य विषय?'' अन्ततः पुराने नियम में हनोक के बारे में मुट्ठी भर ही पाप मिलते हैं (उत्प. 5:18-24)। हम उससे जो कुछ सीखते हैं वह यह कि वह बड़ी बाढ़ आने के पहले रहा और कि ''हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया'' (उत्प. 5:24)। 1 पतरस 3 में यीशु के बारे में जो कुछ पतरस ने कहा इन पदों का उससे कोई संबन्ध नहीं है।

यह समझने के लिए कि हनोक ने ऐसा क्या किया था जिसने पतरस को यीशु की याद दिलाई, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि पतरस ने पुराने नियम से बाहर यहूदी पुस्तकों में हनोक के बारे में पढ़ा था। विशिष्टतया, पतरस एक प्राचीन यहूदी पुस्तक से परिचित था जिसमें हनोक के बारे में बहुत कुछ बताया गया था। पूर्वानुमानित रूप से इसे 1 हनोक नाम दिखा गया था। इस पुस्तक में इसकी विस्तृत जानकारी है कि बाढ़ के समय में क्या हुआ था, विशेषकर उत्पत्ति 6:1-4 की शृंखला, जिसमें परमेश्वर के पुत्रों (जिन्हें हनोक पहरेदार कहता है) ने मनुष्य की पुत्रियों से संतान (नपीली) उत्पन्न की। जब पतरस और यहूदा दोनों ने उन दूतों के बारे में लिखा जिन्होंने नूह के दिनों में पाप किया था (2 पत. 2:4-5; यहूदा 6), वे 1 हनोक के विचारों का वर्णन कर रहे थे जो बाइबल की बाढ़ की कहानी का भाग नहीं है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति का बाढ़ विवरण, हमें यह कभी नहीं बताता कि परमेश्वर के ईश्वरीय पुत्रों को अन्तिम दिनों तक मृतक क्षेत्र में कैदी बनाया गया था; परन्तु 1 हनोक ऐसा करता है (1 हनोक 6:1-4; 7:1-6; 10:4, 11-13)।

1 हनोक की पुस्तक में इन ''कैदी आत्माओं'' के साथ जो हुआ था उसने पतरस की यीशु से संबन्धित अन्तर्दृष्टि को दिया। 1 हनोक की कहानी में, हनोक एक स्वप्न देखता है जिसमें कैदी आत्माएं उससे उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहती हैं। अन्ततः हनोक परमेश्वर के साथ चला था—उसके अतिरिक्त और कौन परमेश्वर से ढीला या नरम पड़ने और उन्हें छोड़ने को कह सकता था? हनोक ने वैसा ही किया, परन्तु उसे बुरा समाचार मिला। परमेश्वर का जवाब सुनिश्चित रूप से नहीं था। अतः हनोक को यह जवाब पहुंचाना था-वह कैदी आत्माओं के पास गया। उसने उनसे कहा कि वे भी न्याय के अधीन थीं।

पतरस ने इस कहानी का उपयोग यीशु के लिए एक अनुरूपता के रूप में किया। वह जिस मुख्य बात को प्रचलित करना चाहता था वह यह कि मृत्यु पश्चात् यीशु मृतक क्षेत्र में गया और वहाँ के पतित ईश्वरीय प्राणियों के लिए उसके पास एक संदेश था। जब उन्होंने यीशु को मृतक स्थान में प्रवेश करते देखा, उन्होंने सोचा कि उनकी साथी दुष्ट शक्तियाँ विजयी हो गई हैं और वे जल्द ही कैद से बाहर होंगे। इसके विपरीत, यीशु ने उनसे कहा कि वे उसे अधिक समय तक नहीं देख सकेंगे- वह पुनर्जीवित होगा। वह सब परमेश्वर की योजना का एक भाग था। वे विजयी नहीं हुए थे- वे अभी भी न्याय के अधीन थे और सदा के लिए मिटनेवाले थे। इसी कारण इस विचित्र संदर्भ का अन्त इस तरह से होता है, ''यीशु'' स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी और बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी अधीन किये गए हैं। (1 पत. 3:22)।

पतरस इस सबको बपतिस्मे से क्यों जोड़ता है? पतरस के मन में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान- शैतानी शक्तियों पर उसकी विजय की घोषणा से पूरी होती है- जो बपतिस्मे का प्रतीक था। बपतिस्मा मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान का प्रतीक है (रोमि. 6:1-11)।

पतरस के लिए, बपतिस्मा इस सबको ''बताता है'' क्योंकि यह ''शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है'' (1 पतरस 3:21)। "विवेक'' के लिए यूनानी शब्द प्रायः सही गलत को बताने की योग्यता है। परन्तु यहाँ मामला यह नहीं है। सही और गलत के बीच अन्तर को जानना यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान से विशिष्ट रूप से संबन्धित नहीं है। यूनानी शब्द एक वचनबद्धता किये जाने की ओर भी संकेत कर

सकता है-अच्छी न कि मूर्खतापूर्ण। 1 पतरस 3 में पतरस यही बात कर रहा है। सारांश में, बपतिस्मा शैतानी शक्तियों के लिए निष्ठापूर्ण शपथ और संदेश था (साथ ही किसी भी और उपस्थित व्यक्ति के लिए) जिसके साथ आप आत्मिक युद्ध में थे। प्राचीन मसीही आज हमारी तुलना में इसे अच्छी तरह से समझ पाये थे।

आरम्भिक कलीसिया के बपतिस्मा संस्कारों में शैतान और उसके दूतों का इस संदर्भ के कारण परित्याग जोड़ा गया था।

यह क्यों महत्त्वपूर्ण हैं

सर्वप्रथम, जानें कि विश्वासी-पवित्र भूमि-परमेश्वर की उपस्थिति का निवास स्थान-पुराने नियम की महिमा है। क्या हम इसे पसंद करते हैं? इस्राएली और यीशु के दिनों के विश्वासियों ने अविश्वासियों से सदा भिन्न होने की आवश्यकता को अनुभव किया। लक्ष्य विचित्र बनने या होने का नहीं था कि अविश्वासी आपसे संपर्क करने की आशा ही न करें। इस्राएल को ''याजकों का राज्य'' और ''पवित्र जाति'' होना था (निर्ग. 19:6)। वैसे जीवन जैसे परमेश्वर अपनी संतान से जीने की आशा करता है वह फलदायी, उपयोगी और खुशहाल जीवनों की और लेकर जाता है। इस्राएलियों को शत्रु ईश्वरों की गुलामी में पड़े लोगों को अपनी ओर आकर्षित करना था।

जब हमारा दृष्टिकोण प्रत्येक जाति के लोगों को बचाने की परमेश्वर की योजना से मेल खाता है, उन्हें परमेश्वर के परिवार का भाग बनाते हुए, हम इस संसार के नहीं होते हैं। इस संसार का होने के लिए संसार की बातों को अपनाना और उसके अनुसार जीवन बिताना होता है। अविश्वासी हमारी बोली, व्यवहार, मूल्यों और दूसरों के प्रति हमारे रवैये के द्वारा यह बताने में समर्थ हों कि हम स्वार्थी या कठोर नहीं हैं-कि हमारा ध्यान आगे बढ़ने या लोगों का उपयोग करने पर नहीं है। हमें स्वयं को संतुष्ट करने के लिए नहीं जीना है। हमें इन चीज़ों का विरोधी होना है। अन्य शब्दों में, हमें वैसे जीवन जीना है जैसे यीशु ने जीया। लोग उसके आस-पास रहना चाहते थे क्योंकि वह अन्यों के समान नहीं था।

दूसरा, हम अपनी कलीसिया में जो करते हैं वह परमेश्वर और यीशु को ऊंचा करनेवाला होना चाहिए। बाइबल के समयों में, तम्बू या मन्दिर तक जाना परमेश्वर की सिद्धता, भिन्नता- और अपनी संतान के लिए प्रेम से संबद्धित विचारों पर बल देता है। ये चीज़ें साथ-साथ चलती हैं। वह परमेश्वर जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं और प्रत्येक चीज़ में सर्वोच्च है, उसे एक मानव परिवार की ज़रूरत क्यों होगी? वह परमेश्वर बाबुल में जातियों को निकालने के पश्चात् अन्य ईश्वरों को सौंपकर एक नये परिवार को बनाने के लिए क्यों परेशान होगा? वह छोड़ क्यों नहीं देता? क्योंकि उसे हमसे प्रेम है।

क्योंकि हमें पता है कि परमेश्वर कुछ और कर सकता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया ताकि उसके प्रेम का कोई अर्थ हो। जब एक कलीसिया परमेश्वर की अन्य चारित्रिक विशेषताओं के विरुद्ध उसके प्रेम की विडंबना की ओर संकेत किये बिना केवल उसके प्रेम के बारे में ही बताती है तब लोग उसके प्रेम को महत्त्व नहीं देते। उदाहरणस्वरूप, यह उन लोगों को घटिया लग सकता है जो परमेश्वर की पवित्रता से अनभिज्ञ हैं।

इस अध्याय में हमने जिस तीसरी व्यावहारिकता पर चर्चा की वह यह कि अंधकार की शक्तियों को हमारे व्यवहार से ज्ञात हो जाता है कि हम किसकी ओर हैं। वे मूर्ख नहीं हैं। वे परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा को देखती हैं और वे हमारे बपतिस्मा लेने और पाप का विरोध किये जाने के निर्णयों से हमें यीशु का अनुसरण करते हुए देखती हैं। परन्तु वे हमें परमेश्वर के प्रति विश्वासघात का कार्य करते हुए भी देखती हैं, और वे समझती हैं कि इससे हमारे जीवनों में कैसी निर्बलता आती है। चाहे हम मानें या न मानें, हम पर पहरेदारी की जा रही है-आत्मिक युद्ध के दोनों पक्षों द्वारा।

इन सत्यों को जीने की तुलना में समझना सरल है। छुड़ाए जाने पर भी, हम गिर जाते हैं। इन सत्यों पर इस ओर ध्यान लगाने की आवश्यकता है कि हम यहाँ क्यों हैं; अपने ही संसार में परदेसी के समान रहते हुए। यीशु के समान, हम इस संसार के नहीं हैं- इसमें हैं, परन्तु इसके नहीं हैं (यहून्ना 8:23; 1 यूहन्ना 4:4)। वह तुलना, और हमारा स्तर और भी स्पष्ट हो जाएगा जब हम यह जान जायेंगे कि परमेश्वर की संतान होने का क्या अर्थ है।

अध्याय पन्द्रह

ईश्वरीय स्वभाव के समभागी

क्या आपको पता है कि आप कौन हैं? मैंने पहले यह प्रश्न किया था, परन्तु अब इसे पुनः करने का समय है। जी हाँ, हम संसार में हैं; परन्तु इसके नहीं हैं। यह सच है, कि यीशु ने क्रूस पर जो हमारे लिए किया उस पर विश्वास करने के द्वारा हम अनुग्रह से बचाए गए हैं (इफि. 2:8-9)। परन्तु यह केवल इसे समझने का आरम्भ ही है कि परमेश्वर किस योग्य है।

अदन में परमेश्वर का मूल अभिप्राय अपने मानव परिवार को अपने ईश्वरीय परिवार के साथ मिलाना था, परमेश्वर के उन ईश्वरीय पुत्रों से जो यहाँ सृष्टि से पहले थे (अय्यूब 38:7-8)। पतन के समय में उसने उस योजना को छोड़ा नहीं। मसीही, आपको ईश्वरीय बनाया गया होगा, परमेश्वर की इलोहीम संतानों में से किसी एक के समान, स्वयं यीशु के समान (1 यूहन्ना 3:1-3)।

विद्वान इस विचार का उल्लेख कई उपनामों से देते हैं। सबसे सामान्य महिमा-गान है। पतरस इसे ''ईश्वरीय स्वभाव के समभागी'' होने के रूप में बताता है (2 पत. 1:4)। यहून्ना इसे इस तरह से रखता है: ''देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि परमेश्वर की सन्तान कहलाएं; और हम हैं भी'' (1 यूहन्ना 3:1)। इस अध्याय में हम देखेंगे कि बाइबल इस संदेश को कैसे देती है।

परमेश्वर के पुत्र, अब्राहम का वंश

जब परमेश्वर ने बाबुल में संसार की जातियों को निम्न देवताओं के अधीन किया, उसने ऐसा यह जानते हुए किया कि वह अपने नये मानव परिवार के साथ आरम्भ करेगा। परमेश्वर ने बाबुल के शीघ्र पश्चात् (उत्पत्ति 11:1-9) अब्राहम को बुलाया (उत्पत्ति 12:1-8)। अब्राहम और उसकी संतान के द्वारा, परमेश्वर अपनी मूल अदन की योजना पर लौटेगा।

परमेश्वर के लोग, इस्राएली, पृथ्वी पर परमेश्वर के अच्छे शासन को पुनर्निर्मित करने में असफल रहे थे। परन्तु उन संतानों में से एक सफल होगा। परमेश्वर यीशु में होकर मनुष्य बनेगा; दाऊद, अब्राहम और आदम का वंशज। और यीशु के द्वारा परमेश्वर ने जिन जातियों को आशीष देने की प्रतिज्ञा की जिन्हें उसने बाबुल में दण्डित किया था, वह पूरी हुई। पौलुस ने इस बारे में कई स्थानों पर लिखा। यहाँ दो का वर्णन है :

> वह भेद मुझ पर प्रकाशन के द्वारा प्रगट हुआ, जैसा मैं पहले ही संक्षेप में लिख चुका हूँ, जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ....अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के, और प्रतिज्ञा के भागी हैं।'' (इफि. 3:3-6)
>
> क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की सन्तान हो ... अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक

हो। और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो (गला. 3:26-29)।

जैसा मैंने पिछले अध्यायों में स्पष्ट किया : पूरे पुराने नियम में जो लोग इस्राएली नहीं थे वे एक ऐसे क्षेत्र में रहे जो निम्न ईश्वरों के प्रभुत्व में था, जिन्हें परमेश्वर ने बाबुल में उन जातियों के अधीन किया था। बाबुल में, इस्राएल के अतिरिक्त अन्यजातियों को सच्चे परमेश्वर के साथ संबन्ध से निकाल दिया गया था। इस्राएल और केवल इस्राएल ही मानवता में परमेश्वर का ''अंश'' था (व्यवस्था. 32:9)। इस्राएली इन निकाली गई जातियों के लिए कई शब्दों का प्रयोग करते थे। इसके भौगोलिक व नस्ली नाम थे (जैसे-मिस्री, मोआबी, अमालेकी), परन्तु नये नियम के समयों में व्यापक वर्णन अन्यजाति था, एक उपनाम जो 'जातियों' (जेन्स) के लिए लेटिन शब्द से है। यदि आप यहूदी नहीं तो आप अन्यजाति हैं।

नये नियम की कहानी यह है कि अब्राहम का एक वंशज -यीशु -मरा और न केवल अब्राहम के सजातीय वंशजों (इस्राएली यहूदियों) को छुड़ाने के लिए पुनर्जीवित हो गया परन्तु जातियों के उन सभी लोगों को भी जिन्हें पहले सच्चे परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिया गया था। ऊपर उद्धरित पदों में पौलुस परमेश्वर के परिवार में अन्यजातियों के समावेश के भेद को बताता है। उसने उसे आश्चर्य में डाला कि परमेश्वर ने जिन जातियों के लोगों को निकाल दिया, और जो अन्य ईश्वरों के नियंत्रण में थे, अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं के वारिस हो सके।

मसीह में, सभी सुसमाचार को स्वीकार करनेवाले यहोवा, सच्चे परमेश्वर, अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर की सन्तान हैं (यूहन्ना 1:12; गला. 3:26; रोमि. 8:14)। इसी कारण नया नियम पारिवारिक शब्दों (पुत्र, संतान, वारिस) और परमेश्वर के ''लेपालक'' होने जैसी भाषा का उपयोग विश्वासियों के लिए करता है (रोमि. 8:15, 23; इफि. 1:5; गला. 4:4)। मीरास की भाषा बहुत ही सरल और सुविचारित है। यह हमें बताती है कि हम कौन हैं : परमेश्वर का नया ईश्वरीय-मानव परिवार। विश्वासी की नियति वह होने की है जो आदम और हव्वा मूल रूप से थे : अमर, परमेश्वर महिमा प्राप्त स्वरूपवाले, परमेश्वर की उपस्थिति में रहनेवाले।

परन्तु अब तक भी यह पूर्णतया स्पष्ट नहीं हुआ है कि हम कौन हैं। सबसे अद्‌भुत भाग यह है कि यीशु हमें कैसे देखता है।

परिवार एकीकरण

इब्रानियों की पुस्तक के प्रथम दो अध्याय परमेश्वर के मिश्रित परिवार-ईश्वरीय और मनुष्य का हमें नाटकीय चित्र देते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, यह बाइबल के सबसे उत्तेजक परिच्छेदों में से एक है।

इब्रानियों 1 इस विषय को रखता है कि यीशु ''स्वर्गदूतों से....उत्तम'' है (पद 4)। परमेश्वर की स्वर्गीय सभा में यीशु से अधिक उच्च कोई और नहीं है। आखिरकार, वह परमेश्वर है। लेखक इस बात को कहता है कि चूंकि कोई स्वर्गदूत मनुष्य और राज्य का वारिस होने के योग्य नहीं था, स्वर्गदूतों को यीशु की आराधना करने की आवश्यकता थी (पद 5-6)। यीशु राजा है।

अद्वितीय रूप में, जब यीशु मनुष्य बना, वह कुछ समय के लिए स्वर्गदूतों से कम था। वह हममें से एक बना। मनुष्य ईश्वरीय प्राणियों जैसे स्वर्गदूतों, से कम हैं। इब्रानियों का लेखक पूछता है :

> मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है? या मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसकी चिन्ता करता है? तू ने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया; तू ने उस पर आदर और महिमा का मुकुट रखा, और उसे अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया। तू ने सब कुछ उसके पांवों के नीचे कर दिया ... पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दु:ख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट

पहने हुए देखते हैं, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे (इब्रा. 2:6-9)।

यीशु ने जो किया उसका क्या परिणाम हुआ? हम कह सकते हैं—उद्धार। यह सही होगा, परन्तु इसमें उसकी कमी है जो इब्रानियों का लेखक हमें बताना चाहता है। क्योंकि परमेश्वर यीशु मसीह में मनुष्य बना, उसके नाशवान अनुयायी ईश्वरीय होंगे- और उसके परिवार के सदस्य भी। किसी दिन, हमारी मृत्यु पर या पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अन्तिम रूप—नया अदन—में पृथ्वी पर उसकी वापसी पर, यीशु शेष ईश्वरीय सभा के सदस्यों से हमें और सभा को हम से परिचित कराएगा। वह हमारे समान बना इसलिए हमें भी उसके समान बनना है, क्योंकि जिसके लिए सब कुछ है और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि, जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उनके उद्धार के कर्ता को दु:ख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किये जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं; इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। वह कहता है,

''मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा; सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा .... देख, मैं लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिये।'' (इब्रा. 2:10-3)।

मनुष्य बनने पर-उनसे कम बनने पर भी-परमेश्वर की सभा के इलोहीम के सम्मुख शर्मिन्दा होने के विपरीत यीशु इसका आनन्द लेता है। यह सब महान रणनीति का हिस्सा था। सभा में खड़े होते हुए वह हमें प्रस्तुत करता है- मेरी और उस संतान को देख जो परमेश्वर ने मुझे दी है। अब हम सब- सदा के लिए- एक हैं। और आरम्भ से यही योजना रही थी।

परमेश्वर के ईश्वरीय, महिमावान परिवार में हमारा प्रवेश हमारी नियति है। रोमियों 8:18-23 में पौलुस इसे खूबसूरती से रखता है :

> क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं। क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है... और केवल वही (सृष्टि) नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।

पौलुस ने इसी संदेश से विश्वासियों को प्रोत्साहित किया। उसने रोमी विश्वासियों को बताया, ''जिन्हें उसने पहले से ही जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हो ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे'' (रोमियों 8:29)। उसने कुरिन्थियों की कलीसिया से कहा, ''जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं'' (2 कुरि. 3:18) और कि हमारी मनुष्यता बदलेगी, ''क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान देह अविनाश को पहन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहन ले'' (1 कुरि. 15:53)। पतरस के लिए, परमेश्वर के परिवार सभा से जुड़ने का अर्थ ''परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव का समभागी'' होना है (2 पत. 1:4)। यूहन्ना ने इसे अधिक सरलता से कहा : ''हम उसके समान होंगे'' (1 यूहन्ना 3:2)।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

मसीही होने के कारण, हमने संभवत: कई बार सुना है कि हमें यीशु के समान बनने की आवश्यकता है। हम निश्चित रूप से ऐसा करते हैं। परन्तु इसे सुनने पर, हम इसे केवल अच्छा होने, या संभवत: ''कम बुरा'' होने के शब्दों की प्रक्रिया में रखते हैं। हम वास्तव में एक कल्पनातीत विचार की ओर फिरते हैं- कि एक दिन हम प्रदर्शन के दायित्व में यीशु के समान होंगे।

इस पर दोषभावना अनुभव करने के विपरीत कि हम कितने अधिक यीशु के समान नहीं हैं; और अपने मनों में ''अच्छा करने'' की प्रतिज्ञा करने के बजाय, उसने जो किया और जो करेगा उसकी आशीष को लें; उसके समान होने के अपने विचार को नया रूप देते हुए। हम एक कार्य को करने के द्वारा मसीह की समानता में होने पर विचार कर सकते हैं यह सोचते हुए कि उसे न करने पर परमेश्वर क्रोधित होगा, परन्तु यह गलत शिक्षा है। यह अनुग्रह को कर्तव्य में बदलता है। या हम इसके लिए आभारी हो सकते हैं कि एक दिन हम वह होंगे जैसा हमें बनाने को परमेश्वर रोमांचित है-जैसा हमारे होने को उसने पूर्वनिर्धारित किया है (रोमि. 8:29)—और इस तरह से जीयें कि अधंकार की शक्तियों के बंधन में फंसे लोग परमेश्वर के परिवार में आने को हमसे जुड़ना चाहें। एक दृष्टिकोण भीतर देखने का है और दूसरा स्वर्ग की ओर देखने का।

मसीही जीवन अब इस भय के बारे में नहीं है कि हम उसे प्रसन्न नहीं कर पायेंगे जिसने हमसे प्रेम किया जबकि हम अंधकार के दास ही थे। मसीही जीवन वास्तव में दो धारणाओं को अपनाने के बारे में है : परमेश्वर के परिवार में हमारा लेपालकपन-अर्थात् यीशु हमारा भाई है, और कि परमेश्वर हमसे वैसे प्रेम करता है जैसे वह यीशु से करता है-और की योजना में हमारा उद्देश्य पृथ्वी पर उसके राज्य को पुनर्गठित करना है। हम परमेश्वर की नई ईश्वरीय सभा हैं और होंगे। वह हमारा पिता है। हम उसकी संतान हैं, जहाँ वह रहता है वहाँ सदा तक रहने को निर्धारित। हम उसके सहकर्मी हैं, उसके साथ उन लोगों को मुक्त करने के कार्य में सहायता करने के लिए जो अभी भी मृत्यु के स्वामी के अधीन हैं और अंधकार की अनदेखी शक्तियों के बंधन में हैं।

अदन से अदन तक बाइबल इसी बारे में है। यह आपकी नियति है। आपका जीवन अब परमेश्वर के परिवार के परिवार में अपना स्थान हासिल करने को नहीं है। इसे हासिल नहीं किया जा सकता। यह दान है। अब आपका जीवन आपके ग्रहण किये जाने को दिखा रहा है, इसका आनन्द लें और दूसरों को इसे आपके साथ बांटने का अवसर दें।

अध्याय सोलह
स्वर्गदूतों पर शासन करना

हमारे विश्वास के लिए यह निर्णायक है कि हम यह जानें कि हम मसीह में कौन हैं। हम परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं, नव-निर्मित ईश्वरीय सभा जिसकी परमेश्वर के राज्य में पहले से ही सहभागिता है। परन्तु इसके अलावा और भी बहुत कुछ है। जी हाँ, हम परमेश्वर की पारिवारिक सभा हैं-परन्तु कब तक?

जबकि हम पहले से राज्य में हैं (कुलु. 1:13), हमने अभी तक उस राज्य को पूर्ण अनावृत्त होते नहीं देखा है— हमने संसार को अदन बनते नहीं देखा है। यह ''पहले से, परन्तु अब तक नहीं'' विरोधाभास पूरी बाइबल में कई तरह से दिखता है। इस अध्याय में, आपको ''अब तक नहीं'' की झलक देना चाहता हूँ जो ''कब तक'' प्रश्न का जवाब देता है।

अभी राज्य सहभागिता

परमेश्वर के राज्य में हमारी सहभागिता पूर्वनिर्धारित नहीं है, इस भाव में : हम हमारे योजनाबद्ध कार्यों को करने वाले रोबोट ही नहीं हैं। यह परमेश्वर के स्वरूप में उसके प्रतिनिधि होने के संपूर्ण विचार का उल्लंघन करता है। हमें उसकी समानता में होने को बनाया गया था। वह स्वतंत्र है। यदि हम सही रूप में स्वतंत्र नहीं हैं तो हम उसके समान नहीं हो सकते—परिभाषा अनुसार, हम उसके समान नहीं होंगे। हम आज्ञापालन करने और आराधना करने, या विद्रोह करने और स्वयं को लिप्त करने के लिए स्वतंत्र हैं। और हम जो बोते हैं वही काटेंगे। हमारा बोना योजनाबद्ध नहीं है।

परन्तु परमेश्वर हमसे अधिक महान है। उसकी एक योजना थी और यह पूरी होगी। इसकी सफलता न तो मानव स्वतंत्रता पर और न ही इसे बलपूर्वक ग्रहण किये जाने पर निर्भर करती है। हम इसे खोखला नहीं कर सकते- न ही ईश्वरीय प्राणी कर सकते हैं जो चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं।

अध्याय 1 में मैंने आपको जिस ईश्वरीय सभा को दिखाया था उस पर विचार करें। मैंने पूछा था कि आप बाइबल की कही बातों पर विश्वास करते हैं या नहीं, और इसके बाद आपको 1 राजा 1:22 में परमेश्वर और उसकी स्वर्गीय सभा में लेकर गया था। परमेश्वर ने आज्ञा दी थी (और इसी कारण इसे होना था) कि यह दुष्ट अहाब के मरने का समय था। परन्तु इसके पश्चात् परमेश्वर अपनी सभा के आत्मिक प्राणियों को यह निर्धारित करने देता है कि वे ऐसा कैसे करेंगे (1 राजा 22:19-23)।

परमेश्वर के राज्य शासन में भाग्य और स्वतंत्रता साथ-साथ काम करते हैं। उसके उद्देश्य कभी भी रुकेंगे नहीं। अन्य स्वतंत्र प्रतिनिधियों के द्वारा वह जो चाहे पाप और विद्रोह को लेकर भी पूरा करता है। सी.एस. लुईस ने (पेरेलैंड्रा पुस्तक में) परमेश्वर के लिए कहा, ''आप जो भी करें वो उसमें से अच्छाई को निकालेगा। परन्तु यदि आपने उसकी आज्ञा का पालन किया होता तो वह अच्छाई नहीं जो उसने आपके लिए तैयार की थी।''

कब तक, यहाँ और अभी, हम परमेश्वर की पारिवारिक सभा हैं? लोगों को अंधकार से छुड़ाने को परमेश्वर के साथ सहभागिता करने को। लोगों को यह दिखाने के लिए कि ईमानदारी और दया से कैसे जीयें-जिन्हें उदाहरण की आवश्यकता है उनके लिए परमेश्वर की नकल करते हुए। ईर्ष्यालु ईश्वरीय बुद्धिजीवियों के प्रभुत्व के अधीन एक विरोधी संसार में सच्चे परमेश्वर के सत्य की रक्षा करने और उसे फैलाने के लिए। जीवन का वैसे आनन्द लेने के लिए जैसे परमेश्वर चाहता था।

ये सभी बुलाहट आनेवाले राज्य का प्रशिक्षण हैं। जैसा पौलुस ने कुरिन्थियों से पूछा, जो इस संसार के विषयों को लेकर झगड़ा करते हुए ईश्वरीय दृष्टिकोण को खो चुके थे, ''क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे?'' (1 कुरि. 6:3)। वह गंभीर था। इस कथन में पौलुस किसी विशिष्ट चीज़ के बारे में बता रहा था।

जातियों की स्थापना

राज्य का अन्तिम रूप आना अभी बाकी है। ऐसा होने पर, अंधकार की शक्तियाँ परास्त हो जाएंगी। शैतानी ईश्वर जातियों पर से अपने प्रभुत्व को स्थायी रूप से खो देंगे- जिसका स्थान परमेश्वर का महिमामयी मानव परिवार और सभा लेंगे। यीशु ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जो कहा उसे देखें :

> जो तुम्हारे पास है उस को मेरे आने तक थामे रहो। जो जय पाए और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति-जाति के लोगों पर अधिकार दूंगा, और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बर्तन चकनाचूर हो जाते हैं: मैं ने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है; और मैं उसे भोर का तारा दूंगा (प्रका. 2:25-28)।

एक नई पृथ्वी-एक नया विश्वव्यापी अदन-पर अपने सिंहासन को पाने के लिए जब यीशु लौटेगा- वह उसे अपने भाई बहनों के साथ बांटेगा। प्रधानताओं और शक्तियों को उनके सिंहासनों से हटा दिया जायेगा, और हम उनका स्थान लेंगे। उनका प्रभुत्व या अधिकार परमेश्वर के विश्वासयोग्य स्वर्गदूतों को नहीं दिया जायेगा- परमेश्वर के अन्तिम अदन राज्य में स्वर्गदूतों से हमारा स्थान या पद ऊपर होगा।

प्रकाशितवाक्य 28 के अंतिम कथन ने क्या आपको आश्चर्य में डाला है? ''मैं उसे भोर का तारा दूंगा?'' यह सुनने में अजीब लगता है, परन्तु यह बुरी शक्तियों से निपटने के पश्चात् जातियों पर यीशु के साथ हमारे संयुक्त शासन को बताता है। ''भोर का तारा'' का उपयोग ईश्वरीय प्राणियों का वर्णन करने के लिए किया गया है

(अय्यूब 38:7)। यह मसीहा से संबद्धित शब्द भी है। चूंकि मसीहा ईश्वरीय है, ''तारे की भाषा'' का उपयोग कई बार उसके आगामी शासन को बताता है। गिनती 24:17 बताता है, ''याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा।'' प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यीशु स्वयं का वर्णन इस तरह से करता है : ''मैं दाऊद का मूल और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूँ'' (प्रका. 22:16)।

प्रकाशितवाक्य 2:25-28 के शब्द शक्तिशाली हैं। यीशु केवल इतना ही नहीं कहता कि वह मसीहाई भोर का तारा देता भी है- वह हमारे साथ मसीहाई शासन को बांटता है। प्रकाशितवाक्य 3:20-21 इसे एक कदम आगे तक लेकर जाता है ताकि विश्वासी मुख्य विषय से न चूकें :

> देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ। जो जय पाए मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसे मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया (प्रका. 3:20-21)।

हमें ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी कब तक के लिए बनाया गया है? यीशु सभा में हमारा परिचय अपने भाई और बहनों के रूप में क्यों देता है? ताकि परमेश्वर हमें पृथ्वी पर उस अधिकार या प्रभुत्व को दे जो वह मूल रूप से चाहता था। स्वर्ग पृथ्वी पर एक नये, विश्वव्यापी अदन के रूप में लौटेगा।

अनन्त अदन

उत्पत्ति के प्रथम अध्यायों से, अदन मनुष्य, शेष ईश्वरीय स्वरूपवालों, और उसके राज्य के लिए परमेश्वर की योजना का केन्द्र बिन्दु था। अत: न तो इसमें कोई आश्चर्य और न ही कोई संयोग की बात है कि प्रकाशितवाक्य पुस्तक का अन्तिम अध्याय हमें अदन में वापस लेकर जाता है:

फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर के मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था, उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके पास उसकी सेवा करेंगे। वे उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। फिर रात न होगी और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे (प्रका. 22:1:5)।

क्या आपने ध्यान दिया कि जीवन का वृक्ष जातियों को चंगा करता है? वे जातियाँ, जो किसी समय प्रधानताओं और शक्तियों के अधीन थीं, परमेश्वर के नये पुत्रों और पुत्रियों आपके और मेरे-द्वारा उन पर शासन किया जायेगा।

प्रकाशितवाक्य में यहाँ पहली बार जीवन के वृक्ष को नहीं दिखाया गया है। उनसे बात करते हुए जो अन्त तक विश्वास करेंगे, यीशु ने प्रकाशितवाक्य 2:7, 11 में कहा, ''मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा... (उन्हें) दूसरी मृत्यु से हानि न पहुंचेगी।'' जीवन के वृक्ष का उल्लेख स्पष्ट तथा अदन का है। पहली मृत्यु शारीरिक मृत्यु को बताती है, जो आदम के पाप और अदन से निकाले जाने पर आई। चूंकि सभी मनुष्य विश्वासी और अविश्वासी, न्याय से पहले जी उठेंगे, दूसरी मृत्यु अन्तिम न्याय है (प्रका. 21:8)। परमेश्वर के साथ नये अदन में रहनेवालों को दूसरी मृत्यु का कोई दु:ख नहीं होगा।

यह क्यों महत्त्वपूर्ण है

अधिकांश को जीवन पश्चात् जीवन की अपर्याप्त जानकारी है। पवित्रशास्त्र हमें इस संबन्ध में सब कुछ नहीं बताता कि यह किस तरह का होगा, परन्तु कुछ पक्ष निश्चित हैं। हम बदलों पर उड़ते हुए वीणा बजाते या गाते

नहीं रहनेवाले। हम स्वर्गिक आसनों पर बैठकर बिछड़े हुए प्रियजनों या पिछले परिचित विश्वासियों से गप्पे नहीं मारनेवाले।

इसके विपरीत, हम अदन द्वारा दिये जीवन को जी रहे होंगे- हम उन ईश्वरीय प्राणियों के साथ जो उसके प्रति ईमानदार रहे–उसका आनन्द लेने व देखरेख करने में व्यस्त होंगे जिसे परमेश्वर ने बनाया। आकाश (स्वर्ग) और पृथ्वी अलग-अलग स्थान नहीं होंगे।

अपनी नियति को जानने पर हमें अपनी विचारधारा को अभी और यहाँ आकार देना है। जैसा पौलुस ने कहा ''जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं'' (1 कुरि. 2:9)। इस दृश्य को जानने पर, महिमामयी परिणाम हमारी वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टि में रखता है। पौलुस लिखित जिन शब्दों को हमने पढ़ा, कुरिन्थियों के दूसरे पत्र में उसने यह कहा :

> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है... हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो जो आसिया में हम पर पड़ा था; हम ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ से बाहर था, यहाँ तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। वरन् हमने अपने मन में समझ लिया था कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है, ताकि हम अपना भरोसा न रखें वरन् परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है। (2 कुरि. 1:3-9)।

परमेश्वर हमें जीवन में सुरक्षा दे सकता है परन्तु मृत्यु में भी, हम यीशु के साथ उसके सिंहासन पर बैठेंगे (प्रका. 3:21)।

हम या तो अपने अंतिम लक्ष्य को अपनी दृष्टि में रखते हुए जी सकते हैं या फिर ऐसा न करते हुए जी सकते हैं और हमारा अपनी नियति को जानना हमारे व्यवहार में बदलाव लानेवाला होना चाहिए। यदि आपको पता है कि किसी दिन आपको एक घर या एक ही कार्यालय में उस किसी व्यक्ति के साथ रहना या कार्य करना होगा जिसकी आप आलोचना करते, निम्न समझते या किसी भी तरह से उपेक्षा करते हैं, तो आप उस व्यक्ति के साथ शांति रखने, प्रोत्साहक बनने और उसका मित्र बनने का भी पूरा पूरा प्रयत्न करना चाहेंगे। अपने सह-विश्वासियों से बुरा व्यवहार करना तब कैसा होता है? एक अविश्वासी को यीशु की ओर बढ़ाने का प्रयत्न न कर हमारा उसके साथ शत्रु के रूप में जुड़े रहना कैसा होता है? हम अपनी दृष्टि में या ता अनन्तता को रखते हैं या फिर नहीं रखते।

आपको प्रसन्न रखने के लिए यीशु को आपको कितने नियमों को बताने की आवश्यकता होगी? प्रश्न अजीब लग सकता है, क्योंकि यीशु की ओर से आनेवाला कोई भी उपहार अद्भुत होगा। अत: हम विश्वासियों के साथ दर्जे या स्तर को क्यों देखते हैं? हम लाभ उठाने, ध्यान पाने और व्यक्तिगत लाभ के लिए एक दूसरे से क्यों झगड़ते हैं?

क्या हम कुरिन्थियों से श्रेष्ठ नहीं हैं, जिन्हें पौलुस को उनकी नियति को स्मरण कराना पड़ा था? हम उसके साथ शासन या राज्य करने को या तो संतुष्ट हो सकते हैं; या फिर नहीं।

मसीही, यह इस तरह जीवन जीने का समय है कि मानो आप जानते हैं कि आप कौन हैं और अपने लिए परमेश्वर की योजनाओं को जानते हैं।

निष्कर्ष

हम अपनी यात्रा के अन्त पर आ पहुंचे हैं। परन्तु यह कहना श्रेष्ठ होगा कि अभी तो हमने आरम्भ ही किया है।

हमने कुछ मूलभूत प्रश्नों पर विचार किया : *क्या अन्य ईश्वर हैं? यदि हैं, तो क्या इससे हमारे बाइबल को समझने के ढंग में कोई परिवर्तन आता है? यदि हम यह मान लें कि बाइबल में वर्णित अनदेखा परिवार वास्तविक है- केवल परिचित स्वीकृत भाग ही नहीं; परन्तु असामान्य और प्रायः उपेक्षित किये जानेवाले भाग भी- तो हमारा विश्वास कैसा है?* एक बार पवित्रशास्त्र की अलौकिक कथावस्तु का अर्थ जान लेने पर, मैंने जाना कि मुझे सभी तरह की चीज़ों के बारे में भिन्न ढंग से सोचने की आवश्यकता है। परन्तु मैं इसका सारांश दो शब्दों में दे सकता हूँ, *पहचान* और *उद्देश्य* मेरी आशा है कि इस पुस्तक को पढ़ने पर आपको इन दोनों क्षेत्रों में चुनौती मिली है।

हमारी पहचान–परमेश्वर के परिवार में हमारा एक घर है

इस पुस्तक में किये गए विचार-विमर्श का इस संबन्ध में महत्वपूर्ण अर्थ है कि हमारे लिए मसीही होने- ''मसीह में'' होने का क्या अर्थ है, जैसा नया नियम प्रायः इस तरह से बताता है। एक बार हमारे यह जान लेने पर कि पुराने नियम के ईश्वर वास्तविक हैं-तब परमेश्वर की इस आज्ञा कि यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को छोड़ और किसी को ईश्वर करने न मानना, का अर्थ समझ में आता है। आज्ञा धन या नाव या कारों पर ध्यान देने के बारे में नहीं है। यह परमेश्वर के लोगों के प्रति जलन रखनेवाले प्रेम के संबन्ध में है। अन्य शब्दों में, आज्ञा जो कहती है वास्तव में उसका अर्थ वही है। सभी ईश्वरों के परमेश्वर को छोड़ किसी भी अन्य ईश्वर के प्रति निष्ठावान रहने से बड़ी मूर्खता और कोई नहीं है।

परमेश्वर ने ईश्वरों और उनके लोगों (''जातियों'') का कैसे न्याय किया उसके परिणामों के साथ जीवन जीने की भयानकता को भी देखा जाता है। किसी समय हम निकाले गए, अन्य ईश्वरों के भ्रष्टाचार व शोषण के बंधन में थे। जैसा पौलुस कहता है, हम परमेश्वर से दूर किये गए और उसके वाचा प्रेम के लिए बाहरी व्यक्ति थे (इफि. 2:12)। हम भटके हुए, अंधकार के गुलाम, अनदेखे ईश्वरों की सेवा करने को परमेश्वर के शत्रु थे (इफि. 4:18; कुलु. 1:21)।

उस स्थिति को समझना जो लेपालक और मीरास जैसी सैद्धान्तिक धारणाओं को बनाती है, अधिक अर्थपूर्ण है। यह उन्हें विषय-वस्तु देती है। परमेश्वर पृथ्वी पर अपने परिवार के साथ रहने को उस सृष्टि किये गए संसार का आनन्द लेने की अपनी योजना को निरस्त करना नहीं चाहता था, जिसे उसने अपने हाथों से बनाया था। जी हाँ, बाबुल में उसने मानवता से मुख फेर लिया था, परन्तु अगले ही क्षण, उसने अब्राहम को एक नया परिवार बनाने को बुलाया- और उसका वाहक होने को जिसके द्वारा वे निकाले गए–उसके पास लौटाने के मार्ग को पा सकें (प्रेरित. 10:26-27)।

बाइबल के आत्मिक संसार की अलौकिक सच्चाई को स्वीकारना बाइबल को समझने के लिए अनिवार्य है। यह स्पष्ट करती है, पुराने नियम के आगे बढ़ने पर, मूर्तिपूजा का पाप किसी और अन्य पाप के समान क्यों नहीं होगा। यह पाप होगा। इस्राएल को परमेश्वर के प्रति निष्ठावान रहने को बनाया गया था; परन्तु इसके विपरीत जब वह अन्य देवताओं की ओर फिरा, उसे अन्यजातियों के समान दूर कर निर्वासन में भेज दिया गया। बाइबल में उद्धार के सदा विश्वास के शब्दों में बताए जाने का मुख्य कारण यही है। परमेश्वर अन्ततः अच्छे व्यवहार की खोज में है-विश्वासपूर्ण निष्ठा की। जब हम अपने मनों को ईश्वरों के परमेश्वर के साथ एक करने का चयन करते हैं, यह हमें बचाता है। जब दूसरा चुनाव करते हैं, तो हम वो बो रहे होते हैं जिसे हम एक दिन काटेंगे।

आज हमारे लिए विश्वासपूर्ण निष्ठा का अर्थ उसे स्वीकार करना है जो यीशु ने क्रूस पर किया, क्योंकि वह देह में परमेश्वर था। हमारे आचार-विचार और व्यवहार (हमारे कार्य) इस संबन्ध में निष्ठावान होने के बारे में नहीं हैं कि परमेश्वर हमें स्वीकार करे। हम उसकी आज्ञाओं का अनुकरण इसलिए करते हैं क्योंकि हमने उसे चुना होता है। और उसकी आज्ञाएं हमें हमारी प्रसन्नता और संतोष की ओर लेकर जायेंगी क्योंकि वे हमें अपने व दूसरों के विनाश से दूर रहने को प्रेरित करती हैं। वे हमें परमेश्वर और उसके शेष परिवार-हमारे परिवार देखे और अनदेखे के साथ मेल में रहनेवाले जीवन—उसके राज्य, अदन में—की झलक देती हैं।

हमारा उद्देश्य-हम सभी अदन को पुनर्गठित करने की परमेश्वर की योजना में एक भूमिका को पूरा करते हैं

परमेश्वर के परिवार में सदस्यता प्राप्त करने की शर्त एक ही हैं : ईश्वरों के परमेश्वर में अटल विश्वास, जो हम तक यीशु मसीह के व्यक्तित्व में आया। यह सदस्यता न केवल अद्‌भुत सुअवसर देती है, परन्तु हमें जीवन में स्पष्ट उद्देश्य को भी देती है।

परमेश्वर के परिवार के सदस्यों का एक मिशन है: पृथ्वी पर परमेश्वर के भले शासन को पुनर्गठित करने को उसके कार्यकर्त्ता बनना और उसके परिवार की सदस्यता को बढ़ाना। प्रेरितों के काम 2 में जिस महान बदलाव का आरम्भ हुआ था-कलीसिया, मसीह की देह, का जन्म, प्रभु के लौट आने के समय तक- हम उस बदलाव को बढ़ावा देने का साधन हैं। प्रथम अदन की असफलता के पश्चात् जैसे बुराई मानवजाति के द्वारा संक्रमण के समान फैली थी, वैसे ही सुसमाचार उसी संक्रमित समूह के द्वारा फैलता है। हम ईश्वरों के परमेश्वर के सत्य, सभी जातियों के लिए उसके प्रेम और पार्थिव घर में उसकी अपने परिवार के साथ रहने की अपरिवर्तनीय इच्छा के संवाहक हैं, जो वह अपनी सृष्टि के बनाए जाने के समय से ही चाहता है। अदन पुनः जीयेगा।

एक वैज्ञानिक तथ्य यह है कि संसार के द्वीप प्रतिवर्ष आगे बढ़ जाते हैं। परन्तु इस ''द्वीपीय बहाव'' की गति का मानव भाव में पता लगाना कठिन है। हम केवल इतना जानते हैं कि ऐसा होता है जिस कारण तथ्य के पश्चात् इसे देख पाना संभव है। अतः ऐसा ही परमेश्वर के राज्य के धीमे व निरन्तर विकास के साथ है। हम अपनी नग्न आँखों से यह नहीं देख सकते कि प्रतिदिन ईश्वरों का प्रभुत्व और अंधकार की शक्तियाँ कितनी कम होती जाती हैं, या कैसे सुसमाचार इनके प्रभुत्व में रहनेवालों को एक एक कर स्वतंत्र करता है। परन्तु यह एक अबोधगम्य निश्चितता है।

स्वयं को इस चित्र में देखने की मुख्य कुंजी इसे दृढ़ता से थामना है कि परमेश्वर तब भी अपनी योजना पर कार्य कर रहा होता है जब हम उसे देख भी न सकते हों। हम अनदेखे अलौकिक संसार पर तब तक सही विश्वास करने का दावा नहीं कर सकते जब तक कि हम यह विश्वास न करें कि परमेश्वर की सशक्त उपलब्धता हमारे जीवनों और मानव इतिहास के व्यवहार में सक्रिय है। परमेश्वर चाहता है कि हम समझ-बूझ के साथ जीयें- यह विश्वास करते हुए कि उसका अनदेखा हाथ और अदृश्य कार्यकर्ता उसके और हमारे प्रति निष्ठावान हैं (इब्रा.1:14), वे हमारी परिस्थितियों से जुड़े हैं, ताकि परमेश्वर का विश्वव्यापी अदन का लक्ष्य, मिलकर, बिना रुके आगे की ओर बढ़ता रहे।

हममें से प्रत्येक किसी को राज्य तक लाने और उस राज्य की रक्षा के लिए अनिवार्य है। प्रतिदिन हमें अंधकार के प्रभुत्व में रहनेवाले लोगों से संपर्क करने और एक अपूर्ण संसार में हमारे उद्देश्य को पूरा करने के कठिन कार्य में एक दूसरे को प्रोत्साहित करने का अवसर मिलता है। हम जो भी करते व कहते हैं उसका महत्त्व है,

चाहे हम यह न जानते हों कि क्यों या कैसे। परन्तु हमारा कार्य देखने का नहीं करने का है। विश्वास से चलना निष्क्रिय नहीं- यह उद्देश्यपूर्ण है।

क्षमा की प्रार्थना

क्षमा की प्रार्थना : एक कीमती उपहार

क्षमा की प्रार्थना कुछ ऐसा है जिसकी खोज हम सभी जीवन के किसी मोड़ पर अवश्य करते हैं। क्षमा एक कीमती उपहार है जिसे न तो आसानी से पाया जाता है और न ही आसानी से दिया जाता है। क्षमा जीवन के लिए आवश्यक है; यह हमें पिछली गलतियों से स्वतंत्र करती और हमें भविष्य की आशा देती है। क्षमा के खातिर ही यीशु मसीह पृथ्वी पर मानवजाति के लिए मरने को आया।

क्षमा की प्रार्थना : यीशु मसीह द्वारा संभव किया गया

क्षमा की प्रार्थना ऐसी प्रार्थना है जो परमेश्वर को प्रस्तुत की जाती है। यद्यपि हम एक दूसरे को प्रत्यक्ष दु:ख पहुंचाते हैं, हमारे सभी अपराध अन्ततः परमेश्वर को दु:ख पहुंचाते हैं। हमारी कमियां या दोष सृष्टि के सर्वशक्तिमान परमेश्वर को कैसे दु:खी कर सकते हैं? क्या परमेश्वर इस पर ध्यान भी देता है? उत्पत्ति 6 में हम पाते हैं कि परमेश्वर मनुष्य द्वारा एक दूसरे के प्रति किये सभी गलत कामों के कारण शोकित हुआ था; ''यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ'' (उत्पत्ति 6:5-6)।

सर्वज्ञानी परमेश्वर बुराई के विचार से भी शोकित होता है। अतः अन्तिम क्षमा भी परमेश्वर की ओर से ही होनी चाहिए। तथापि, उसके न्यायी होने के कारण, क्षमा को खुलकर नहीं दिया जा सकता। परमेश्वर के उचित न्यायी होने के कारण प्रत्येक गलती का लेखा लिया जाना अनिवार्य है। यीशु मसीह कलवरी की क्रूस पर हमारे स्थान पर मरा ताकि हमारे पाप क्षमा किये जाएं।

हमारे अपराधों की कीमत उसने दु:ख उठाकर चुकाई। ''यह वाचा का मेरा वह लहू है, तो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:28)।

अपने प्रेम में, परमेश्वर जानता था कि हमारे विवेक का दोष व दण्डाज्ञा से स्वतंत्र होना आवश्यक है। उसे पता था कि पापों की क्षमा हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। प्रेम के अन्तिम कार्य में, परमेश्वर ने न केवल हमारे गलत कार्यों का दु:ख सहा, परन्तु उनके परिणामों की कीमत को भी चुकाया कि हमारे पाप करने पर हम हमें दी गई क्षमा को प्राप्त कर सकें। हमें केवल इतना करना है कि उसके क्षमा के नि:शुल्क उपहार को ग्रहण करें।

क्षमा की प्रार्थना : परमेश्वर से क्षमा मांगें

हो सकता है कि एक उत्पीड़ित प्राण को शांत करने के लिए क्षमा की प्रार्थना की खोज करने पर आप इस पृष्ठ पर लड़खड़ाएं। या संभवतः आप किसी ऐसे को क्षमा करने को संघर्षरत् हों जिसने आपको गहराई से आहत किया हो। यीशु मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करनेवाले सभी लोगों को क्षमा को नि:शुल्क दिया गया है। यदि हम अपनी गलतियों को मानकर परमेश्वर से क्षमा मांगें, तो परमेश्वर बिना कोई प्रश्न किये हमें क्षमा करेगा : ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:9)।

सारांश में कहा जाये तो यीशु का इन्कार करने पर हम परमेश्वर के क्षमा के उपहार का इन्कार करते हैं। वास्तव में हम यह कह रहे हाते हैं कि हम परमेश्वर से मेल नहीं करना चाहते (1 यहून्ना 1:10)। यद्यपि परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार न करना हमारा अपना चुनाव है, इस जीवन के अन्त में हमें अपने किये सभी पापों का परमेश्वर को लेखा देना होगा। परमेश्वर की आपसे मेल करने की गहन इच्छा है। ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए'' (यूहन्ना 3:16)। यदि आप वास्तव में क्षमा पाना चाहते हैं, तो जो यीशु ने कहा उस पर विचार करें और उसे ईमानदारीपूर्वक अपने प्रभु व उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करें। आप क्षमा पायेंगे और परमेश्वर आपके जीवन में एक रूपान्तरित करनेवाले कार्य का आरम्भ करेगा।

क्षमा की प्रार्थना : एक नया जीवन पाएं

क्षमा की प्रार्थना हमें एक नई आशा और नया आरम्भ देती है। हमारे सभी पापों को परमेश्वर ने पोंछ दिया है। ''क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त रहूंगा, और उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा।'' (इब्रा. 8:12)।

यदि आप यह जान जाते हैं कि आप एक पापी हैं; और आप यह मानते हैं कि यीशु मसीह पाप के एकमात्र छुटकारे के रूप में आया, तब आप क्षमा की प्रार्थना को जान पाते हैं। प्रश्न है- क्या आप परमेश्वर के उपहार, उसके पुत्र यीशु मसीह को ग्रहण करने के द्वारा, प्रार्थना करने को तैयार हैं? यदि ऐसा है, तो मसीह पर विश्वास करें, अपने पापों से पश्चात्ताप करें, और अपना शेष जीवन उसे अपना प्रभु मानते हुए सौंप दें :

''पिता, मुझे पता है कि मैंने आपके नियमों को तोड़ा है और मेरे पापों ने मुझे आपसे अलग कर दिया है। मुझे इसका सच में खेद है, और अब मैं अपने पिछले पापी जीवन से आपकी ओर फिरना चाहता/ चाहती हूँ। कृपया मुझे क्षमा करें, और पुनः पाप करने से बचने में मेरी सहायता करें। मैं मानता/ मानती हूँ कि आपका पुत्र यीशु मसीह मेरे पापों के लिए मरा, मृतकों में से जी उठा, जीवित है और मेरी प्रार्थना सुनता है। मैं यीशु को मेरे जीवन का प्रभु बनने का निमंत्रण देता/देती हूँ कि इस दिन से लेकर आगे तक मेरे हृदय पर राज्य और शासन करे। कृपया पवित्र आत्मा को भेजें कि आपका आज्ञापालन करने और मेरे पूरे जीवन भर आपकी इच्छा को पूरा करने में मेरी सहायता करे। यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता/ करती हूँ, आमीन!

''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरित. 2:38)।

यदि आपने आज यीशु को ग्रहण करने का निर्णय लिया है, तो परमेश्वर के परिवार में आपका स्वागत है। अब, उसकी समीपता में बैठने के लिए, बाइबल हमें हमारी वचनबद्धता का अनुकरण करने को कहती है।

- मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा लें।
- किसी और को मसीह में अपने नये विश्वास के बारे में बताएं।
- प्रतिदिन परमेश्वर के साथ समय बिताएं। आवश्यक नहीं कि यह एक लंबा समय हो। उससे प्रार्थना करने और उसका वचन पढ़ने की आदत को बढ़ाएं। परमेश्वर से आपके विश्वास और आपकी बाइबल समझ को बढ़ाने को कहें।
- यीशु के अन्य अनुयायियों के साथ सहभागिता करने का प्रयास करें। अपने प्रश्नों का जवाब पाने और सहारा पाने को विश्वासी मित्रों के समूह को बढ़ाएं।
- स्थानीय आराधना स्थल का पता लगाएं जहाँ आप परमेश्वर की आराधना कर सकें।

क्या आप आज यीशु के अनुयायी बने हैं? कृपया हाँ या नहीं पर चिह्न लगाएं

क्या आप पहले से यीशु के अनुयायी हैं? कृपया यहाँ चिह्न लगाएं!

आप क्या सोचते हैं : हम सभी ने पाप किया और परमेश्वर के न्याय को पाने के योग्य थे। परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र को भेजा कि उस पर विश्वास करनेवाले सभी लोगों के न्याय का भुगतान कर सके। यीशु, सृष्टिकर्त्ता और परमेश्वर का अनन्त पुत्र, जिसने एक पापरहित जीवन जीया, हमसे इतना अधिक प्रेम करता है कि वह हमारे पापों के लिए मरा, उस दण्ड को लेते हुए जो हम पर आना था, गाड़ा गया, और बाइबल के अनुसार मृतकों में से जी उठा। यदि आप सच में अपने मन में इस पर विश्वास और भरोसा करते हैं, यीशु को अपने एकमात्र उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करते हुए और यह घोषणा करते हुए, ''यीशु प्रभु है'', तो आप न्याय से बचाए जायेंगे और स्वर्ग में परमेश्वर के साथ अनन्तकाल तक रहेंगे।

आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

जी हाँ, आज मैं यीशु के पीछे चलने का निर्णय ले रहा/ रही हूँ

जी हाँ, मैं पहले से यीशु का/की अनुयायी हूँ

मेरे अभी भी प्रश्न हैं